0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ज्ञानोदय पुस्तक माला पुष्प–९

सियावर राम

(वाल्मीकि-रामायण का सार-संक्षेप)

लेखक

पं० गणेश चौबे

मैं आर्यों का आदर्श बताने आया,
जन सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया।
सुख-शान्ति-हेतु मैं क्रान्ति मचाने आया,
विश्वासी का विश्वास बचाने आया॥
मैं आया उनके हेतु कि जो तापित हैं,
जो विवश, विकल, बलहीन, दीन, शापित हैं।

—'साकेत' से

भूषण चरित्र यह नर, कहहिं सुनहिं जे गावहीं।
मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं॥

—'तुलसीकृत रामायण' से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

KATHMANDU
NEPAL
१६४३५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रकाशक :

श्री किसोरी प्रसाद

मंत्री

ज्ञानोदय पुस्तक माला प्रकाशन समिति,

ब्रास आर्टस पैलेस, चर्च रोड, राँची। फोन नं० ८८५।

सर्वाधिकार सुरक्षित—लेखक

प्रथम संस्करण—१९६९

मूल्य : ३ रु० ७५ पैसे

पुस्तक मिलने का पता :—

(१) भारद्वाज भवन, मिल एरिया, साकची, जमशेदपुर—१
फोन नं० ५२६९।

(२) श्री किसोरी प्रसाद, ब्रास आर्टस पैलेस, चर्च रोड, राँची।

(३) राजेन्द्र स्टोर्स, साकची बाजार, जमशेदपुर।

(४) गुप्ता स्टोर्स, धतकीडीह, जमशेदपुर।

(५) सुरेन्द्र स्टोर्स, स्टेशन रोड, जुगसलाई, जमशेदपुर।

मुद्रक :

केसरवानी प्रेस,

इलाहाबाद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लेखक की माँ श्रीमती राधिका देवी जी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

द० नं० ६४८६

नम्र-निवेदन

बा० वि० पु०

जमशेदपुर
२१-५-६९

प्रिय पाठक वृन्द !

श्री वाल्मीकि-रामायण का सार-संक्षेप सरल सुबोध भाषा में आप पाठक-पाठिकाओं के समक्ष प्रस्तुत है। श्री चौबे जी के अकथ परिश्रम, लगन एवं ईश्वर कृपा का ही यह मधुर फल हम सब को सानन्द प्राप्त हुआ है।

आशा है—साधारण पढ़े-लिखे पाठक-पाठिकाएं भी अब इस पुनीत ग्रंथ के चिन्तन-मनन का आनन्द उठाने में समर्थ होंगे।

हमारा यही प्रयत्न है कि हम सदैव आप लोगों के समक्ष सुन्दर ग्रंथों का सरल अनुवाद प्रस्तुत करते रहें।

सब कुछ सार्वजनिक रूप में भगवान के पूजा स्वरूप ही हो रहा है। समिति की नियमावली, संस्था की रचना-स्नेहभरी कहानियाँ में छपी है। अध्यक्षा की नियुक्ति पत्र इस ग्रन्थ मे ही प्रकाशित है। दोनों कार्यान्वित किये जा रहे है। आगे का कार्यक्रम भगवान के हाथ में है।

सियावर राम के लेखक श्री चौबे जी, एक पुलिस पदाधिकारी है। फिलहाल जमशेदपुर में, गुप्तचर विभाग की अपराध शाखा में अवस्थित हैं। आप ग्राम कोठरा, थाना सासाराम, जिला शाहाबाद के निवासी हैं। आपका आत्म परिचय प्रथम रचनाएं गीतामृत आदि में छपा है। विशेष परिचय, चाहें तो, उससे प्राप्त करलें।

समस्त पाठकगण को सप्रेम हरि स्मरण !

ज्ञानोदय पुस्तक माला प्रकाशन समिति,
भारद्वाज भवन, मिल एरिया
साकची, जमशेदपुर—१

भवदीय—
'गायत्री'
अध्यक्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

(श्रीमती गायत्री देवी भारद्वाज भवन, मिल एरिया साकची, जमशेदपुर–१ का लिखित)

जमशेदपुर
२०–४–६९

प्रिय गायत्री !

शुभाशीर्वाद !

आज से करीब डेढ़ साल पहले, जब मैं ज्ञानोदय पुस्तक माला के कार्य भार को सम्भालने के लिए योग्य कार्य-कर्त्ता की खोज में था, भीतर से अनायास तुझसे मिलने की प्रेरणा मिली। मिला। रचनाओं की चर्चा की। तेरे हृदय में इनके प्रति श्रद्धा पायी। भक्ति पायी। तूने खुशी-खुशी ज्ञानोदय पुस्तक माला के कार्यों में हाथ बँटाने की इच्छा प्रकट की।

(२) मैंने तुझमें उत्तम संस्कारों का समावेश पाया। धर्म में तेरी अटूट आस्था पायी। बुद्धि भी प्रखर लगी। मुझे ऐसा लगा, मानो जिस कर्त्ता की खोज कर रहा था, उससे भगवान ने मिला दिया। तबसे अब तक संस्था के कामों में तू हाथ बंटाती आयी। धीरे-धीरे तुझ पर कार्य सौंपता आया। तू निष्ठा से करती आई।

(३) प्यारी बेटी ! 'स्नेहभरी कहानियाँ' में ज्ञानोदय पुस्तक माला-कार्यकारिणी समिति की नियमावली छपी है। तूने पढ़ी भी है। उस नियमावली के अन्तर्गत समिति के लिए कार्यकर्त्ता नियुक्त करने का विधान है। परन्तु अब तक वैधानिक रूप से कोई कार्यकर्त्ता नियुक्त नहीं हो सका है।

(४) प्यारी बेटी ! इधर कई दिनों से, तुझे संस्था की अध्यक्षा के पद पर, प्रतिष्ठित करने की प्रेरणा अन्तःकरण से मिल रही है। अतएव, आज दिनांक २०–४–१९६९ से, तू ज्ञानोदय पुस्तकमाला की प्रस्तावित कार्यकारिणी समिति की, अध्यक्षा के पद पर, वैधानिक रूप से प्रतिष्ठित की जा रही हो। संस्था का सारा भार तुम पर सौपा जा रहा है। निश्चय ही भगवान उसे वहन करने की तुझ में पर्याप्त शक्ति देंगे। वास्तव में, सब उन्हीं की प्रेरणा से हो रहा है। तुझे अपने इस धर्म काय के लिए भगवान ने ही चुना है। उनकी इच्छा है कि तू संसार में धर्मध्वजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

फहराओ ! लोक हित कार्य करो ! भूले-भटके लोगों को सुमार्ग पर लाओ ! दीन-दुखियों का दुःख बाँटो !

(५) प्यारी बेटी ! आवश्यकतानुसार धीरे-धीरे संस्था के लिए एक समिति बना लोगी । छपी नियमावली के अनुसार मैं समिति का सदस्य न बनूँगा; किन्तु आवश्यकतानुसार तुझे उचित सलाह दिया करूँगा ।

(६) अब तक रचनाओं के प्रकाशक मेरे मित्र और संस्था का अभिभावक श्री किसोरी प्रसाद निवासी चर्च रोड, राँची रहे हैं। प्रस्ताविक संस्था के मंत्री के रुप में भी रहे हैं । श्री किसोरी प्रसाद को अपनी संस्था का कर्णधार ही समझो ।

(७) हमें आदरणीय श्री लक्ष्मी नारायण सिंह, एम० ए०, साहित्य रत्न निवासी ग्रामदरिहट थाना डिहरी जिला शाहाबाद से प्रारम्भ में पुस्तकों की रचना एवं प्रकाशन में काफी प्रेरणा और सहायता मिली है। इन सारी बातों की चर्चा, मैंने योगवाशिष्ठ-प्रवेश के नम्र निवेदन में की है। इस सुअवसर पर, मैं उन्हें श्रद्धांजलियाँ अर्पित करता हूँ। संस्था को ओर से, उन्हें उचित प्रतिष्ठा अवश्य मिलनी चाहिए । मेरी यह हार्दिक अभिलाषा थी, कि गुरु रूप में संस्था के उच्च पद को ये ही सुशोभित करें। कई बार कहा। पर अब तक राजी न हुए।

(८) गीतामृत, कठोपनिषद प्रकाश, योगवाशिष्ठ-प्रवेश आदि प्रारम्भिक पुस्तकों के रचना-काल में डा० बच्चन पाठक 'सलिल' प्राध्यापक निवास, कालेज रोड, जमशेदपुर-१ से काफी सहायता मिली थी। उनका मैं भारी आभारी हूँ। उनके प्रति अपनी सद्भावनाएं प्रकट करता हूँ । संस्था के कामों में आवश्यकतानुसार उनकी राय ले सकोगी !

(९) प्यारी बेटी ! पूज्यवर श्री रामरक्ष उपाध्याय जी जगन्नाथपुर की चर्चा मैंने प्रथम रचना गीतामृत के शुरू में एवं योगवाशिष्ठ-प्रवेश के नम्र निवेदन में की है। आज, वे हम लोगों के बीच न रहे । उन्हें मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। गुरु जी की सुपुत्री कान्ति देवी, कन्या प्रशिक्षण स्कूल रातु, जिला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राँची की प्राचार्या हैं। उनकी श्रद्धा संस्था में पाई है। अगर वे समय निकाल सकें तो अपनी समिति में शामिल कर लेना। गुरु जी की दूसरी सुपुत्री शांति देवी, पटना कालेज में रीडर हैं। उनसे भी पत्र-व्यवहार कर लेना। संस्था के कामों में राय व सहायता लेती रहना।

(१०) अभी तक संस्था का हिसाव-किताब बैंक में मेरे नाम में है। उसे तू पूर्ण रूप से संस्था के नाम में कर लो। तेरी इच्छा है कि संस्था के हिसाव-किताब के साथ मेरा भी सम्बन्ध रहे; परन्तु मैं किसी तरह सम्पर्क नहीं रखना चाहता। सुयोग्य पुत्र पिता का ही प्रतीक होता है। तू चाहे तो मुद्रिका या रमेश को अपनी संस्था में शामिल कर सकती हो। उस पर कुछ कार्य भार सौंप सकती हो। हिसाब-किताब में मुद्रिका अथवा रमेश तथा श्री किसोरी प्रसाद को सम्मिलित कर सकती हो!

(११) प्यारी बेटी! संस्था की बागडोर तेरे ही हाथों में रहेगी। चाहे तू जैसे चलाओ! इसमें तू पूर्ण स्वतंत्र हो। तेरे ऊपर, मेरी ओर से कोई प्रतिबन्ध नहीं। सब कुछ सलाह के बतौर ही कहते आया हूँ।

(१२) संस्था की कार्य-कारिणी समिति की नियमावली में, कार्यकर्त्ता के आचरण नियम छप चुके हैं। उन्हें तुझे पूर्णतया पालन करते रहना है। लोगों के बीच आदर्श आचरण प्रस्तुत करना है।

(१३) प्यारी बेटी! आध्यात्मिक एवं दैविक शक्ति के बल पर ही, इस गुरुतर कार्य को कर सकोगी। सतत साधना से ही उस अलौकिक शक्ति को अपना सकोगी। अतएव, साधना में लगी रहना। अपनी सुषुप्त शक्तियों को जगाती रहना। वास्तव में, आत्मोन्नति से ही जग की उन्नति होती है। आत्म-कल्याण से ही जग का कल्याण होता है। सिद्ध प्राणी ही सिद्धि का मार्ग दिखला सकता है। जीवन मुक्त ही मुक्ति की राह बतला सकता है। —सो सदा याद रखना।

(१४) प्यारी बेटी! लोग बेटी को दान-दहेज देते हैं। मैं तेरे हाथों में धार्मिक संस्था की बागडोर देता हूं--'उस संस्था की, जो नन्हीं बच्ची की तरह है। साथ-साथ अपनी सद्भावनाएँ और शुभाशीर्वाद देता हूँ।

तुझे एवं प्यारे बच्चे-बच्चियों को बहुत-बहुत प्यार और शुभाशीर्वाद!

तेरा—

गणेश

नोटः—इस पत्र को 'सियावर राम' नामक रचना में छपवा देना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लेखक गणेश चौबे, अपने सुपुत्र रमेश के साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विषय-सूची

सियावर राम-कथा

(वाल्मीकि रामायण के आधार पर)

शीर्षक	विषय एवं पृष्ठ	पृष्ठ
१.	प्रस्तावना	६-१३

आत्मिक शक्ति-१२

२.	बालकाण्ड	१४-५१

राजा दशरथ कालीन अयोध्या-१४, राजा दशरथ पुत्रेष्ठियज्ञ-१७, राम जन्म और बाल लीला-२१, महर्षि विश्वामित्र का आगमन और राम की याचना-२६, राम का सिद्धाश्रम प्रस्थान-२८, ताड़का और सुबाहु का वध-३१, राम जनकपुर की ओर-३६, धनुष भंग-४०, राम विवाह-४२, परशुराम-राम संवाद-४७, भरतजी का ननिहाल प्रस्थान-४९

३.	अयोध्याकाण्ड	५३-१०८

राम के राज्याभिषेक की तैयारी-५३, रंग में भंग-६१, राम का वन गमन-८६, राम का चित्रकूट प्रस्थान-९२, राम के वियोग में राजा दशरथ की मृत्यु-९३, राम चित्रकूट में-९८, चित्रकूट में राम-भरत मिलाप-९९, भरत का नंदी गाँव में वास--१०४, अनुसूया सीता संवाद-१०६

४.	अरण्य काण्ड	१०९-१४२

दंडक वन में राम और शरभंग ऋषि-भेंट-१०९, राम सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में-१११, सीता का राम से अनुरोध-११२, राम का अगस्त्य ऋषि से दिव्य अस्त्र-शस्त्र की प्राप्ति-११५, राम का पंचवटी में निवास-११६, सूर्पणखा का पंचवटी में आगमन-१२०, खर-दूषण वध-१२१, सीता-हरण १२२, सीता की खोज-१३५, संत जटायु से भेंट-१३६, कवन्ध वध-१३७, राम-लक्ष्मण शवरी के आश्रम में-१४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

शीर्षंक	विषय एवं पृष्ठ	पृष्ठ
५.	किष्किन्धा काण्ड	१४३—१५८
	राम–सुग्रीव मित्रता और वालि वध–१४३, पुत्र अंगद के लिए वालि का राम से अनुरोध–१५१, वर्षा ऋतु भर राम का ऋष्यमूक पर्वत पर निवास–१५३, सुग्रीव की सेना द्वारा सीता की खोज–१५४ सन्त जटायु के भाई वृद्ध सम्पाति से भेंट–१५५	
६.	सुन्दर काण्ड	१५९--१७५
	हनुमान का समुद्र लाँघना–१६०, लंका में हनुमान द्वारा सीता की खोज–१६०, हनुमान अशोक वाटिका में-१६१, सीता से रावण की याचना-१६२, रावण को सीता का उत्तर- १६३, त्रिजटा के स्वप्न-१६५, सीता हनुमान-संवाद–१६६, लंका से लौटकर हनुमान का अंगदादि से मिलना और सीता का पता बताना–हनुमान सीता का सन्देश राम को सुनाते हैं–	
७.	युद्ध काण्ड	१७६–२०७
	कपि सेना सहित राम का लंका जाना और रावण का वध करना–, राम द्वारा हनुमान की प्रशंसा–, सेना सहित राम का लंका के लिए प्रस्थान, रावण द्वारा मन्त्रणा–, रावण द्वारा विभीषणका तिरस्कार-, समुद्र पर पुल बाँधा जाना–, रावण के गुप्तचर शुक का पकड़ा जाना रावण बार-बार मंत्रणा करता है,– आखिर युद्ध छिड़ ही गया–, लक्ष्मण की मूर्छा-, मेघनाद वध-, रावण का धार्मिक अनुष्ठान-, रावण मंदोदरी–संवाद –,राम रावण युद्ध और रावण का बध–, हनुमान द्वारा सीता को राम विजय और रावण–वध की सूचना–, सीता–राम मिलन–, लंका से राम का अयोध्या प्रस्थान–, भरद्वाज आश्रम में राम का आगमन–,	
८.	उत्तरकाण्ड	२०८--२२६
	हनुमान द्वारा भरत का राम आगमन की सूचना–, राम अयोध्या लौटे–, राम का राज्याभिषेक–, राम राज्य वर्णन–, राम का देहावसान–	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रस्तावना

हरि ॐ तत्सत्

जमशेदपुर
१-१०-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम !

आज विजयादशमी है—हम हिन्दुओं का सर्वोत्तम त्योहार। आज ही—आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को त्रेता-युग में राम ने रावण पर विजय पायी थी। आज के ही दिन लंका में बन्दी मैया सीता उबार लायी गई थीं। इसी खुशी में लोग खुशियाँ मनाते हैं। बिछुड़े जन मिलते हैं। छोटे बड़ों को पैर छू-छू कर प्रणाम करते हैं। बड़े सस्नेह आशिष देते हैं। लोग छाती से लग-लगा कर भी मिलते हैं। आज के दिन सब तरह के वैर-भाव भुला देते हैं।

प्यारे मित्र ! यह मधुर खाने का त्योहार है। मिठाइयाँ खूब चलती हैं।

प्यारे मित्र ! आज खास दिन है—माँ के चरण छूने का, आशीर्वाद लेने का, उसके मनोनुकूल भोजन करने का। पर परिस्थितिवश माँ से दूर हूँ। वह गाँव पर और मैं यहाँ नौकरी पर, उससे दूर–जमशेदपुर में। जी तरसता है; तड़पता है—माँ से मिलने को पर मिल नहीं पाता। भारी विवशता है। भगवान न करें—कोई किसी का चाकर बने !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

माँ आज विशेष याद करती होगी। माँ के चरणों में, बार-बार अनेक बार प्रणाम है। फिर-फिर प्रणाम है। तन से दूर हूँ, किन्तु मन माँ के चरणों में लोट रहा है।

आपके जी में रामायण पढ़ने की आकाँक्षा जागी है। इससे मुझे बहुत प्रसन्नता है। फिर आइए--विजयादशमी के शुभावसर पर रामायण की चर्चा शुरू करें। पुनीत राम-कथा कहें--सुनें। साथ-साथ इसके आदर्श पात्रों के चरित्र को जीवन में उतारने का भरसक प्रयास करें। उनके पद-चिह्नों पर चलकर, जीवन सफल बनावें।

प्यारे मित्र ! तुलसीकृत रामायण का सरल अनुवाद करने का संकल्प प्रिय बेटी गायत्री ने किया है। यह पुनीत कार्य उसी के लिए छोड़ता हूँ। वह अपनी रुचि से जब कभी करेगी। मैं बाल्मीकि-रामायण का सार संक्षेप सरल सुबोध भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास करता हूँ।

प्यारे मित्र ! त्रेता-युग में, तमसा नदी के तट पर एक ऋषि रहा करते थे। बाल्मीकि उनका नाम था। वे उच्च-कोटि के विद्वान और तपस्वी थे।

एक दिन, बाल्मीकि ऋषि के आश्रम में नारद मुनि पधारे। ऋषि ने प्रणाम कर, उनका उचित सत्कार किया। फिर नम्रता से पूछा,--"मुनिवर ! इस धरती पर सर्व गुण संपन्न, आदर्श वीर पुरुष कौन हैं ? हमें बतलाइए।"

तब नारद मुनि बोले—"मुने ! इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र--रामचन्द्र ही भूतल पर, सर्व गुण सम्पन्न आदर्श वीर पुरुष हैं। वे ही महा बलवान, कान्तिवान, धैर्यवान, जितेन्द्रिय वीर हैं।"

प्यारे मित्र ! नारद मुनि बाल्मीकि ऋषि को संक्षेप में राम-कथा सुनाकर देवलोक को चले गये। बाल्मीकि जी के कानों में नारद मुनि की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बातें गूँजती रहीं। वे मन-ही-मन पुनीत राम-कथा को स्मरण करते रहे।

प्यारे मित्र ! राम-कथा स्मरण करते-करते बाल्मीकि ऋषि शिष्य भरद्वाज के साथ तमसा नदी में स्नान करने जाते हैं। वन की मनोरम शोभा निरखने लग जाते हैं। उनकी दृष्टि सहसा क्रौंच पक्षी की एक सुन्दर जोड़ी पर पड़ जाती है। उन्हें मस्ती में किलोल करते देखते हैं। उसी बीच उनके देखते-देखते, शिकार की टोह में बैठे बहेलिए का तीर छूटता है। तीर नर क्रौंच को लग जाता है। वह पंख फड़फड़ाता भूमि पर गिर जाता है। बेचारा क्षण में शान्त हो जाता है। क्रौंची का सोहाग लुट जाता है। वह चीख उठती है। चें-चें कर विलपने लगती है।

प्यारे मित्र ! ऋषि बाल्मीकि का संत हृदय करुणा से भर आता है। बहेलिए पर, रोष हो आता है। हठात बोल उठते हैं—

मा निषाद् प्रतिष्ठां त्वम गमः शास्वतीः समाः।
यत् क्रौंच मिथुना देकम वधोः काम मोहितम् ॥

रे निषाद (बहेलिया) ! तूने काम से मोहित क्रौंच की जुगल जोड़ी में निरपराध नर को मार डाला है। जा, तुझे कभी भी कहीं शान्ति न मिलेगी। तू भटकता ही फिरेगा।"

प्यारे मित्र ! बाल्मीकि ऋषि के मुख से श्लोक हठात् निकल पड़ा था। विश्व के इतिहास में यही पहली कविता मानी जाती है। सहसा कविता बन जाने से ऋषि बाल्मीकि चकित होते हैं। बहेलिए को हठात् शाप देकर दुःखी भी होते हैं।

प्यारे मित्र ! सोचते-विचारते, कुछ पछताते, बाल्मीकि ऋषि आश्रम लौटते हैं। इसी बीच सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा आश्रम में पधारते हैं। मुनि उनका सादर सत्कार करते हैं। आसन देकर, आदर से बैठाते हैं। बैठकर, बातें करने लगते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ब्रह्मा जी बातों-बातों में कहते हैं—"मुनिवर ! क्रौंच बध पर आपके मुख से निकली शाप-वाणी सचमुच सुन्दर छन्द ही बन गई है। समझिए मेरी प्रेरणा से ही निकली है। आप इसी प्रकार के छन्द में नारद मुनि से सुनी पुनीत राम कथा की रचना कर डालिए। आप की कृति अमर रहेगी। राम कथा के सारे गुप्त तथा प्रकट रहस्य आपको मेरी प्रेरणा से स्वतः ज्ञात हो जाएंगे। आप का मंगल होगा।"

प्यारे मित्र ! आशिष देकर ब्रह्मा जी अपने लोक में चले गए। वाल्मीकि जो आज दिन की सारी घटनाओं पर विचारते रहे। उधर शिष्य मँडली खुशी में उछल पड़ी। मुनि के मुँह से निकले श्लोक को पूरे लय से अलापने लगी।

प्यारे मित्र ! महर्षि बाल्मीकि समाधिस्थ हो, योग बल से, गुप्त प्रकट समस्त राम-कथा को ऐसे जान गए—जैसे सब कुछ उनकी आँखों के सामने हुआ हो, ऐसे—जैसे सब कुछ सुना हो। इसके पात्रों के मन में उठीं अनकही बातों को भी जान गए। फिर उन्होंने समस्त राम कथा को श्लोकों में लिख डाला। मित्र ! उनके द्वारा रचित काव्य ही वाल्मीकीय रामायण कहलाया।

प्यारे मित्र ! अगले पत्र में, राम-कथा की चर्चा होगी। आइए, विजयादशमी के शुभावसर पर कुछ विशेष बातें भी कर लें।

आत्मिक-शक्ति

प्यारे मित्र ! मनुष्य मात्र में शारीरिक और आत्मिक दो प्रकार की शक्तियाँ हुआ करती हैं।

शारीरिक शक्ति, पौष्टिक भोजन, शुद्ध जल और स्वस्थ वायु सेवन एवम् नियमित जीवन व्यायामादि से प्राप्त होती है, तो आत्मिक शक्ति शुद्ध सात्विक जीवन-यापन से। सुन्दर स्वस्थ शरीर आत्मिक शक्ति के अर्जन में सहायक होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

प्यारे मित्र ! आत्मिक शक्ति ही आत्मबल, दैविक शक्ति, ब्रह्मशक्ति आदि भिन्न-भिन्न नामों से पुकारी जाती है। यही मनुष्य को ऊपर उठाती है। देव तुल्य बनाती है। यही भगवत् पद भी प्राप्त कराती है।

अभी तक जितने धर्म प्रवर्त्तक, पैगम्बर, आदि हुए हैं–जिन्हें लोग भगवान के अवतार ही मानने लगे हैं; उन में और सर्वसाधारण में एक मात्र इतना ही भर का अन्तर रहा है कि उनकी जन्म-जन्मांतर से अर्जित आत्मिक शक्ति औरों से अत्यधिक थी।

अब तक लोग आत्मिक शक्ति से ही दिव्यज्ञान और दिव्य दृष्टि प्राप्त करते आए हैं। फलतः भूत, भविष्यत और वर्त्तमान के सब कुछ जानते और घर बैठे विश्व भर को देखते आए हैं। ऋद्धि सिद्धि सब कुछ प्राप्त करते आए हैं। इसके बल पर ही जग में पूजित होते आए हैं।

मेरे प्यारे मित्र ! विजयादशमी के शुभावसर पर आइए, शुद्ध सात्विक जीवन बिताकर आत्मिक शक्ति और-और संचय करने का व्रत लेवें।

अनन्त शुभ कामनाओं के साथ सप्रेम प्रणाम।

आपका आत्मरूप

गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बाल-काण्ड

जमशेदपुर
१५-१०-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम !

बाल्मीकि मुनि ने किस पृष्ट भूमि में बाल्मीकि-रामायण की रचना की इसकी चर्चा पिछले पत्र में हो चुकी है। आगे राजा दशरथ-कालीन अयोध्या का वर्णन सुनिए :—

राजा दथरथ-कालीन अयोध्या

प्यारे मित्र ! अयोध्यापुरी बहुत ही पुरानी नगरी है। कहा जाता है कि इक्ष्वाकु वंश के राजा मनु ने इसे बसाया था। इन्होंने ही इसे अपनी राजधानी बनायी थी। तब से अनेक इक्ष्वाकु वंशीय राजाओं की राजधानी होती आई। आगे चल कर तो तीर्थ स्थान ही बन गयो।

अयोध्यापुरी सरयू नदी के तट पर, गंगा नदी के उत्तर, उत्तर प्रदेश में बसी है। प्राचीन काल में, यह क्षेत्र कौशल कहलाता था।

प्यारे मित्र ! त्रेता-युग में, इक्ष्वाकु वंश में राजा दशरथ नामक प्रतापी राजा हुए। अयोध्यापुरी हो इनकी राजधानी रही।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्यारे मित्र ! अयोध्यापुरी बारह योजन लम्बी और तीन योजन चौड़ी थी। इसमें लम्बी चौड़ी अनेक सड़कें थीं। राजमार्ग तो बहुत विशाल था। सड़क के दोनों ओर सुन्दर-सुन्दर वृक्ष लगे थे। सड़कों पर जल का छिड़काव हुआ करता था। पुरी वाटिकाओं और तड़ागों से भरी थी।

नगर में अलग-अलग भिन्न-भिन्न प्रकार के कई बाजारें थीं। वहाँ सब तरह के यन्त्र, अस्त्र-शस्त्र तैयार मिलते थे। अयोध्यापुरी में सभी कलाओं के कुशल कारीगर बसते थे। अयोध्यापुरी धन-धान्य से परिपूर्ण थी। उसमें ऊँची-ऊँची अटारियाँ थीं। शूर-वीर, धीर-गंभीर तथा एक-से-एक विद्वान्-ऋषि-मुनि आदि श्रेष्ठ पुरुष वहाँ बसते थे। सभी अयोध्या-वासी वैभवशाली थे। सभी धर्मरत थे। कोई कामी, क्रूर, कृपण, मूर्ख व नास्तिक न था। राजा की सेना सुदृढ़ थी। राजधानी-अयोध्यापुरी शत्रु से बचाव के लिये गहरी खाइयों से घिरी थी। शत्रुओं से सर्वथा अजेय थी।

धृष्टि, जयन्त, विजय, सुराष्ट्र राष्ट्रवर्द्धन, प्रकोप, धर्मपाल और सुमंत राजा दशरथ के आठ मंत्री थे। सुमंत सब के मुखिया थे ! वे अर्थ-शास्त्र के ज्ञाता थे।

सुयज्ञ, जावालि, कश्यप, गौतम, दीर्घायु, मार्कण्डेय व कात्यायन राजा दशरथ के उपमंत्री थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

महर्षि वशिष्ट और वामदेव राजा दशरथ के पुरोहित थे। ये भी मंत्रणा दिया करते थे !

प्यारे मित्र ! राजा के सभी मंत्री कार्य-कुशल थे ! मंत्र के तत्व को जानने वाले थे। व्यक्ति की बाहरी चेष्टा देख कर ही मन के भाव को समझ जाते थे। सभी मुस्कुरा कर बातें किया करते थे। सब के सब, विद्वान्, विनय-शील, सलज्ज, जितेन्द्रिय, श्री-सम्पन्न, महात्मा, शास्त्रज्ञ, सुदृढ़, तेजस्वी, क्षमाशील और कीर्तिवान् थे। सभी राज-काज में सतर्क और राजा के आज्ञाकारी थे।

गुप्तचरों द्वारा मंत्रीगण अपने राज्य तथा दूसरे राज्यों की भी पूरी खबर लिया करते थे। सबके सब, न्यायी थे। दोषी पाने पर, अपने पुत्र को भी नहीं छोड़ने वाले थे। अपराधी को मृत्यु दंड भी दिया करते थे। दंड देने में अपराधियों की शक्ति और परिस्थिति का भी विचार किया करते थे !

प्यारे मित्र ! राजा दशरथ की राज्य-व्यवस्था बड़ी ही उत्तम थी। प्रजा बहुत-बहुत सुखी थी। उनका यश देव-लोक तक फैला हुआ था। देवताओं के राजा इन्द्र तक इनकी सहायता लिया करते थे। वे अपने अच्छे गुणों के लिए सर्वत्र पूजित थे।

प्यारे मित्र ! केवल इतने भर से ही पता चलता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

कि भारतवर्ष अति प्राचीन-काल में भी बहुत ही समृद्धिशाली देश था। संस्कृति और सभ्यता में बहुत आगे बढ़ चुका था। लगता है—शासन-व्यवस्था प्रजातन्त्र की तरह ही थी। राजा एक प्रकार से विधानानुसार प्रधान (Constitutional Head) ही हुआ करते थे। शासन-व्यवस्था सही माने में कुशल मन्त्रियों के हाथ में थी। धर्म-राज्य था। हजारों-हजार वर्ष पूर्व रचित बाल्मीकीय रामायण के वर्णन से तो यही प्रतीत होता है।

राजा दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ

प्यारे मित्र ! जगन्नियन्ता सब को सब कुछ एक साथ नहीं देता। कोई-न-कोई कमी बहुधा लोगों को कसकती रहती है। राजा दशरथ ने एक-एक करके कौशल्या, सुमित्रा व केकई—तीन पटरानियाँ बना डालीं। पर किसी से भी कोई संतान न हुई। इधर बुढ़ापा आ धमका। बेचारे संतान के लिए तरसते रहे। अन्त में उन्होंने पुत्र के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करने की इच्छा प्रकट की। मंत्रियों ने उनका समर्थन किया। राज पुरोहित महर्षि वशिष्ट और वामदेव ने भी उत्साहित किया।

प्यारे मित्र ! पुत्रेष्टि यज्ञ ठाना गया। यज्ञ का घोड़ा दिग्-विजय के लिए छूटा। उसके पीछे-पीछे राजा की विशाल सेना चली। वर्ष भर में घोड़ा सभी राज़ाओं के राज्य से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

होता हुआ विजय-पताका फहराता अयोध्या लौटा। राजा दशरथ के प्रवल प्रताप के कारण किसी राजा ने यज्ञ के घोड़े को रोकने का साहस नहीं किया।

प्यारे मित्र! उस समय ऋष्य श्रृङ्ग नामक ऋषि महान कर्म काण्डी थे। यजुर्वेद के पूर्ण ज्ञाता थे। सर्व सम्मति से वे ही यज्ञ के आचार्य चुने गए। ऋष्य श्रृङ्ग ऋषि, श्रृङ्ग देश के राजा रोमपाद के यहाँ रह रहे थे। राजा दथरथ अपनी रानियों के साथ अङ्ग देश गए और ऋषि ऋष्य-श्रृङ्ग को आदर पूर्वक बुला लाए। उनकी भार्या 'तारा' भी उनके साथ आई।

नगर के बाहर सरयू नदी के तट पर विशाल यज्ञ-मंडप बना। हित-मोत, राजे-महाराजे सभी निमंत्रित हुए। ऋषि-मुनि, पण्डित-ज्ञानी सभी सादर बुलाए गए। महर्षि वशिष्ठ के कहने पर, मन्त्रिवर सुमन्त जी, मिथिला के राजा जनक को, काशी-राज को, केकय देश के बूढ़े राजा—राजा दशरथ के श्वसुर राजसिह को, अङ्गराज-रोमपाद को, कोशल-राजा भानुमान को तथा मगध देश के राजा प्रातिज्ञ को स्वयम् निमन्त्रित करने गए और उन्हें आदर-पूर्वक बुला लाए।

प्यारे मित्र! विवाह, यज्ञादि के विशेष शुभावसरों पर अपने सनेही एवं पूज्य लोगों को निमंन्त्रण भर भेजा देना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पर्याप्त नहीं होता। उन्हें तो स्वयम् जाकर अथवा अपने निजी लोगों को भेज कर सादर लिवा लाना चाहिए।

प्यारे मित्र! सारी तैयारी हो जाने पर ऋष्यश्रृङ्ग ऋषि ने शुभ मुहूर्त्त में विधिवत् यज्ञ कराया। दान-पुण्य खूब हुआ। राजा दशरथ ने याचकों को मुँह माँगा दान दिया। इतना दिया कि याचक अयाचक बन गए। वे निहाल हो गए। अब और किसी से माँगने की आवश्यकता ही न रही।

प्यारे मित्र! भगवान ने उनकी भी सुनी। यज्ञ के विशेष प्रसाद के, पाने से, तीनों रानियाँ गर्भवती हुईं।

प्यारे मित्र! भारत के दक्षिण में सागर बीच लंका नामक एक छोटा-सा द्वीप है। उस समय वहाँ का राजा रावण था। वह बड़ा प्रतापी था। भारी पण्डित था। महान् पराक्रमी और परम शिव-भक्त। शिव से उसने अनेक वरदान पाये थे। भोले बाबा ने उसे वरदान दे दिया था कि वह देव-दानव किसी के मारे न मरेगा। उसकी लंकापुरी धन-धान्य से पूर्ण थी। उसे सभी ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त थीं। वह बड़ा भारी वैज्ञानिक भी था। वायु वर्षादि प्राकृतिक शक्तियों पर भी उसका अधिकार था।

उसका विशालकाय भाई कुम्भ कर्ण भारी योद्धा था। दूसरा भाई विभीषण उससे विभिन्न मत वाला था। अन्त में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

यही रावण से फूटकर, शत्रु दल में मिलता है। रावण के वध में सहायक होता है।

प्यारे मित्र! इन सारी बातों की चर्चा विस्तार में आगे होगी हो, समझने में आसानी के लिए संकेत भर दे देता हूँ। रावण के मेघनाद, अक्षयकुमार, प्रहस्त-जैसे कई पराक्रमी आज्ञाकारी पुत्र थे। उसे मंदोदरी जैसी नीति-निपुणा, धर्म परायणा, पतिव्रता रानी थी।

प्यारे मित्र! सब कुछ होते हुए भी रावण की बुद्धि सात्विक न रह सकी। वह धन बल विद्या के मद में चूर हो गया। मृत्यु-लोक देव-लोकादि पर एकाधिपत्य कर लेना चाहा। उसने उचित अनुचित सभी राह अपनायी। धर्म-युद्ध से नाता तोड़ा। धर्म छोड़ अधर्म पर उतरा। कूट नीति अपनायी। सत्कर्म कर, कोई शक्तिशाली न बन जाय इस पर पूरा नजर रखने लगा। कहीं ऋषि-मुनि देव-गणादि तप-तपस्या-यज्ञादि के अनुष्ठान से शक्तिशाली न हो जायँ—इससे उनके इस प्रकार के सभी शुभ कार्यों में विघ्न डालने लगा। उन्हें भाँति-भाँति से सताने लगा। वेचारों का जीना दूभर कर डाला।

प्यारे मित्र! तब सब देवता मिल कर सृष्टि-कर्त्ता व्रह्मा जी के पास पहुँचे। उन से फरियाद किया। व्रह्मा जी ने उन्हें धीरज बँधाया। व्रह्मा जी बोले,— "हे देवो! आप सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अधीर न हों। मैं विष्णु भगवान से बातें करुँगा। रावणादि राक्षसों के वध का रास रचूँगा।"

प्यारे मित्र ! फिर व्रह्मा जी विष्णु भगवान से मिले। रावणादि राक्षसों के बढ़ते हुए अत्याचार से देवताओं के भीषण दु:ख की चर्चा की। व्रह्मा जी बोले,—"भगवन् ! रावणादि राक्षसों के प्रकोप से देवगण, ऋषि-मुनि त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। भूतल से धर्म उठता जा रहा है।"

तब विष्णु भगवान बोले,—"देव ! राक्षसों का संहार कर साधु जनों की रक्षा एवं धर्म की नींव मजबूत करने के लिए, मैं राजा दशरथ की रानी कौशल्या के गर्भ से अवतार लूँगा। मनुष्यवत् रह अपना काम पूरा करुँगा।"

प्यारे मित्र ! इतना कह, विष्णु भगवान ने व्रह्मा जी को विदा किया। ब्रह्मा जी खुशी-खुशी अपने लोक लौटे। देवों को खुश खबरी सुनाई। देवगण बहुत प्रसन्न हुए।

राम जन्म और बाल-लीला

प्यारे मित्र ! ऐसा ही हुआ। समय पूरने पर, चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि के पुनर्वसु नक्षत्र के कर्क लग्न में विष्णु भगवान कौशल्या के गर्भ से जन्मे। राम कहलाए। बाद में रानी केकई से भरत, और सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न जन्मे। फिर तो भारी उत्सव हुआ। अयोध्यापुरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मंगल दीपों से जगमगा उठी। मंगल गान वाद्यादि से गूँज उठी। खान-पान भी खूब हुआ। मिठाइयाँ भी खूब बटीं। वस्त्र भूषणादि भी खूब लुटाए गए।

प्यारे मित्र! राजा दशरथ के बुढ़ापे में पुत्र-रत्न पैदा हुए थे। उनकी खुशी का क्या कहना! वे तो खुशी में सुध-बुध खो रहे थे। उनकी खुशी के वर्णन में संत तुलसी दास जी लिखते हैं:—

दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना।
मानहुँ ब्रह्मा नन्द समाना॥
परम प्रेम मन पुलक सरीरा।
चाहत उठन करत मति धीरा॥
जाकर नाम सुनत सुभ होई।
मोरे गृह आवा प्रभु सोई॥
परम नन्द पूरि मन राजा।
कहा बोलाइ बजावहु बाजा॥

राजा दथरथ जी पुत्र (राम) के जन्म की खबर सुनकर, आनन्द में ऐसे विभोर हो जाते हैं—जैसे ब्रह्मानन्द में ही समा गए हों। मन प्रेम से भर जाता है और तन पुलकित हो उठता है। सुध-बुध अपार खुशी में भूल-सा जाते हैं। संभल कर उठना चाहते हैं।

राजा दथरथ बोल उठते हैं—"अरे! जिस प्रभु का नाम सुनते ही मङ्गल होता है; वही प्रभु मेरे घर आ गए हैं।" आज राजा का मन आनन्द से परिपूर्ण हो गया है। बाजे वालों को बुलाकर कहते हैं—"बजाओ बाजा।"

प्यारे मित्र! विशेष रस के लिए तुलसीकृत रामायण पढ़ें। तुलसीकृत रामायण अपना सानी नहीं रखता। बेनी कवि ने ठीक ही कहा है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

वेद मत सोधि सोधि, सोधि के पुरान सवै,
संत औ असंतन को भेद को बतावतो।
कपटी कुराही, क्रूर कलि के कुचाली जीव,
कौन राम नाम हू की चरचा चलावतो॥
'बेनि' कवि कहै मानो-मानो हो प्रतीति यह,
पाहन हिये मैं कौन प्रेम उपजावतो।
भारी भव सागर उतारतो कवन पार,
जो पै यह रामायण तुलसी न गावतो॥

प्यारे मित्र ! अब विषय प्रसंग पर आवें :—

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न चारों भाई, बड़े होनहार निकले। सभी अच्छे गुणों से सम्पन्न। उनका बाल चरित्र बड़ा ही मोहक। राजा-रानी जन-परिजन सकल पुरवासी उनको बाल लीला निरख-निरख अतीव सुख पाते। राम के दर्शन कर लोचन सफल बनाते।

प्यारे मित्र ! जहाँ भगवान राम ही हों—वहाँ सुख का क्या कहना। वहाँ तो सुख-सागर ही उमड़ आया था। पुरवासी तो उसमें गोते लगा रहे थे। मित्र ! धन्य थे वे लोग जो नित्य राम के दर्शन करते।

प्यारे मित्र ! राजा दथरथ ने चारों पुत्रों के पढ़ने की अच्छी व्यवस्था की। बुद्धि उनकी बड़ी तीव्र थी। नेह से पढ़ने लगे। अल्प समय में शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर लिया। अस्त्र-शस्त्र विद्या भी सीख ली। राज-विद्या में भी प्रवीण हो गए।

प्यारे मित्र ! दशरथ नन्दन राम और उनके तीनों भाई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रातःकाल उठते। उठते-उठते माता-पिता और गुरुजनों को सादर प्रणाम करते। राजा से पूछ-पूछ उनकी अनुमति ले लेकर नगर के काम करते। मित्र! पुत्रों के अनुपम चरित्र देख-देख राजा दशरथ बहुत प्रसन्न होते।

मेरे प्यारे मित्र! कल्पना में तो राम-लक्ष्मण और सीता मैया से निरन्तर मिला करता हूँ। उस घड़ी कृत्य-कृत्य हो जाऊँगा—जब कम से कम स्वप्न में भी इन नयनों से उन्हें निहार लूँगा। फिर तो उन्हें पलकों में छिपा लूँगा।

प्यारे मित्र! आँखों से प्रेमाश्रुओं की अविरल धारा बह चली है। अब लिखते नहीं बनता। विदा दीजिए। अगले पत्र में राजा दशरथ की राज्य-सभा में, महर्षि विश्वामित्र के आगमन और राम की याचना की चर्चा करूँगा।

आइए, ईश वन्दना कर बिदा होवें :—

सूर्य चन्द्र के बहु रूपों में,
स्वयं प्रकाशित शोभा धाम।
ओ मानस के अन्तराल में,
बसने वाले! तुम्हें प्रणाम॥
जीवन नौका के कैवर्त्तक,
दिव्य रूप लोचन अभिराम।
कवि की कविता, प्रकृति नटी के,
नाट्यकार! हे पूरण काम॥
भक्तों के भगवान, मान,
अभिमान, ज्ञान सीता के राम!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

द· नं· ६४५६

दीनों दुःखियों के उद्धारक,
परम विलक्षण सुख के धाम।
हे अनन्त, अभिनाशी अक्षय !
अद्भुत सभी तुम्हारे काम।
दो सुबुद्धि, वह अष्ट याम,
रसना ले राम ! तुम्हारा नाम ॥
(गौरी शंकर गुप्त)

आप को अनन्त शुभ कामनाओं के साथ सप्रेम प्रणाम !

आपका आत्मरूप
गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

महर्षि विश्वामित्र का आगमन और राम की याचना

जमशेदपुर
१०-१०-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम !

आज दिन का यह दूसरा पत्र है। दोनों साथ मिलेंगे।

प्यारे मित्र ! रामायण काल में महर्षि विश्वामित्र वक्सर के पास सिद्धाश्रम में रहा करते थे। वहीं तपश्चर्या करते थे। उनके आश्रम के पास ही ताड़का राक्षसी रहती थी। वह भारी उपद्रवी थी। ऋषि के तपश्चर्या में विघ्न डाला करती थी। मारीच और सुवाहु उसके दो बलवान पुत्र थे। वे भी नर-भक्षी थे। सभी आश्रम वासियों को सताया करते। उन्हें जरा भी अपवित्र पाते तो जीते खा जाते।

प्यारे मित्र ! ऋषि-महर्षि अपने तपोवल से राक्षसों को क्षण में भस्म कर सकते थे। लेकिन उन लोगों ने किसी पर क्रोध न करने का, वैरी के भी अहित की कामना तक न करने की, शापादि न देने का व्रत ले लिया था। इससे अपने आप उन राक्षसों से उन्हें निबटते नहीं बनता था। उनके संहार के लिए, व्रह्मर्षि विश्वामित्र जी रामचन्द्र को राजा दशरथ से, माँग-लाने के लिए अयोध्या पहुँचे। राजा दशरथ ने उन्हें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रणाम कर, यथोचित सत्कार किया। फिर विनीत भाव से आगमन का आशय पूछा।

विश्वामित्र जी बोले,—"मैं सिद्धि के लिए एक नियम का अनुष्ठान कर रहा हूँ। इसमें मारीच और सुबाहु नामक दो राक्षस विघ्न डाल रहे हैं। वे इच्छानुसार रूप धरते हैं। यज्ञ की वेदी पर माँस और रक्त की वर्षा करते हैं। मैं जिस नियम का अनुष्ठान कर रहा हूँ; उस में किसी को शाप नहीं दिया जा सकता। राजन्! राम को उन्हें मारने के लिए, मेरे साथ भेजिए। मैं उन्हें प्यार से रखूँगा"

प्यारे मित्र! राजा दशरथ को विश्वामित्र की बातें वाण-सी चुभ गईं। इनकी तो उन्होंने कल्पना तक न की थी। बेचारे बड़ी दीनता से बोले,—"ब्रह्मर्षि! राम तो अभी बालक ही हैं। सोलह साल के भी न हुए हैं क्रूर राक्षसों से कैसे लड़ पाएँगे। अगर उन्हें जाना ही है तो सेना सहित मुझे भी जाने की अनुमति दीजिए। हम और हमारी सेना राक्षसों से लड़ेगी। आश्रम-वासियों की रक्षा करेगी।"

प्यारे मित्र! ब्रह्मर्षि विश्वामित्र अपने उग्र स्वभाव के लिए विख्यात थे। राजा की बातें सुनते ही भभक उठे। सभी डर गए कि कहीं वे शाप न दे दें। संयोग से गुरु वशिष्ट जी भी वहाँ उपस्थित थे। वे विश्वामित्र जी को शांत करने लगे। राजा दशरथ को भी समझाने लगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वशिष्ठ जी राजा दशरथ से बोले,—"राजन ! व्रह्मर्षि विश्वामित्र राजर्षि भी हैं। धनुर्विद्या पर इन्हें पूर्ण अधिकार वरदान रूप में भगवान शिव से प्राप्त है। चाहें तो स्वयम् राक्षसों को मार सकते हैं; परन्तु ये राम को यश का भागी बनाना चाहते हैं। राम को इनके साथ भेजने में किसी प्रकार भी क्षति की आशंका नहीं है। राजन् ! राम भी साधारण व्यक्ति नहीं हैं। उनमें अलौकिक शक्ति है। राम को व्रह्मर्षि विश्वामित्र के साथ भेज दीजिए।"

प्यारे मित्र ! वशिष्ठ जी के कहने पर, राजा दशरथ राम को विश्वामित्र जी के साथ भेजने को तैयार हो गए।

प्यारे मित्र ! बचपन से ही लक्ष्मण राम के साथ छाया की तरह रहने लगे थे। साथ-साथ रहते। साथ-साथ खाते-पीते, खेलते-कूदते। उधर भरत शत्रुघ्न में गहरी मित्रता हो गई थी। वे भी सदा साथ रहते। जहाँ कहीं जाते साथ-साथ जाते।

राम का सिद्धाश्रम-प्रस्थान

राजा दथरथ ने राम-लक्ष्मण दोनों को भेजने का निश्चय किया। दोनों राजकुमार विश्वामित्र के साथ जाने को सहर्ष तैयार हो गए। तरकस बाँधे। धनुष-वाण लिए। माता-पिता गुरुजनों को प्रणाम कर ब्रह्मर्षि विश्वामित्र के साथ चल पड़े।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दोनों माता-पिता को दारुण-वियोग दुःख दे गए। पुरवासियों के भी प्राण हरते गए। जब तक आँख से ओझल न चले गए, सभी एक टक से निरखते रहे। सब की आँखें प्रेमासुओं से छल-छला उठीं।

प्यारे मित्र ! छोड़िए, इन्हें योंही। लग चलिए, राम-लक्ष्मण और मुनि विश्वामित्र के पीछे-पीछे। हमें तो राम के साथ रहना है, उनकी नींद सोना है, उनकी नींद जागना है। मित्र ! मुझे तो ऐसा लगता है कि सारी घटनाएँ मेरी आँखों के सामने से कतार-कतार में पार हो रही हैं। मैं कल्पना में देख रहा हूँ—राम-लक्ष्मण मुनि के पीछे-पीछे दूर बढ़ते जा रहे हैं। मील-भर निकल गए। अब पुरवासियों की आँख से ओझल हो गए।

प्यारे मित्र ! डेढ़ योजन चल कर, वे सरयू नदी के किनारे पहुँचे। तब विश्वामित्र जी बोले,—"राम ! मैं तुझे वला और अतिवला नामक विद्याओं को सिखलाना चाहता हूँ। इनके प्रभाव से तू कभी नहीं थकोगे। तुझे ज्वर न आयगा। लड़ाई में तुझे कोई हरा न सकेगा। ज्ञान और बुद्धि में भी तेरा कोई बराबरी न कर सकेगा। भूख-प्यास भी तुझे व्याकुल न कर पाएँगी। तू तुरन्त सरयू में स्नान कर पवित्र हो लो।"

प्यारे मित्र ! राम ने तुरन्त स्नान किया। तब विश्वा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मित्र जी ने बड़े स्नेह से वला और अतिवला विद्याएँ सिखलायीं। फिर तो राम में और भी अलौकिक शक्तियाँ आ गईं।

मित्र ! इस रात विश्वामित्र जी, राम-लक्ष्मण के साथ सरयू तट पर ही टिक रहे हैं। आइए, हम दोनों भी यहीं रहें। भोर में इनके साथ हो लेंगे।

प्यारे मित्र ! बचपन में ही तुलसीकृत रामायण पढ़ने की चाट लग गई थी। नियमित रूप से पाठ तो कुछ काल ही हो पाया, किन्तु राम-कथा की चर्चा तो किसी-न-किसी रूप में सारा जीवन होती आई। अब तक समाप्त न हुई– न होगी ही। इससे न जी भरा, न भरेगा ही।

प्यारे मित्र ! स्नान करने से, जैसे तन का मैल दूर होता है—वैसे ही राम-कथा की चर्चा से मन का। राम नाम की महिमा भी अपरम्पार है। राम नाम मन को पवित्र करता है। हृदय के अंधकार को दूर करता है। सांसारिक क्लेशों को दूर भगाता है। सोते-जागते उठते-बैठते राम नाम लेते रहिए। मित्र ! अपूर्व आनन्द मिलेगा। अपनी कल्पना के अनुसार राम की मोहनी मूर्त्ति को अपने हृदय में बैठाइए। फिर तो आपका हृदय आपसे आप आलोकित हो जाएगा। ज्ञान से परिपूर्ण। फिर तो मन आनन्द में विभोर हो जायगा।

प्यारे मित्र ! मैं आजमा चुका हूँ। आप आजमा कर देखिए। पढ़ने के साथ-साथ राम नाम रूपी अमृत पान करते चलिए। हृदय को राम के रहने योग्य, पवित्र बनाते चलिए।

बोलिए—सियावर राम की जय !

आपका आत्मरूप

गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ताड़का और सुबाहु का वध

जमशेदपुर
१६-१०-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम !

पिछले पत्र में विश्वामित्र जी के साथ राम-लक्ष्मण अयोध्यापुर से चलकर, सरयू नदी के तट पर विश्राम कर रहे हैं। अब आगे की वार्ता सुनिए :—

प्यारे मित्र ! भोर होते ही राम-लक्ष्मण झट उठे। विश्वामित्र जी के पैर छू प्रणाम किया। शौचादि से निवृत हो सरयू में स्नान किया। फिर देवताओं को तर्पण किया। गायत्री मन्त्र का जाप किया। फिर विश्वामित्र जी के साथ आगे बढ़े।

प्यारे मित्र ! चलते-चलते वे गंगा नदी के तट पर पहुँचे। गंगा नदी की निर्मल धारा राम-लक्ष्मण को बहुत सुहावनी लगी। नदी के कल-कल शब्द बहुत मधुर लगे। वे एक टक से उजले हीरे की तरह चमकती जलधारा देखते रहे।

प्यारे मित्र ! गंगा नदी पार कर, वे आगे बढ़े। चलते-चलते ताड़का वन पहुँचे। वहीं वह ताड़का राक्षसी रहती थी, जो देवताओं को बहुत सताया करती थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्यारे मित्र ! महर्षि विश्वामित्र राम से बोले,—"प्यारे राम ! शास्त्रों में नारी-वध वर्जित है। फिर भी लोक-हित दुराचारिणी राक्षसी ताड़का को मारने में कोई दोष नहीं दीखता। तू निसंकोच ताड़का का वध करो।"

राम बोले,—"मुनिवर ! पिता जी ने राज-सभा में आपकी आज्ञा पालन करने को कहा है। आपकी आज्ञा है तो मैं ताड़का को बिना कुछ सोचे-बिचारे अवश्य मारूँगा।"

प्यारे मित्र ! इतना कह, राम ने तुरन्त ताड़का को ललकारा। वह उन पर झपटी। राम ने शीघ्रता से उसे अपने तीखे वाणों से मार गिराया। बेचारी के प्राण-पखेरू उड़ गए।

ताड़का-वध से विश्वामित्र जी राम पर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उन्हें सभी प्रकार के दिव्य अस्त्र दिए और उनकी महिमा और व्यवहार-विधि बतलाई।

फिर विश्वामित्र जी अपने आश्रम की ओर बढ़े। रास्ते-भर राम मुनि से भौगोलिक बातें पूछते गए। मुनि बड़े प्यार से सब कुछ बताते गए। प्यारे मित्र ! चलते-चलते वे ताड़का वन पार कर गए। मुनि के आश्रम के समीप आ गए। तब राम विनीत भाव से बोले,—"मुनिवर ! यह वन भाग बहुत ही सुखदाई लगता है। बहुत ही पवित्र प्रतीत होता है। इसके बारे में जानने की भारी उत्सुकता है। मुझे बतलाइए।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

प्यारे मित्र ! तब विश्वामित्र जी स्नेह भरे शब्दों में बोले,—"प्रिय राम ! किसी समय, इसी भू-भाग में विष्णु भगवान् ने युगों निवास किया था। आश्रम बना कर यहीं तप किया था। उन्हें तपस्या में यहीं सिद्धि मिली थी। सिद्धि प्राप्ति के बाद से ही यह आश्रम सिद्धाश्रम कहलाने लगा। कालान्तर में, वे विष्णु लोक चले गए। प्यारे राम ! विष्णु भगवान का वह सिद्धाश्रम ही अब मेरा आश्रम है। आश्रम पर हम लोग पहुँच ही गए।"

प्यारे मित्र ! विश्वामित्र जी ने राम-लक्ष्मण के साथ सिद्धाश्रम में प्रवेश किया। उनके आगमन से आश्रम वासी बहुत प्रसन्न हुए। विश्वामित्र जी को साष्टाङ्ग प्रणाम किया। राम-लक्ष्मण ने आश्रमवासियों को सादर प्रणाम किया।

तदन्तर राम-लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र से बोले,—"मुनिवर ! अब आप निश्चिन्त होकर यज्ञ का अनुष्ठान करें। हम दोनों मारीच, सुवाहु और उनके अनुचरों से निपट लेंगे। यज्ञ की रक्षा कर लेंगे।"

प्यारे मित्र ! तब विश्वामित्र जी ने यज्ञ की दीक्षा ली। यज्ञ प्रारम्भ हुआ। राम-लक्ष्मण धनुष-वाण उठाए, यज्ञ की रक्षा के लिए तैनात हुए। छह दिन छह रात न नींद ली, न विश्राम किया। छठवें दिन के अन्त में, जब यज्ञ समाप्ति पर था, मारीच और सुवाहु अपने दलबल के साथ, आकाश मार्ग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

से आ ही गए। आकाश में ऐसा लगा मानो काली घटा छा गई। भारी गर्जन हुआ। तूफान-सा आ गया। राक्षस रक्त और मांस बरसाना शुरु किए। यज्ञ के आस-पास की भूमि रक्त से भींग-सी गई। झट राम ने मारीच पर मानवास्त्र चलाया। उसे छाती में लगा। लगते ही वह अचेत हो गया। साथ-साथ सौ योजन दूर जा गिरा। अस्त्र के प्रभाव से और दूर फेंकाता गया। मरा नहीं। क्योंकि मानवास्त्र का यही प्रभाव है। वह जान नहीं लेता। अचेत करता है एवम् दूर ले जाता है। फिर राम ने एक ही वाण में सुवाहु को मार गिराया। उसके अनुचरों को भी मार डाला। विश्वामित्र का यज्ञ निर्विघ्न समाप्त हुआ। राक्षसों के संहार से ऋषि-मुनि बहुत प्रसन्न हुए।

प्यारे मित्र ! अब विदा दीजिए। अगले पत्र में हम दोनों राम-लक्ष्मण और विश्वामित्र के साथ-साथ सिद्धाश्रम से जनकपुर के लिए प्रस्थान करेंगे। वहाँ सीता-स्वयम्वर देखने जाएँगे। सच पूछिए, मित्र! जो चाहता है कि लिखता ही रहूँ। लिखते समय अपने को युगल जोड़ी, राम-लक्ष्मण के साथ पाता हूँ मुझे जो आनन्द मिलता है—उसे कैसे बताऊँ ! भगवान करें—पढ़ते समय आप को भी कही आनन्द मिले ! जी चाहता है जब वे सोते हैं—मैं जागता ही रहूँ। सलोनी मूर्ति को देखता ही रहूँ।

बोलिच—धनुष धारी राम की जय ! लखन लाल की जय !! भक्तवर हनुमान की जय !!!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अभी तक भक्तवर हनुमान से आप को मिला न सका हूँ। मित्र! अभी देर है। मिलिएगा—भक्तवर हनुमान से सीता-हरण के बाद। वर्षों की प्रतीक्षा के बाद। ऐसे तो 'हमारी संस्कृति छवि' में उनकी चर्चा हुई ही है। वे तो आप से सुपरिचित ही हैं।

अनन्त शुभ कामनाओं के साथ आप को सादर प्रणाम!

आप का आत्मरूप
गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राम जनकपुर को ओर

जमशेदपुर
१८-१०-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम

पिछले पत्र में विश्वामित्र का यज्ञ समाप्त हुआ। यज्ञ समाप्ति की रात सबों ने सिद्धाश्रम में विश्राम किया। दूसरे दिन राम-लक्ष्मण नित्य कर्म कर विश्वामित्र के पास आए। प्रणाम कर बोले,—"मुनिवर ! आगे क्या आज्ञा है ?"

महर्षि विश्वामित्र आशिष दे कर, प्यार से बोले,—"प्यारे राम ! मिथिला में राजा जनक का धनुष यज्ञ होने वाला है। चलो, हम सब देखने जाएँगे। राजा जनक के पास एक पुराना दिव्य धनुष है। उसे भगवान् शिव ने प्रसन्न हो कर, राजा जनक के पूर्वज को दिया था। वह इतना भारी है कि किसी से उठाए नहीं उठता। डुलाये नहीं डुलता। कोई उसकी प्रत्यंचा चढ़ा नहीं पाता। तुम दोनों धनुष को भी देखोगे।" इतना सुनकर राम-लक्ष्मण बहुत प्रसन्न हुए।

प्यारे मित्र ! शिष्य मंडली और राम-लक्ष्मण के साथ विश्वामित्र मुनि मिथिला के लिए बैलगाड़ियों पर चल पड़े।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

सन्ध्या समय सोन नदी के तट पर पहुँचे। उस रात वहीं विश्राम किया। रात में देर तक कथा प्रसङ्ग चलते रहे। विश्वामित्र जी ने राम लक्ष्मण को कई पौराणिक कथाएँ सुनाईं।

प्यारे मित्र ! दूसरे दिन मंडली ने सोन नदी, तड़के पार किया। आगे बढ़ी और गंगा नदी के तट पर पहुँची। पतित पावन गंगा के दर्शन किए। उस रात वहीं ठहरे। सबों ने पवित्र गंगा में स्नान किया। पूजा-पाठ किए। नदी किनारे गंगा के पवित्र जल में भोजन बना। भगवान् को भोग लगा कर, सबों ने प्रसन्न-मन प्रसाद पाया। उस रात वहीं विश्राम किया।

प्यारे मित्र ! हमारे पूर्वज भगवान् को भोग लगा कर ही भोजन किया करते थे। शुद्ध सात्विक पवित्रता से भोजन बनाते। उसमें तुलसी-दल छोड़ते। फिर भोजन करने बैठते। पहले भगवान् को स्मरण कर कहते,—"भगवन् ! आप की ही दी हुई भोजन-वस्तु आप को समर्पित है।" फिर प्रसन्न मन भोजन करते ! उनकी भावनाएँ प्रभु के प्रति प्रेम से ओत-प्रोत रहतीं। उन्हें भावनानुकूल फल मिलते।

अब विषय प्रसंग पर आवें:—

प्यारे मित्र ! दूसरे दिन भोर ही विश्वामित्र जी मंडली के साथ गंगा पारकर, जनकपुर के लिए आगे बढ़े। रास्ते में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रात्रि में विश्राम करते, जनकपुर पहुँचे। सीधे राजा जनक की यज्ञ-शाला में गए। यज्ञ-शाला की तैयारी वृहत् थी। सुन्दर विशाल मंडप बना था। इस की शोभा राम-लक्ष्मण को बहुत भायी। उसकी वे प्रशंसा करने लगे। फिर वे यज्ञ-शाला से बाहर आए। सुन्दर सरोवर किनारे, सघन वृक्ष के नीचे डेरा डाला।

प्यारे मित्र ! महर्षि विश्वामित्र के आगमन की सूचना पाते ही, राजा जनक मंत्री शतानन्द के साथ मिलने आ गए। ऋषि को प्रणाम कर, सादर सत्कार किया। ऋषि ने राम-लक्ष्मण से परिचय कराया।

प्यारे मित्र ! राजा दशरथ उनके मित्र थे। मित्र-पुत्रों को अपनी पुरी में पाकर राजा जनक बड़े प्रसन्न हुए। दोनों राजकुमारों को दिव्य गुणों से भूषित पाया। सृष्टि-कर्त्ता ने उन्हें सुन्दरता भी भरपूर दी थी। देखते जी नहीं भरता।

प्यारे मित्र ! बहुत देर तक—राजा जनक महर्षि विश्वामित्र से बातें करते रहे। फिर उन्हें प्रणाम कर विदा हुए। अपने महल लौटे। विश्वामित्र और मित्र-पुत्रों के सुख-सुविधा का ध्यान रखते रहे।

प्यारे मित्र ! राम-लक्ष्मण मुर्गा बोलते-पहर-भर रात रहते ही विछावन से उठ जाते। पहले लक्ष्मण उठते तब गुरु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

विश्वामित्र के उठने के पहले ही राम उठते। शौचादि कर नहाते। सन्ध्या वंदना करते। गुरु विश्वामित्र के चरण छू प्रणाम करते। विश्वामित्र जी प्रसन्न हो सस्नेह आशीर्वाद देते। जो आज्ञा होती करते।

प्यारे मित्र ! हमें भी राम-लक्ष्मण के साथ मुर्गा बोलते ही उठना होगा। उनके साथ सब कुछ करना होगा। आलस में विस्तर पर पड़े न रहना होगा। तभी उनके साथ रह पाएंगे।

आइए—रामचरित-मानस की सम्बन्धित कुछ पंक्तियाँ भी गाते चलें :—

दो०—उठे लखनु निसि विगत सुनि, अरुन सिखा धुनि कान।
गुरतें पहिलेहिं जगत पति, जागे रामु सुजान॥ २२६॥

चौ०—सकल सौच करि जाइ नहाए। नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए।
समय जानि गुरु आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई॥

प्यारे मित्र ! अब विदा लेता हूँ।

आपकी प्रेरणा से, आपके बार-बार कहने पर राम-कथा की चर्चा में लग सका हूँ—इसके लिए मैं आपको जितनी बार भी धन्यवाद दूँ कम ही है। मेरे अध्यात्म-पथ के गुरु आपको बार-बार अनेक बार नमस्कार है। भगवान् आपको सदा स्वस्थ सदा प्रसन्न रखें—वस, यही हमारी एक मात्र कामना है। यही हमारी आपके लिए सद्भावनाएँ हैं।

अगले पत्र में धनुष-भङ्ग की चर्चा होगी।

पुन: सादर प्रणाम !

आपका आत्मरूप

गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

धनुष-भंग

जमशेदपुर
२०-१०-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम !

अगले दिन प्रातःकाल ही राजा जनक ने महर्षि विश्वामित्र को राम-लक्ष्मण के साथ बुला भेजा। वे तुरन्त उनकी राज-सभा गए। राजा जनक सादर सत्कार कर बोले,—"मुनिवर! मुझे सेवा के लिए आज्ञा दीजिए।"

तब विश्वामित्र जी बोले,—"राजन्! राम-लक्ष्मण दिव्य धनुष देखना चाहते हैं। इन्हें धनुष दिखलाइए। धनुष देखना-भर चाहते हैं। देखकर चले जाएंगे।"

प्यारे मित्र! तब राजा जनक बोले,—"महर्षे! जो आज्ञा! अभी धनुष मँगवाता हूँ। धनुष का वृतान्त भी सुनाता हूँ :—

दिव्य धनुष को विश्वकर्मा ने बनाया था। यह भगवान शिव को मिला था। इसीसे उन्होंने त्रिपुरासुर का वध किया था। शिव ने इसे देवताओं को दिया और कालान्तर में देवताओं ने हमारे पूर्वज देवरात को धरोहर-रूप दिया। वही धनुष तब से मेरे कुल में पूजित है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

मुनिवर ! मेरी पुत्री सीता ज़ब सयानी हुई; तब मुझे उसके व्याह की चिन्ता हुई। सोचा सीता का व्याह किसी योग्य महापुरुष से ही करूँ। फिर वर के पराक्रम की परीक्षा के लिए मैंने प्रण किया—कि जो कोई दिव्य धनुष की प्रत्यश्चा चढ़ा सकेगा—उसी के साथ सीता व्याही जाएँगी।

मेरे प्रण को सुन कर सीता को पाने के लिए राजे महाराजे आदि आए पर धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा न सके। इससे बेटी सीता का व्याह अब तक न हो सका।

महर्षे ! यदि राम धनुष की प्रत्यश्चा चढ़ा देंगे–तो मैं अपनी पुत्री सीता को उनके साथ व्याह दूँगा।"

तब विश्वामित्र जी बोले,—"राजन ! वह धनुष राम को दिखलाइए।"

प्यारे मित्र ! राजा जनक की आज्ञा से मंत्रिगण तुरंत गए। पुष्पमाला से शोभित वह दिव्य धनुष लोहे की बड़ी पेटी में रखा गया था, जिसमें आठ पहिए लगे ये। मंत्रिगण कई लोगों से ठेलवा कर उसे लिवा लाए।

राजा जनक विश्वामित्र से बोले,—महर्षे ! वह धनुष जिस पर बड़े-बड़े पराक्रमी राजा तथा समस्त देवता, असुर, राक्षस, गंधर्व, यक्ष, किन्नर और नाग भी प्रत्यश्चा न चढ़ा सके हैं आ गया है। अब राजकुमार उसे देखें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्यारे मित्र ! तब विश्वामित्र जी ने राम को धनुष देखने की आज्ञा दी। राम ने पेटी का ढक्कन उठा कर, धनुष देखा। फिर बोले,—"अच्छा ! अब मैं इस पर प्रत्यश्चा चढ़ाने का प्रयास करता हूँ।"

यह सुन कर राजा जनक और विश्वामित्र जी एक स्वर से बोल उठे,—"ठीक है राम ! तू ऐसा ही करो।"

प्यारे मित्र ! महावली राम ने धनुष को बीच से पकड़ कर सहज में उठा लिया। और सहज में ही प्रत्यश्चा चढ़ा दी। हजारों की भीड़ कुतूहलवश देखती रही। फिर ज्योंही प्रत्यश्चा को कान तक खींचा—धनुष बीच से ही टूट गया। टूटने से बिजली कड़कने जैसी भारी ध्वनि हुई।

राम-विवाह

प्रत्यश्चा चढ़ाने तथा धनुष-भङ्ग से राजा जनक को राम के पराक्रम का पता चल गया। वे बोले,—महर्षे ! राम ने मेरी प्रतिज्ञा पूरी की अब सीता राम से व्याही जायगी। श्रीमान् की आज्ञा मिलने से मैं तुरन्त अपने मन्त्रियों को राजा दशरथ को शुभ समाचार सुनाने तथा बुलाने को भेजना चाहता हूँ।

प्यारे मित्र ! विश्वामित्र ने राजा दशरथ को शुभ समाचार सुनाने तथा बुलाने की अनुमति दे दी। फिर तो राजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

जनक ने मंत्रियों को राजा दशरथ के नाम से एक पत्र देकर अयोध्यापुरी भेजा। मंत्रीगण रथ पर चल पड़े। रास्ते में तीन रात बिताकर अयोध्यापुरी पहुँचे। राजा दशरथ से मिले। शुभ संदेसा सुनाया। राजा दशरथ बहुत प्रसन्न हुए। राम के पराक्रम से आगामी ब्याह की प्रसन्नता और हुई। रानियों और मंत्रियों से परामर्श किया। दूसरे ही दिन, बारात सजा कर जनकपुर के लिये चल पड़े। बरात के पीछे-पीछे चतुरंगिणी सेना चली। चार दिनों में रास्ता तै कर जनकपुर पहुँचे।

आते ही राजा जनक अपने पुरोहितादि के साथ आगे बढ़कर मिले। राजा दशरथ और बाराती के भरपूर सत्कार किए। फिर राजा दशरथ से विनीत भाव से बोले,—"महाराज ! मेरे यज्ञ समाप्ति के बाद, कल ही विवाह सम्पन्न कराया जाय !" राजा दशरथ बोले,—"धर्मज्ञ ! दान तो दान देने वाले के अधीन है। आप जैसा चाहेंगे—वैसा ही होगा।" प्यारे मित्र ! यह सुनकर राजा जनक बहुत प्रसन्न हुए।

प्यारे मित्र ! बारात जनवासे ठहरी। राजा जनक विवाह की तैयारी में लगे। उस समय उनके भाई कुशध्वज साङ्काश्यापुरी में थे। उन्हें बुलाने के लिये रथ पर दूत भेजा गया। दूसरे दिन राजा जनक ने यज्ञ समाप्त किया। शुभ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्यारे मित्र ! तब विश्वामित्र जी ने राम को धनुष देखने की आज्ञा दी । राम ने पेटी का ढक्कन उठा कर, धनुष देखा । फिर बोले,—"अच्छा ! अब मैं इस पर प्रत्यञ्चा चढ़ाने का प्रयास करता हूँ ।"

यह सुन कर राजा जनक और विश्वामित्र जी एक स्वर से बोल उठे,—"ठीक है राम ! तू ऐसा ही करो ।"

प्यारे मित्र ! महावली राम ने धनुष को बीच से पकड़ कर सहज में उठा लिया । और सहज में ही प्रत्यञ्चा चढ़ा दी । हजारों की भीड़ कुतूहलवश देखती रही । फिर ज्योंही प्रत्यञ्चा को कान तक खींचा—धनुष बीच से ही टूट गया । टूटने से बिजली कड़कने जैसी भारी ध्वनि हुई ।

राम-विवाह

प्रत्यञ्चा चढ़ाने तथा धनुष-भङ्ग से राजा जनक को राम के पराक्रम का पता चल गया । वे बोले,—महर्षे ! राम ने मेरी प्रतिज्ञा पूरी की अब सीता राम से व्याही जायगी । श्रीमान् की आज्ञा मिलने से मैं तुरन्त अपने मन्त्रियों को राजा दशरथ को शुभ समाचार सुनाने तथा बुलाने को भेजना चाहता हूँ ।

प्यारे मित्र ! विश्वामित्र ने राजा दशरथ को शुभ समाचार सुनाने तथा बुलाने की अनुमति दे दी । फिर तो राजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जनक ने मंत्रियों को राजा दशरथ के नाम से एक पत्र देकर अयोध्यापुरी भेजा। मंत्रीगण रथ पर चल पड़े। रास्ते में तीन रात बिताकर अयोध्यापुरी पहुँचे। राजा दशरथ से मिले। शुभ संदेसा सुनाया। राजा दशरथ बहुत प्रसन्न हुए। राम के पराक्रम से आगामी ब्याह की प्रसन्नता और हुई। रानियों और मंत्रियों से परामर्श किया। दूसरे ही दिन, बारात सजा कर जनकपुर के लिये चल पड़े। बरात के पीछे-पीछे चतुरंगिणी सेना चली। चार दिनों में रास्ता तै कर जनकपुर पहुँचे।

आते ही राजा जनक अपने पुरोहितादि के साथ आगे बढ़कर मिले। राजा दशरथ और बाराती के भरपूर सत्कार किए। फिर राजा दशरथ से विनीत भाव से बोले,—"महाराज ! मेरे यज्ञ समाप्ति के बाद, कल ही विवाह सम्पन्न कराया जाय !" राजा दशरथ बोले,—"धर्मज्ञ ! दान तो दान देने वाले के अधीन है। आप जैसा चाहेंगे—वैसा ही होगा।" प्यारे मित्र ! यह सुनकर राजा जनक बहुत प्रसन्न हुए।

प्यारे मित्र ! बारात जनवासे ठहरी। राजा जनक विवाह की तैयारी में लगे। उस समय उनके भाई कुशध्वज साङ्काश्यापुरी में थे। उन्हें बुलाने के लिये रथ पर दूत भेजा गया। दूसरे दिन राजा जनक ने यज्ञ समाप्त किया। शुभ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाचार सुनते ही, कुशध्वज भी जनकपुर आ गए। बड़े भाई राजा जनक से मिले। वार्त्तालाप किए। तदुपरान्त राजा जनक ने अपने मंत्री सुदामा को राजा दशरथ को राजकुमारों, मंत्रियों व पुरोहितों सहित बुलाने को भेजा। मंत्रिवर सुदामा उन्हें जनवासे से विवाह-मंडप में बुलवा लाये।

प्यारे मित्र! अब विवाह का शुभ कार्य शुरू हुआ। सर्व प्रथम वशिष्ठ जी ने राजा दशरथ की गोत्रावली विस्तार में सुनायी और बोले, महाराज, राजा दशरथ—अपने पुत्र राम और लक्ष्मण के लिए, आप के दोनों पुत्रियों को माँगते हैं। आप उन्हें दीजिए।

फिर राजा जनक ने अपनी गोत्रावली स्वयम् सुनाई, और पुत्री सीता को रामचन्द्र के लिए और उर्मिला को लक्ष्मण के लिए देने को कहा। विश्वामित्र जी ने इसके लिए उनकी सराहना की और वशिष्ठ जी की सम्मति से राजा जनक से बोले,—"राजन! अपने भाई कुशध्वज की दोनों पुत्रियों को भी राजा दशरथ के सुपुत्र भरत और शत्रुघ्न के लिए दीजिए।" राजा जनक सहर्ष तैयार हो गए। तीसरे दिन शुभ मुहूर्त्त में विवाह सम्पन्न होना निश्चित हुआ। राजा दशरथ अपने लोगों के साथ जनवासे गए। और विवाह के पहले के शुभ कार्य के अनुष्ठान में लगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्यारे मित्र ! इसी बीच भरत के मामा युधाजित जी केकय देश से आए और राजा दशरथ से बोले,—"राजन ! भरत को उनके नाना देखना चाहते हैं। मैं लेने के लिये अयोध्या गया था। वहाँ मालूम हुआ कि राजकुमारों के विवाह के लिए आप जनकपुर गए हैं। तब मैं यहाँ आया हूँ। मेरे पिता भरत को देखने को बहुत लालायित हैं।"

प्यारे मित्र ! राजा दशरथ ने अपने साले-युधाजित जी का सादर सत्कार किया। फिर सबों ने रात्रि में विश्राम किया।

प्यारे मित्र ! दूसरे दिन, राजा दशरथ राजकुमारों और पुरोहितों के साथ विवाह मंडप में पधारे। राजा जनक चारों कन्याओं के साथ विवाह के लिए मंडप में पहले से ही तैयार बैठे थे। चारों कन्यायें सुशोभित हो रही थीं। सब को राजा जनक जी मंडप में सादर बैठाए। फिर राम को सीता का, लक्ष्मण को उर्मिला का भरत को माण्डवी, का शत्रुघ्न को श्रुतिकीर्ति का पाणि-ग्रहण करने को कहा। चारों ने उनके हाथ अपने हाथ में लिया। विधिवत् विवाह हुआ। फिर चारों राजकुमार कन्याओं के साथ जनवासे लौटे।

विवाह के दूसरे दिन विश्वामित्र जी राजा दशरथ और राजा जनक से विदा लेकर, तथा वर-वधू को आशीर्वाद देकर हिमालय पर तप करने चले गये। गये सो गये-लौट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कर फिर न आए। आगे उनके दर्शन न होंगे। प्यारे मित्र ! राजा दशरथ भी राजा जनक से विदा लेकर, वाराती, बहुओं व दान-दहेज के साथ अयोध्या के लिए चल पड़े।

प्यारे मित्र ! विश्वामित्र और राम-लक्ष्मण के पीछे-पीछे हम दोनों जनकपुर आए थे। विश्वामित्र हिमालय पर गए। हम दोनों कहाँ जायँ ! मित्र ! लग जायँ वाराती के साथ। चल-चलें अयोध्यापुरी ! सो सब अगले पत्र में। अब विदा दीजिए।

पुनः प्रणाम !

आपका आत्मरूप

गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

परशुराम-राम-संवाद

जमशेदपुर
२१-१०-६८

प्यारे मित्र !

सादर प्रणाम !

प्यारे मित्र ! पिछले पत्र में राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न—चारों भाइयों के शुभ विवाह के बाद, बारात जनकपुर से चल पड़ती है। रास्ते में भारी अपशकुन होने लगता है। राजा दशरथ अमंगल की आशंका से घबराते हैं। इतने में परशुरामजी हाथ में धनुष लिए और कंधे पर फरसा लटकाए सामने आ जाते हैं। राजा दशरथ, वशिष्ठ आदि ऋषि उनका उचित सत्कार करते हैं। परशुराम जी राम से बोल उठते हैं—"तेरे द्वारा शिव-धनुष भंजन की खबर मुझे मिली है। तेरे पराक्रम को मैं जान गया हूँ। राम ! विश्वकर्मा ने दो दिव्य धनुष बनाए थे। एक देवताओं ने शिव को दिया था, जिससे उन्होंने त्रिपुरासुर को मारा था। शिव ने उस धनुष को राजा जनक के पूर्वज देवरात को दिया था। उसे ही तूने तोड़ डाला है। दूसरे धनुष को देवताओं ने विष्णु को दिया था। बाद में विष्णु ने उस धनुष को मेरे दादा—ऋचीक को दिया और उन्होंने अपने पुत्र—मेरे पिता जमदग्नि को दिया। मेरे पिता ने बाद में मुझे दिया। जब मेरे पिता तप कर रहे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

थे--क्षत्रिय राजा सहस्त्र वाहु ने उन्हें बड़ी निष्ठुरता से मार डाला। मुझ में बदले की भावना जाग उठी और जैसे-जैसे क्षत्री उत्पन्न होते गए--मैं उन्हें मारता गया। समस्त पृथ्वी पर अपना अधिकार जमाया। बाद में मेरा क्रोध शाँत हुआ। बदला लेने की भावना जाती रही।

तब मैंने पृथ्वी के राज्य को महात्मा कश्यप को दे दिया और स्वयम् महेन्द्रचल पर्वत पर जा तप करने लगा। तेरे द्वारा शिव-धनुष भंग का समाचार पा कर आया हूँ।

विष्णु का धनुष मेरे पास है। इसे लो और इसकी प्रत्यंचा चढ़ा कर, वाण संधानो। ऐसा न कर सकोगे, तो तेरी परीक्षा मैं तेरे साथ द्वन्द-युद्ध कर लूँगा।

प्यारे मित्र! राम ने विष्णु का धनुष ले लिया और सहज में प्रत्यञ्चा चढ़ा दिया। फिर क्षण में वाण भी संधाना।

इतने से परशुराम को विश्वास हो गया कि राम भगवान के अवतार ही हैं। वे राम की वंदना कर लौटे गए। फिर बाराती आगे बढ़े।

राजा दशरथ राम के पराक्रम को देख कर बहुत प्रसन्न हुए। परशुराम के चले जाने से उन्हें अत्यधिक प्रसन्नता हुई। सोचे--बला टली। सेना को सज-धज कर आगे बढ़ने की तुरंत आज्ञा दी। पताका फहराते सेना बढ़ चली। खुशी-खुशी वारात अयोध्या लौटी। अयोध्यापुरी भर में बिजुली की

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नाईं खबर पहुँच गई। स्त्रियाँ मंगल गान करने लगीं। रानियाँ परछन कर दुलहे-दुलहिनों को अन्तःपुर ले गईं। आज उनकी खुशी का वारा-पार नहीं था। वे फूली न समा रही थीं।

प्यारे मित्र! फिर चारों बहुओं ने सासों तथा बूढ़ी औरतों को सादर प्रणाम किए। सबों ने स्नेह भरी वाणी में आशिष दीं। सासों ने बहुओं को उत्तम रेशमी कपड़े और भूषण पहनाएँ। फिर चारों अपने-अपने पतियों के राज-भवन में गईं और उनके साथ सुख से निवास करने लगीं।

भरत जी का ननिहाल-प्रस्थान

प्यारे मित्र! भरत के मामा युधाजित, भरत को अपने घर ले जाने के लिए, अयोध्या होते जनकपुर पहुँचे थे। वहाँ से बाराती के साथ अयोध्या लौटे थे। अभी-तक वहीं रुके थे। बिना भरत को लिए, लौटने को न थे।

एक दिन, राजा दशरथ जी भरत को बुला कर बोले,—"तेरे ये मामा, युधाजित तुझे अपने घर ले जाने के लिए आए हैं। कहते हैं–तेरे नाना तुझे देखना चाहते हैं।"

प्यारे मित्र! इतना सुनते ही भरत जी, भाई शत्रुघ्न के साथ ननिहाल जाने को तैयार हो गए। माता-पिता को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

प्रणाम कर, मामा युधाजित के साथ ननिहाल के लिए चल पड़े।

प्यारे मित्र ! इधर राम-लक्ष्मण माता-पिता तथा गुरुजनों की आज्ञा सदा पालन करते। उनकी सेवा करते। खुशी-खुशी रहते। अपने मधुर कार्य-कलाओं से पुरवासियों को खुश रखते। नियमित जीवन बिताते। समय पर सोते। पहर भर रात रहते उठते। नित्य कृत समाप्त कर गायत्री मंत्र का जाप करते। नित्य-प्रति माता-पिता व गुरुजनों को प्रणाम करते। अपने सुन्दर कार्य-कलाओं से सब का मन मोहे रहते। उन्हें जन परिजन, सकल पुरवासी खूब प्यार करते।

राम-सीता में प्रीति अपार रहती। सीता शील-स्वभाव और सच्ची प्रीति से राम को मोहे रहतीं। बिना कहे ही उनके मन की बात भांप जातीं और उसके अनुकूल कार्य करतीं। सास और श्वसुर के मनोनुकूल काज करतीं। उनका आदर करतीं। बेटी की तरह रहतीं। नित्य उठ उन्हें सादर प्रणाम करतीं। जन-परिजन के सुख सुविधे का ख्याल रखतीं। सब से मधुर वाणी बोलतीं। पति हित पूजा-पाठ, व्रत, उपवास करतीं।

प्यारे मित्र! सुख के दिन बीतते देर नहीं लगती। राम-सीता को सुख-सागर में गोते लगाते—कई वर्ष बीत चले।

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

प्यारे मित्र ! बाल काण्ड समाप्त हुआ। सुखद बचपन का अन्त हुआ। महर्षि विश्वामित्र ने तो, जनकपुर में ही साथ छोड़ दिया। गए महेन्द्रचल पर तप करने। गए सो गए। शेष रामायण कथा में लौट कर न आए। मित्र ! बाल काण्ड के वही कर्ण-धार थे। परशुराम जी भी आए व गए। गए सो गए। फिर लौट न आएँगे।

अगले पत्र में, अयोध्या काण्ड की चर्चा करनी है। जी दहलता है। कितना अच्छा होता कि राम-कथा यहीं रुकी रही होती। फिर राम-लक्ष्मण-सीता को वन जाने की नौवत न आई होती। न सीता-हरण होता।

प्यारे मित्र ! विधि के विधान को कौन पलट सकता ! इन हृदय-विदारक घटनाओं की चर्चा भी करनी ही पड़ेगी।

प्यारे मित्र ! सोचने-भर से ही हृदय में कम्पन हो आता है। ये आँखें, भला राम-सीता-लक्ष्मण को वन-वन भटकते कैसे देख सकेंगी ! माता सीता को लंका में परवश कैसे निरख पाएँगी !! हृदय उनका दारुण दुःख कैसे सह सकेगा !!! मित्र ! अवश्य ही विहर जाएगा।

प्यारे मित्र ! आँखें आसुओं से भर आई हैं। लिखते अब नहीं बनता। अब विदा लेता हूँ।

बोलिए--सीता मैया की जय ! सियावर राम की जय !! वीरवर हनुमान की जय !!!

बोलिये—सब संतन की जय !

आपका आत्मरूप

गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

अयोध्या काण्ड

राम के राज्याभिषेक की तैयारी

जमशेदपुर
२१-१०-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम !

आज दिन का यह दूसरा पत्र है। दोनों एक साथ मिलेंगे।

प्यारे मित्र ! सुख के दिन बीतते देर नहीं लगती। राम-सीता को साथ-साथ सुख से रहते ; देखते-देखते बारह वर्ष बीत गए। उनकी प्रीति दिन पर दिन बढ़ती ही गई। दोनों—एक दूसरे के हृदय के भाव को बिना बताए ही जान जाते और बिना बोले ही वैसा ही करते। सीता राम की अनुगामिनी बन कर रहतीं। सभी कार्य उनके मनोनुकूल स्वत: करतीं। राम भी प्यारी सीता के मन के भाव को परखते रहते—और बिना उनके कुछ कहे ही उनकी हर इच्छा पूरी करते। पति रूप में प्यार करते तो पिता रूप में सीता की सुख-सुविधे का ख्याल रखते। पुत्रीवत् पालते।

प्यारे मित्र ! रूप और गुण से सिंचित प्रेम-पौधा ही साश्वत रहता है। सीता-राम जैसे रूपवान थे वैसे गुणी भी थे। दोनों एक दूसरे के रूप गुण पर मुग्ध रहा करते। कभी भी प्रेम में ढिलाई न आने देते। एक-सा बनाए रखते।

प्यारे मित्र ! वाल्मीकि ऋषि, वाल्मीकीय-रामायण में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राम के गुणों का बखान करते अघाते नहीं। गुणों की चर्चा भांति-भांति से अनेक स्थलों पर करते हैं। कहते हैं :—

दशरथ-नन्दन राम—रूपवान थे। वीर्यवान थे। बुद्धिमान थे। विद्वान थे। सज्जन, अदीन, स्मृतिवान और प्रतिभावान थे। संयमी और जितेन्द्रिय थे। सदा सत्य बोलने वाले, मृदुभाषी सहृदय व्यक्ति थे। वृद्धों के पूजक व गुरुजनों के परम भक्त थे। दीनों पर दयालु, प्रजा को प्यार करने वाले थे। युक्ति संगत बात बोलने वाले व देश-काल को जानने वाले थे। साम वेद के ज्ञाता थे। रण कौशल में प्रवीण थे। लौकिक आचार-विचार में निपुण थे। अतीव विनीत थे। हर्ष शोक से रहित थे। ग्रहण और त्याग के रहस्य के मर्मज्ञ थे। आय-व्यय, लाभादि विद्या के भी ज्ञाता थे। सदा सतर्क रहने वाले निरालसी थे। हाथी घोड़ों की सवारी में कुशल थे। श्रेष्ठ धनुर्वेद ज्ञाता थे।

प्यारे मित्र ! राम सभी अच्छे गुणों से भूषित थे। उनके गुण गिनाते जी नहीं भरता। गुणों की गिनती पूरी भी न हो पाती। तभी तो राम युग-युग से पूजित होते आये हैं। अपने निर्मल चरित्र से लोगों को युग-युग से दिव्य जीवन के मार्ग दिखलाते आए हैं; और दिखलाते रहेंगे।

बोलिए—राजा राम की जय !

अब आइए विषय प्रसंग पर—

प्यारे मित्र ! अब तक रामचन्द्र जी प्रजा के सम्पर्क में आ चुके थे। प्रजा के प्यारे बन चुके थे। प्रजा उन्हें राजा देखने के लिए, लालायित हो गई थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

ऐसे तो, राजा दशरथ के चारों पुत्र प्यारे थे। किन्तु अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण राम विशेष प्रिय हो गए थे। राजा दशरथ वृद्ध हो गए थे। देह थक चुकी थी। राम को राजसिंहासन देकर उनकी इच्छा वन जाने की हुई। वानप्रस्थी बनने की चाह जागी। तदनुसार, उन्होंने एक सभा बुलाई। और भरी सभा में अपनी इच्छा प्रकट की।

राजा दशरथ बोले,—"गुरुजनो, पुरवासियो व उपस्थित नरेशो!—अब तक मुझसे जहाँ-तक बन पड़ा—प्रजा का पालन किया राज-धर्म निवाहा। अब मैं वृद्ध हुआ। देह थक चली। सौभाग्य से मैं अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को राजा के सभी श्रेष्ठ गुणों से भूषित पाता हूँ। उनका राज्याभिषेक कर, राज्य का भार उन पर सौंप देना चाहता हूँ। आप-सब अपनी-अपनी राय प्रकट करें। मेरे विचार–अनुचित लगें तो-सो भी कहें।"

प्यारे मित्र! सभा मंडली में प्रसन्नता की लहर-सी दौड़ गई। सबों ने राजा के विचार का अनुमोदन किया। राम के राज्याभिषेक का समर्थन सब ने एकमत से किया। साथ-साथ राम के गुणों का भी बखान किया। सुनकर राजा दशरथ बहुत प्रसन्न हुए। तुरंत गुरु वशिष्ठ से राज्याभिषेक के लिए शुभ मुहूर्त्त पूछा।

प्यारे मित्र! गुरु वशिष्ठ लगन विचार कर बोले,—

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

"राजन ! राज्याभिषेक के लिए कल ही उत्तम मुहूर्त्त है।"

फिर तो दूसरे ही दिन राम का राज्याभिषेक कर देने का निश्चय हुआ।

राजा दशरथ ने तब मंत्री सुमंत को राम को बुलाने भेजा। सुमंत्र तुरंत रथ पर, सवार हो, राम के भवन गए। राम को बुला लाए। रथ से उतर कर राम ने राजा दशरथ को दोनों पैर छू कर प्रणाम किया। राजा दशरथ ने स्नेहवश उन्हें छाती से लगा लिया। फिर स्नेह भरे शब्दों में बोले,—"प्रिय राम ! तुम सर्वगुण सम्पन्न मेरे ज्येष्ठ पुत्र हो। तू ने अपने अच्छे गुणों से प्रजा को प्रसन्न कर लिया है। कल ही तू पुष्य नक्षत्र में राज-भार ग्रहण करो और विनयी, जितेन्द्रिय हो, तथा काम क्रोध से उत्पन्न व्यसनों को त्याग कर, प्रजा का पालन करो। परोक्ष में गुप्तचरों द्वारा किसी अभियोग के वारे में मालूम होने पर भी, प्रत्यक्ष रूप में प्रमाण के आधार पर ही निर्णय देना। प्रजा का हित करते हुए, कोषागार और धनागार में धन संचय करना। तू नियमित रूप से कार्यकारी बनना।"

इतना सुनते ही, राम के कुछ शुभकाँक्षी मित्र, रानी कौशल्या के पास दौड़े गए। उन्हें यह शुभ समाचार सुनाया। वे बहुत प्रसन्न हुईं। खुशी में गौ आदि दान करने लगीं। राजा दशरथ ने राम से राज्याभिषेक के अवसर पर व्रत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

रखने को कहा। उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर, राम ने उन्हें सादर प्रणाम किया। उनकी आशिष और सभासदों का अभिवादन ले कर राम अपने भवन को चल पड़े। पुरवासी भी अपने-अपने घर पधारे।

पुरवासियों के चले जाने पर, राजा दशरथ ने मंत्रियों से मंत्रणा की और कहा,—'कल ही पुष्य नक्षत्र में राम का राज्याभिषेक हो जाय।"

प्यारे मित्र! तब राजा दशरथ अन्तःपुर गए। वहाँ राम को बुलाने के लिए सूत को भेजा। सूत राम के भवन गया। उन्हें बुला लाया। राम ने पैर छू कर प्रणाम किया। राजा दशरथ ने राम को गले लगा लिया। फिर स्नेह से पास बैठा कर बोले,—"प्रिय राम! मैं अब वृद्ध हो गया हूँ। अपनी लम्बी आयु में मन चाहा सुख भोगा। शक्ति भर प्रजा का पालन किया। दान-पुण्य यज्ञादि शुभ कर्म किए। जीवन के समस्त्त सुख भोगे। मैं देवता, ऋषि, पितर और ब्राह्मणादि-ऋणों से उऋण हुआ। देव-ऋणादि से मुक्त हुआ। तुम-सा सुयोग्य पुत्र पा कर मैं धन्य-धन्य हो गया। तुम्हारा राज्याभिषेक कर देना ही एक मात्र कर्त्तव्य शेष रह गया है। मैं चाहता हूँ; इस शुभ काम को भी कल ही कर डालूं। राम! भारी अपशकुन हो रहे हैं। ज्योतिषियों का कहना है कि—मेरे ऊपर सूर्य, मंगल और राहु का प्रकोप है। जिससे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भारी अनर्थ की आशंका है। इससे मेरी मृत्यु तक हो सकती है।

भरत ननिहाल में है। अच्छा हो कि उनके आने के पहले ही तेरा राज्याभिषेक हो जाय। ऐसे तो भरत भी तेरा प्रेमी और धर्मात्मा है। पर कभी-कभी सज्जनों का भी चित चंचल हो जाता है। अतएव कल ही तेरा राज्याभिषेक हो जाय। इसमें जरा भी विलम्ब न हो।

तू अभी से—वधू सहित उपवास करो। कुश की शय्या पर सोओ। आज तेरी रक्षा तेरे सुहृद मिल कर करें।

प्यारे मित्र! तब रामचन्द्र जी पिता को प्रणाम कर, अपने महल गए। वहाँ सीता को न पाया। तब माता कौशल्या के पास पहुँचे। सीता वहाँ पहले से ही बुला ली गई थीं। सुमित्रा और लक्ष्मण भी पहुँचे हुए थे। माता कौशल्या पुत्र के कल्याण के लिए ध्यान में लगी थीं। राम ने उन्हें प्रणाम किया—और कल होने वाले राज्याभिषेक की सूचना दी। सूचना तो उन्हें पहले ही मिल चुकी थी। राम बोले,—"माता! पिता जी की आज्ञा है कि सीता भी मेरे साथ उपवास करें। राज्याभिषेक के लिए जो-जो धार्मिक अनुष्ठान होने चाहिए, सभी हम दोनों से कराइए।"

प्यारे मित्र! माता कौशल्या पुत्र के राज्याभिषेक की खबर से, गद्गद् हो गईं। उनकी आँखें मंगल आँसुओं से भर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

आईं। वे स्नेह भरे शब्दों में बोलीं,—"बेटा राम! बहुत दिनों से लगी आस कल पूरी हो रही है। तू राजा बन रहा है। बेटा! चिरञ्जीवी होओ। तेरी राह में विघ्न डालने वाले शत्रुओं का नाश हो। बेटा! तेरा जन्म मंगलमय नक्षत्र में हुआ है। तू ने अपने गुणों से पिता को प्रसन्न कर लिया है। बेटा! विष्णु भगवान से अबतक की की गई मेरी आराधना आज फलवती हुई। इसी के फलस्वरूप आज़ तू इक्ष्वाकु कुल का राज्य पा रहे हो।"

प्यारे मित्र! इसी बीच, राम भाई लक्ष्मण से मुसकराते हुए बोले,—"लक्ष्मण! तू मेरे प्राण प्रिय हो। मेरी दूसरी आत्मा ही हो। जानो—यह राज्य तुझे ही मिल रहा है। तू मन चाहे भोगों को भोगो। तेरे ही लिए, मैं राज्य और इस जीवन की कामना करता हूँ।"

प्रिय मित्र! लक्ष्मण को ऐसा कह; दोनों माताओं—कौशल्या और सुमित्रा को प्रणाम कर, राम सीता के साथ अपने महल गए।

इधर राम को आदेश देने के बाद, राजा दशरथ ने महर्षि वशिष्ठ को बुलवाया। बोले,—"मुनिवर! राम और सीता से उपवास व्रत पालन कराइए।" वशिष्ठ जी बोले,—"बहुत अच्छा।" और राम के महल गए। रामचन्द्र

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

जी झट महल से बाहर आए और महर्षि वशिष्ठ के हाथ पकड़ कर, रथ से उतारा। सादर दण्डवत किया।

महर्षि वशिष्ठ बोले—"प्रिय राम! कल तेरा राज्याभिषेक होगा—इस से तेरे पिता बहुत प्रसन्न हैं। आज की रात तू और वधू सीता दोनों उपवास व्रत करो।" फिर महर्षि वशिष्ठ ने राम सीता को उपवास व्रत की दीक्षा दी। राम ने महर्षि वशिष्ठ की पूजा की। उन्होंने आशीर्वाद दिया और राजा दशरथ के महल लौटे। उन्हें कार्य पूर्त्ति की सूचना दी। तब राजा दशरथ अन्तःपुर गए। रात अधिक हो गयी थी।

प्यारे मित्र! उस समय सारी अयोध्यापुरी हर्षोल्लास में उछल रही थी। घर-घर पताके लगे थे। दीप जल रहे थे। सड़कों पर पानी छींटा जा रहा था। लोग झुण्ड के झुण्ड आना जाना कर रहे थे। राज्याभिषेक महोत्सव देखने के लिए बाहर से भी लोग उमड़ पड़े थे। सारी अयोध्यापुरी जन समूह से भरी जा रही थी। मंगल गानादि से सारी पुरी गूँज उठी थी।

प्यारे मित्र! आज अयोध्या की छटा कुछ और ही थी। लोग फूले न समा रहे थे। लगता था-लोग मंगल-मदिरा पी कर मतवाला हो गए हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

इधर राम ने सीता के साथ उपवास व्रत किया। दोनों कुश शय्या पर भूमि पर सोए। पहर भर रात रहते उठे और प्रातःकाल की सन्ध्या की। अपने सभी नित्य कर्म से निवृत हुए। राज्याभिषेक का समय पहुँचता-देख शीघ्रता से तैयार होने लगे। सीता जी पवित्र सुन्दर सिंगार करने लगीं। दोनों पवित्र मन मोहक लेप लगाए। सुन्दर स्वच्छ वस्त्र पहने।

प्यारे मित्र! आगे की हृदय विदारिणी घटना से दिल दहल रहा है। आइए, खुशी में ही विदा होवें! आगे की दुःखद घटना की चर्चा अगले पत्र में होगी।

सादर प्रणाम!

आपका आतमरूप

गणेश

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

रंग में भंग

जमशेदपुर
२३-१०-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम !

पिछले पत्र में अयोध्यावासी राम का राज्याभिषेक देखने के लिये उतावले हो रहे हैं। पूरी चहल कदमी में रात गई। भोर हुआ। अब क्या था ! बस, चंद घड़ी में पुरवासियों के प्रिय राम युवराज बनने वाले थे। अब तो लोगों को जल्दी-ही-जल्दी हो रही थी।

प्यारे मित्र ! रानी केकई की एक निजी दासी थी। मैके से ही आई थी। विगत रात में ही, उसने महल की ऊँची अटारियों से ही अयोध्या पुरी की सजावट देखी। घर-घर पताका लगे, राजमार्गों पर जगह-जगह झंडा फहराते— देखा। कुतूहलवश, एक दाई से पूछा,—"आखिर अयोध्यावासी कौन-सी खुशी मना रहे हैं ?"

प्यारे मित्र ! दाई सहज भाव में बोली,—"क्या मालूम नहीं है कि कल ही राम का राज्याभिषेक है ! राम युवराज बनने वाले हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

इतना सुनते ही मंथरा जल-भुंज गई। चिन्ता से उसका चेहरा उतर गया। वह विकल मन, केकई के पास गई। केकई ने उसके दुःख का कारण पूछा। पूछते ही मंथरा फफक कर रो पड़ी। केकई की और उत्सुकता बढ़ी। बोली,—"बोलती क्यों नहीं! कौन-सी आपदा तेरे ऊपर आ पड़ी!"

सिसकियाँ भरती मंथरा बोली,—"रानी! कल ही राजा दशरथ राम का राज्याभिषेक कर रहे हैं। आपको पता तक नहीं। राम के राजा बनते ही, भरत का भाग्य फूट जायगा। वे तथा उनके पुत्र-परपौत्र कोई भी राजा न बन सकेंगे। आप रानी न रह सकेंगी। चेरी बन कर रहेंगी। भरत के अहित और आप के भावी दुःख की आशंका से, मैं जली जा रही हूँ। आपका अमंगल देखा नहीं जाता।"

केकई बोलीं,—"मेरे लिए भरत और राम एक से हैं। राम के राजा बनने में मुझे खुशी है। तुझे दुःख क्यों हो रहा है!"

मंथरा बोली,—"रानी! आप भोली-भाली हैं। राजा दशरथ की कुटिल चाल को बूझ नहीं पा रही हैं। देखती नहीं कि ऐसे अवसर पर भरत दूर रखे गए हैं। आप से बातें गुप्त रखी गई हैं।"

प्यारे मित्र! मंथरा के इस प्रकार से बार-बार कहने पर, केकई की मति फिरने लगी। कुछ क्षण सोच में डूबी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

रहीं। उन्हें लगा मंथरा ठीक ही कहती है। वे ठगी जा रही हैं। राम के युवराज होने से उनके प्यारे पुत्र भरत का अहित होने जा रहा है। वे ऐसा होने न देंगी। तमक कर बोलीं,—"मैं ऐसा होने न दूँगी। राम को जीते जी युवराज बनने न दूँगी।" फिर लम्बी साँस लेती सोच में डूब गयीं।

मंथरा बोली,—"रानी! आप चिन्ता न कीजिए। मैं प्राण रहते आप और भरत का अहित होने न दूँगी। भरत को युवराज बनाने की युक्ति मैं बताती हूँ—आप सुनिए।"

प्यारे मित्र! व्यथित केकई से मंथरा कहती गई—"रानी! क्या आपको याद नहीं! देवासुर संग्राम में जब राजा दशरथ इन्द्र को ओर से लड़ने गए थे—तब आप भी उनके साथ गई थीं। छल से असुरों ने जब राजा दशरथ को घायल कर दिया—तब आपने ही उनकी जान बचाई थीं। प्रसन्न होकर, राजा ने आपसे दो वरदान माँगने को कहा था। तब आपने कहा था—पीछे कभी माँग लूँगी। युद्ध-भूमि से लौटने पर, आपने ही मुझसे कहा था। क्या स्वयम् भूल गईं!"

प्यारे मित्र! रानी केकई व्यग्रचित्त सुनती रहीं। मंथरा बोलती गई। बोली,—"रानी! मेरी बात मानिए, तो एक वरदान में राम के बदले भरत का राज्याभिषेक और दूसरे में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राम को चौदह वर्ष का दण्डकारण्य में वास, राजा से तुरन्त माँग लीजिए।"

प्यारे मित्र ! केकई को वरदान की बातें याद आईं। मंथरा की युक्ति भली लगी। उसके मलीन मुख मंडल पर प्रसन्नता की रेखा दौड़ गई। मंथरा की सराहना करती बोलीं,—"ऐसा ही करूँगी।"

प्यारे मित्र ! रानी केकई झट कोप-भवन में गई। भूषण उतार डाले। केश बिखरा लिए। सुन्दर बहुमूल्य कपड़े-उतार डाले। मोटे मलीन वस्त्र पहने। और सिसकियाँ भरती भूमि पर लेट गईं।

उधर राजा दशरथ को राम के राज्याभिषेक की सारी व्यवस्था करते काफी रात हो गई। तब वे रानियों को शुभ समाचार सुनाने रनिवास गए। पहले केकई के ही भवन गए। वहाँ शयनागार में रानी को न पाया। द्वारपाल से मालूम हुआ कि रानी कोप भवन में पड़ी हैं। राजा दशरथ लपक कर कोप भवन गए। वहाँ केकई को खिन्न-चित्त भूमि पर पड़ी देखा। अब तो उनका हृदय व्यथित हो उठा। राजा दशरथ रानी का सिर गोद में लेकर बोले,—"प्राण प्यारी ! अपने दु:ख का कारण बताओ। अगर कोई व्याधि हुई-तो मेरे राज्य में एक से एक वैद्य हैं। अगर तेरा किसी ने अपमान किया हो–तो सो भी बताओ। कहो, किस अभागे

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सर मौत आई। किस राजे को रंक बना दूँ! किस रंक को राजा बना दूँ। तेरी प्रसन्नता के लिए मैं अपना सर्वस्व निछावर कर दूँगा! अपने प्राण दे दूँगा। प्यारी! अपने पुत्र की शपथ खा कर कहता हूँ—कि तेरी प्रसन्नता के लिए मैं सब कुछ करूँगा। प्यारी! अब तू बोलो,—मन की व्यथा खोलो।"

तब केकई बोली,—"देव! न मुझे कोई व्याधि हुई है, न किसी ने मेरा अपमान ही किया है। मैं जो चाहती हूँ, उसे आप से कराना चाहती हूँ। पहले आप करने की प्रतिज्ञा कीजिए—तब कहूँगी।"

प्यारे मित्र! राजा दशरथ प्यारी रानी की बात सुनने के लिए अधीर हो रहे थे। भारी आतुरता से बोले,—"प्राण प्यारी! मैं अपने प्यारे राम की शपथ खाता हूँ कि तेरी हर चाह पूरी करुँगा।"

प्यारे मित्र! तब रानी केकई बोली,—"राजन! देवासुर संग्राम में जब शत्रु आप के प्राण लेने लगे थे—मैंने आप की जान बचाई थी। प्रसन्न हो कर, आप ने मुँह-माँगा दो वरदान दिए थे। उन्हें मैं अभी लेना चाहती हूँ। नाथ! न देने पर मैं अपमानित हो कर जान दे दूँगी। राजन! पहले वरदान में, राम की जगह भरत का राज्याभिषेक कीजिए और दूसरे वरदान में, राम को तपस्वी भेष में चौदह वर्ष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

के लिए आज ही दण्डकारण्य भेजिए। राजन ! अपनी बात सत्य कर अपने कुल की मर्यादा बनाए रखिए।"

प्यारे मित्र ! केकई की बातें राजा दशरथ को तीर की तरह चुभ गईं। वे मर्माहत हो कुछ क्षण के लिए अचेत-सा हो गए। केकई इस हद तक उतर आएगी—इसकी उन्हें कल्पना तक न थी। अपने को सम्भालते हुए बोले,—"रानी मैं तुझ से यह क्या सुन रहा हूँ। राम तो तुझे प्यारे हैं। उनकी तू ने कई बार प्रशंसा की है ! वे तुझे भरत की तरह ही प्यारे हैं। राम ज्येष्ट पुत्र हैं। वे ही मेरे, उतराधिकारी हैं। यह भी जानती हो कि राम मेरे प्राण से प्यारे हैं। उनके वन जाने से मेरी मृत्यु निश्चय है। फिर क्या तू विधवा होना चाहती है ! राम को वन भेजने में प्यारी ! लोग हमें—तुझे क्या कहेंगे। लोक-लाज से भी डरो। प्यारी ! तू और चाहे जो कुछ माँग लो !" राजा कहते-कहते रानी के चरणों पर पड़ गए।

चरण छुड़ा कर, केकई दृढ़ स्वर में बोली,—"राजन ! मेरी दोनों माँगें पूरी कर, अपने वचन रखिए। वचन भङ्ग कर सत्यवादी होने का दावा न कर सकेंगे। मैं आज ही राम को तपस्वी के वेष में वन जाते देखना चाहती हूँ और भरत का राज्याभिषेक। राजन ! मैं अपने विचार पलट नहीं सकती। मेरा यह अन्तिम निर्णय है। वृथा बोलने से कोई लाभ नहीं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

है।" प्यारे मित्र ! इतना कहते-कहते केकई क्रोध में तमतमा उठी।

प्यारे मित्र ! राजा दशरथ भारी विवशता में पड़े। बेचारे केकई के बार-बार पैर पकड़ कर अनुनय-विनय किए। आहें-भरते दया की भीख माँगी। रुँधे कंठ से बोले,—"प्यारी ! मैं भरत का राज्याभिषेक करा देता हूँ। तू राम को वन भेजने का हठ भर छोड़ दो। उसके बदले और जो चाहो-माँग ले। मेरे प्राण बचा ले। सच मानो राम के वन जाते ही मेरे प्राण पखेरू निकल जाएँगे। तू विधवा हो जाएगी। इसका भी विचार करो !"—इतना बोलते-बोलते राजा बेहोश हो गए। उनकी आँखों से अविरल अश्रुधारा बह चली।

परन्तु रानी केकई अपनी दोनों माँगों पर अड़ी ही रही। राजा के मौत की आशंका भी उन्हें डिगा न सकी। बोलीं,—"राजन ! वृथा बोलने से कोई लाभ नहीं। राम को वन भेजिए अथवा वचन-भङ्ग कर नरक-गामी बनिए।"

प्यारे मित्र ! राजा दशरथ को न वचन भङ्ग करते बने न राम को वन भेजते। सारी रात आहें भरते रहे। केकई से रह-रह कर विनती करते रहे। केकई उन्हें फटकारती रहीं। बदन तक परसने न देतीं।

प्यारे मित्र ! अन्त में राजा दशरथ केकई से बोले,—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"अच्छा। राम को बुलाओ ! मरने के पहले उनके दर्शन तो कर लूँ।" इतना कहते-कहते बेहोश हो गए।

प्यारे मित्र ! मानव हृदय भी अजीब अनबूझी पहेली है। केकई को राजा दथरथ प्राणों से प्यारे थे। उनके मन-भावों पर चलती थी। उनकी प्रसन्नता के लिए हर एक कोशिश करती थी। शरीर मात्र दो थे—दोनों के हृदय लगता था—एक था। राजा दशरथ के जरा-सी पीड़े की आशंका से रानी का हृदय व्यथित हो उठता था। वही हृदय—राजा को अचेतावस्था में, आहें भरते देख कर, जरा पसीजता तक नहीं। यही मानव हृदय की विलक्षणता है। मित्र ! इस पर भरोसा किए बिना भी नहीं चलता और करते भी नहीं बनता।

प्यारे मित्र ! आइए, राम वनवास की इस दुःखद घटना को संक्षेप में ही समाप्त करें।

भोर होते ही, गुरु वशिष्ठ और मन्त्रिवर सुमंत राजा दशरथ के महल पधारे। वन्दीगण राजा दशरथ को जगाने लगे। राजा उठे नहीं। इधर राम के राज्याभिषेक के काम में देर होने लगी। गुरु वशिष्ठ और मंत्रिवर सुमंत उकताने लगे। इधर केकई को भी जल्दी ही थी। राम के राज्याभिषेक को तुरंत रोकना था। समय बहुत विकट था। राज्याभिषेक हो जाने पर फिर सुलझाना कठिन था। राम को राजा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दशरथ के वरदान की बात वे शीघ्र सुना देना चाहती थीं। शीघ्रता से सुमंत से बोलीं,—"मंत्रिवर ! महाराजा, राज्याभिषेक के हर्ष से थक कर देर से सोये थे। अभी सोए ही हैं। उन्होंने राम को बुलाने को कहा है। आप शीघ्र राम को बुला लाइए।"

प्यारे मित्र ! राम का राज तिलक देखने के लिए, लोग दूर-दूर से रातों रात अयोध्यापुरी में आ जुटे थे। पुरी लोगों से भर चुकी थी। राज-पथ पर अपार भीड़ थी। लोगों के आने की तांत टूटती न थी। स्त्री-पुरुष, वृद्ध-बालक, जवान-सबके सब राम के राज्याभिषेक देखने के लिए उतावले हो रहे थे। रंग-विरंगे वस्त्र पहने छैल-छबीले मस्ती में झूम रहे थे। गाजे बाजे बज रहे थे। लोगों के भारी कोलाहल से आकाश गूँज उठा था।

प्यारे मित्र ! मंत्रिवर सुमंत भीड़ को पार करते—राम-भवन पहुँचे। वहाँ तो और भीड़। लोग राम के दर्शन के लिए उतावले हो रहे थे। भीड़ को चीरते बड़ी कठिनाई से सुमंत ने राम भवन में प्रवेश किया। देखा—राम सीता राज्याभिषेक के लिए जल्दी-जल्दी तैयार हो रहे हैं।

सुमंत्र ने कहा,—"राजा, राम को देखना चाहते हैं।"

राम तुरंत सुमंत के साथ चल पड़े। भवन से बाहर आते ही, पूरे जोश से लोग उनकी जै-जैकार मनाने लगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लोग उनके दर्शन के लिए टूट पड़े। जै-जैकार की तुमुल ध्वनि से आकाश गूँज उठा। राम अभिवादन करते—भीड़ से ही आगे बढ़े। पिता के पास अन्तःपुर पहुँच। वहाँ देखा कि पिता खिन्न-चित्त अचेत-से पड़े हैं। माता व्यग्र-चित्त पास में बैठी हैं। उन्होंने पिता को पैर छू कर प्रणाम किया। माता केकई को भी प्रणाम किया। राम! कह कर राजा दशरथ ने आँखें मूँद लीं। वे बेहोश हो गए।

राम भारी आतुरता से माता केकई से पूछने लगे,—"माता! आज पिता जी इतना दुःखी क्यों हैं! कोई व्याधि तो न हुई! मुझ से बोलते भी नहीं! मुझ से कोई अपराध तो न हुआ? पिता जो कोपित तो नहीं हो गए हैं?

केकई बोली,—"राम! न महारज को कोई व्याधि हुई है और न किसी पर कोपित ही हैं। महाराज के दुःखी होने का कारण कुछ और है—मुझे दो वरदान देने की प्रतिज्ञा कर, अब गवाँर की तरह पछता रहे हैं। न इनसे वचन भंग करते बनता है—न पालन करते ही। इसी धर्म-संकट में, डूब रहे हैं। राजा के शुभ अशुभ आज्ञा को पालन करने पर, यदि तू उद्यत होओ, तो मैं उनके दिए वरदान की बात कहूँ।"

तब राम बोले,—"माता! मैं पिता की हर आज्ञा का पालन करूँगा। आपने पिता से जो कुछ चाहा है; उसे पूरा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

कर, उनके बचन पूरा करूँगा। आप अपने दोनों वरदानों को स्पष्ट कहिए। मुझसे पिताजी का दुःख देखा नहीं जाता। माता! मेरा हृदय फटा जा रहा है। मैं पिताजी की आज्ञा से आग में कूद सकता हूँ। अपने प्राणों की बाजी लगा कर उनकी हर इच्छा पूरी कर सकता हूँ। अब शीघ्र कहिए। देर न कीजिए।"

तब केकई बोली,—"राम! देवासुर-संग्राम में मैंने महाराज की जान बचाई थी। इससे प्रसन्न होकर, इन्होंने मुझे दो वरदान दिए थे। अभी तक दोनों वरदान धरोहर थे। उन्हें अभी मैंने माँगा है—एक तेरे बदले भरत का राज्याभिषेक, दूसरा–आज ही, तेरा तपस्वी वेष में चौदह वर्ष के लिये दण्डकारण्य में जाना। तदनुसार तुझे अभी वन जाना चाहिए और तेरे लिए जो अभिषेक की तैयारी हुई है; उसी में भरत का राजतिलक होना चाहिए।"

प्यारे मित्र! केकई के इतने कठोर बचन से भी राम का चित्त जरा भी विचलित न हुआ। वे सहज भाव से बोले,—"माता! ऐसा ही होगा। मैं तपस्वी वेष में आज ही अभी दण्डकारण्य के लिए चल पड़ता हूँ। सहर्ष जाता हूँ। भरत को ननिहाल से बुलाने के लिए शीघ्र दूत भेजा जाय और आते ही उन्हें अभिषिक्त किया जाय! माता जी! आप पिता जी को समझावें और प्रसन्न करें।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्यारे मित्र ! राम की बातें केकई को बहुत भायीं । वे बोलीं,—"राम ! तू ठीक कहते हो । भरत को बुलाने को शीघ्र दूत भेजा जाना चाहिए और तुझे वन के लिए प्रस्थान करना चाहिए । जब-तक तू वन को नहीं चला जाता तब-तक महाराज अन्न-जल नहीं ग्रहण करेंगे ।"

प्यारे मित्र ! केकई के ये वचन राजा दशरथ के कलेजे में चुभ से गए । वे यकायक बोले,—"धिक्कार है ! ओह ! दारुण कष्ट हुआ ।" इतना कहते-कहते वे पुनः मूर्च्छित हो गिर पड़े । राम ने उन्हें संभाला । उठा कर बैठाया । अब वन जाने के लिए अत्यन्त उतावले हो गए ।

प्यारे मित्र ! केकई के कठोर से कठोर वचन से भी राम जरा भी विचलित न हुए । सहज भाव से माता केकई से बोले, —"माता ! मैं धन को लेकर संसार में जीने की कामना नहीं करता । मैं ऋषियों-सा निर्मल जीवन बिताने की अभिलाषा रखता हूँ । आप विश्वास रखिए—पिता की आज्ञा मैं निश्चय ही पालन करूँगा । अवश्य वन जाऊँगा । पिता जी ने स्वयम् मुझ से कुछ नहीं कहा—फिर भी आपके कहने से ही मैं चौदह वर्ष वन में वास करूँगा । इसे आप हुआ ही जानिए । मैं माता कौशल्या से आज्ञा ले लेता हूँ । सीता को भी समझा लेता हूँ । फिर दण्डक वन के लिए चल पड़ता हूँ । आप ऐसा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

करेंगी—जिसमें भरत प्रजा का पालन और पिता जी की भी सेवा कर सकेंगे।"

प्यारे मित्र ! इतना सुनते-सुनते राजा दशरथ रो पड़े। उनकी आँखों से अविरल अश्रु-धारा बह चलीं। रामचन्द्र जी माता-पिता दोनों के चरण छू कर प्रणाम किए और माता कौशल्या के पास चल पड़े। लक्ष्मण भी आ गए थे। दुःखद समाचार से उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। कोपित भी हो उठे थे। वे भी राम के पीछे-पीछे चले। रामचन्द्र जी राज्याभिषेक के लिए एकत्रित सामग्रियों को न देखते हुए, भीड़ के बीच से माता कौशल्या के महल की ओर बढ़े चले। सारी पृथ्वी का राज्य छोड़कर, जंगल जा रहे थे—पर इसका असर उनके चित्त पर किंचित मात्र भी न था। उनके चेहरे पर विकार का लेश न था।

प्यारे मित्र ! जैसे ही राम अन्तःपुर से बाहर निकले, समस्त दास-दासियाँ फफक कर रो पड़ीं। राम के बन जाने की खबर से उनके हृदय विहर गए। कोलाहल मच गया। खुशी विवाद में एकबारगी परिणत हो गई। मित्र ! इसी का नाम प्रारब्ध है—यही होनी है—जो होकर रहती है।

राम, लक्ष्मण के साथ कौशल्या के महल में पहुँचे। अभी तक माता कौशल्या को राम वनवास का दुःखद समाचार न मिला था। वे भोर से ही पुत्र के मंगल के लिए—पूजा-पाठ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

में लगी थीं। सब कुछ कर-करा कर, मंत्र के साथ अग्नि में घी से होम कर रही थीं। बेटा, अब थोड़ी देर में ही अभिषिक्त हो—युवराज बनेगा—इसकी खुशी में फूले न समा रही थीं। राम को देखते ही मातृ-स्नेह उमड़ पड़ा। वे राम की ओर लपकीं। राम ने दोनों चरण छू प्रणाम किया। माता ने उन्हें प्यार से छाती से लगा लिया। फिर स्नेह भरे शब्दों में बोली,—"बेटा! अभी पिता से राज्याभिषिक्त होगा! तू धर्मात्मा महात्मा और दीर्घजीवी होओ!"

राम बोले,—"माँ! अब मैं ऋषि-मुनियों की तरह जीवन, बसर करने दण्डक-वन जाऊँगा। वहाँ चौदह वर्ष रहूँगा। माँ! तुझे क्या अभी ये सब मालूम नहीं है। मेरी जगह पर पिता जी भरत को राज्याभिषिक्त करेंगे और उनकी आज्ञा से मैं तपस्वी वेष में दण्डक-वन में चौदह वर्ष वास करूँगा।"

प्यारे मित्र! राम से इतना सुनते ही, माता कौशल्या अचेत हो भूमि पर गिर पड़ीं। राम ने उन्हें उठा कर बैठाया। कुछ होश आने पर माता कौशल्या रोती-रोती बोलीं,—"हे राम! यदि तू न हुआ होता–तो, बाँझ होने भर का ही दुःख होता। सन्तान न होने का एक मानसिक क्लेश भर रहता। मेरे शोक और क्लेशों का तो अन्त नहीं। अब-तक मैं सुख की आस लगाए रही। सोचती—अब दुःख दूर हो जायगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तुझ से अलग हो, भला ! मैं किस आस पर जी सकूँगी ! मेरा हृदय फट क्यों नहीं जाता ! यमराज के घर में भी क्या मेरे लिए जगह नहीं !"

प्यारे मित्र ! माता कौशल्या का माता का दिल था। घड़ी में राजा होने वाले पुत्र का वनवास, भला ! मां का हृदय कैसे सह सकता ! माँ तो वात्सल्य की मूर्त्ति ही होती है। कौशल्या जी शोक सागर में डूब गईं। उनके नेत्रों से अविरल अश्रु-धारा बहती रही। रनिवास की दास-दासियाँ चीत्कार कर उठीं। राम फिर भी स्थिर चित्त थे। ऐसे-जैसे कोई अनहोनी बात हुई ही नहीं।

प्यारे मित्र ! राम का बदन सहलाते हुए—माता कौशल्या बोलीं,—"बेटा ! तू बन न जा। धर्म के लिए तू मेरी सेवा कर। माता की सेवा उत्तम धर्म है। कश्यप ने माता की सेवा करने भर से ही तप से पाए जाने वाले स्वर्ग को पा लिया था। तेरे लिए जैसे पिता पूज्य हैं, वैसे ही मैं भी। मैं तुझे वन जाने की आज्ञा नहीं देती हूँ। तुझे वन नहीं जाना होगा। मैं तेरा वियोग न सह सकूँगी। उपवास कर प्राण त्याग दूँगी। इससे तुझे भारी दोष लगेगा।

प्यारे मित्र ! रामचन्द्र जी विनीत भाव से बोले,—माँ ! मैं पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता। मुझे वन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जाना ही होगा। पूर्व काल में भी लोग पिता की आज्ञा पालन करते आए हैं ! माँ ! मुझे जाने से न रोकें।

प्यारे मित्र ! माता कौशल्या बेहोश-सी पड़ी रहीं। कुछ बोली नहीं। राम माता के चरणों में प्रणाम कर बोले,—"माँ ! मुझे जाने की आज्ञा दें। मैं चौदह वर्ष वन में वास कर तुझ से आ मिलूँगा। तू ये अभिषेक की वस्तुएँ रख दे। दुःख को दिल में दबा ले और मुझे वन जाने की आज्ञा दे।"

प्यारे मित्र ! लक्ष्मण से यह दुःखान्त नाटक देखा न गया। वे रोष से भर आए। प्यारे मित्र ! अपना दुःख मनुष्य सह लेता है, किन्तु अपने प्रिय जनों का दुःख असह्य हो जाता है। लक्ष्मण को राम प्राण से भी प्यारे थे। उधर माता कौशल्या भी दुःख से विकल थीं। राम का वनवास उन्हें किसी भी कीमत पर गँवारा नहीं था। पिता की आज्ञा अनुचित लगी। उनका मन शोक और रोष से संतप्त हो उठा। राम उनकी बेकली को समझ कर बोले,—"प्रिय लक्ष्मण ! जिसकी कल्पना तक न की गई हो, वह घट जाय—यही दैव है। दैव अदृश्य-सा रहता हुआ–सिर्फ कर्म फर्ज में ही सहसा आ जाता है–कोई उससे लड़ नहीं सकता। माता केकई तो मुझे शुरू से ही प्यारकरती है। सुबुद्धिवाली नम्र स्वभाव की महिला हैं। दैव के वश हो कर ही, मेरे वन जाने की माँग पिता जी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

से की हैं ! पिता जी भी दैव के वश में ही हैं। मेरे वन जाने में और भरत के राज्याभिषिक्त होने में दैव का ही प्रवल हाथ है। माता केकई या पिता जी किसी का भी कोई दोष नहीं है। प्यारे लक्ष्मण ! तू सात्विक बुद्धि से विचार कर क्रोध का त्याग करो ! शाँत होओ ! जिस उत्साह से मेरे राज्याभिषेक की तैयारी कर रहा था—उसी तरह वन जाने की तैयारी करने में लगो।"

प्यारे मित्र ! आप ने जीवन में देखा होगा; अनुभव किया होगा। प्रायः ऐसी ऐसी घटनाएँ घट जाती हैं—जिसकी पहले से कल्पना तक नहीं रहती। जैसे कोई सड़क पर, जाता हुआ सहसा दुर्घटना ग्रस्त हो घायल हो जाता है। जरा भी पहले से मालूम रहे कि दुर्घटना होने वाली है—तो वह सतर्क हो जाय। मित्र ! यही अदृश्य रूप में सहसा हो जाने वाली होनी, ही दैव है। यह अदृश्य रूप में आती है—इससे कोई लड़ नहीं सकता। इसी लिए कहा गया है कि होनी हो कर रहती है; क्योंकि वह तो होने के बाद ही मालूम होती है। पहले से उसका आभास तक नहीं रहता। राम के वन जाने का जरा भी आभास पहले से माता कौशल्या आदि को मिला होता तो राज्याभिषेक की इतनी तैयारी ही क्यों होती ! प्यारे मित्र ! इसी लिए, दैव प्रवल कहा गया है। कोई अनहोनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बात हो जाने पर, अपने आप को कोसना अथवा दूसरों के माथे दोष मढ़ना वृथा है।

प्यारे मित्र ! माता कौशल्या के लाख रोने विलपने पर भी, राम वन जाने से विमुख न हुए। माता ने देखा—पुत्र पिता की आज्ञा पालन में दृढ़ है। फिर उन्होंने धीरज धारण किया। राम को राज्याभिषेक के लिए लाए गए पवित्र जल में स्नान कराया। बहुत-बहुत भाँति से आशिष दीं। बोलीं,—— "बेटा राम दैव की गति को कोई रोक नहीं सकता। वही तुझे वन जाने को प्रेरित कर रहा है। तो तू जाओ। वन में देवी-देवता तेरी रक्षा करेंगे। सत् पुरुषों का जीवन विताना। लौट कर मुझे साँत्वना देना। जा बेटा, जा तेरा मंगल होगा।"

प्यारे मित्र ! माता कौशल्या को प्रणाम कर राम सीता के महल गए।

प्यारे मित्र ! उपर्युक्त कौशल्या-राम वार्त्ता लिखते समय आँखों से अश्रु-धारा निरन्तर बहती रही है। अन्त में वार्त्ता छोड़नी पड़ी है। पूरा लिख न सका हूँ। जी चाहे तो आप वाल्मीकीय रामायण पढ़ लें। यह बड़ा ही हृदय विदारक प्रसंग है।

अब आगे बढ़ें :—

प्यारे मित्र ! सीता को अभी-तक राम के वनवास की खबर मिली न थी। वे राज्याभिषेक की तैयारी में ही थीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

राम को राजसी-ठाट-बाट-वस्त्र-भूषणादि से रहित महल में आते देखकर सीता काँप उठीं। बोली,—"आर्य! यह क्या हुआ है? आज तो शुभ मुहूर्त्त है। आज की शुभ घड़ी में आप राज्याभिषिक्त हो रहे हैं—इस वेष में क्यों!!"

राम बोले,—"प्यारी! पिता ने मुझे १४ वर्ष का वनवास और भरत को राज्याभिषेक की आज्ञा दी है। मुझे दण्डक-बन में तपस्वी वेष में निवास करना होगा। तपस्वी बन मैं वन जाता हूँ। प्यारी! माता कौशल्या वृद्धा हो गई हैं। मेरे वियोग के दुःख से भी दुःखी हैं। उनकी सेवा करना। उन्हें संभालना। देखना पिता जी को भी कोई कष्ट न होने पावे। तीनों माताओं तथा पिता जी को नित्य प्रणाम करना। भरत शत्रुघ्न पर स्नेह रखना। प्यारी! राजा भरत की हितैषी बन कर, उनकी आज्ञा में रहना। प्यारी! मैं तो बन जाता हूँ। तू ऐसे रहना, जिसमें किसी को बुरा न लगे।"

प्यारे मित्र! सीता प्रकाण्ड विद्वान व तत्वदर्शी राजा जनक की पुत्री थीं। पिता से नीति शास्त्रादि की शिक्षा भली-भाँति पाई हुई थीं। राम की बातें सुनकर, कुछ रोष दिखाते हुए बोलीं,—"प्यारे! क्यों ओछी बातें करते हो। पिता, माता, भाई, पुत्र और पुत्र-वधू अपने-अपने कर्म फल को भोगते हैं—और उसी के अनुसार जीवन-यापन करते हैं। एक पत्नी ही अपने पति के कर्म-फल का अनुकरण करती है। अतएव,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आप के साथ मेरा भी वनवास हुआ है। नाथ ! मैं आपके साथ वन चलूँगी।

स्वामी ! नारी के लिए, पति ही सर्वस्व है। वही एक मात्र आश्रय है। पिता, पुत्र, माता सखियाँ और अपना शरीर भी उसके सहायक नहीं होते। नाथ ! वन-मार्ग में, मैं आप के आगे-आगे रास्ते के कांटे-कुशों को कुचलती—आप के लिए पथ सुगम करती चलूँगी।

हे वीर स्वामी ! आप के कहने पर भी, अयोध्या में न रहने के मेरे हठ पर क्रोध न करें। और सहर्ष मुझे वन ले चलें। मैंने ऐसा कोई भी अपराध नहीं किया है—जिसके लिए आप मुझे छोड़ रहे हैं।

स्वामी ! ऊँची-ऊँची अट्टारियों में रहने से, विमानों पर घूमने से, अणिमादि सिद्धियों से प्राप्त सुखों से भी पति के चरणों में निरंतर छाया की तरह रहना बढ़ कर है।

नाथ ! किस के साथ कैसा वर्त्ताव करना चाहिए—इसकी शिक्षा मुझे अपने माता-पिता से पर्याप्त मिल चुकी है। इस समय इस सम्बन्ध में मुझे शिक्षा देने की कतई आवश्यकता नहीं है।

मैं हिंसक पशुओं से भरे वन में चलूँगी और जैसे पिता के घर में रहती थी वैसे ही वहाँ भी प्रसन्नता से रहूँगी। पातिव्रत धर्म पालन करुँगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नाथ ! मैं विधिवत् ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्णतया पालन करुँगी। सदा आप की सेवा में लगी रहूँगी और सुन्दर सुगंधित वन बीच आप के साथ-साथ विचरूँगी।

नाथ ! आप सर्वशक्तिमान हैं। वन में मेरी रक्षा आप सहज में कर सकेंगे। मैं आप के साथ अवश्य वन चलूँगी। मेरा जाना रोका नहीं जा सकता।

नाथ ! मेरे लिए, आप को वन में कोई कष्ट उठाना न पड़ेगा ! कंद-मूल-फल खा कर रहूँगी। नाथ ! मेरी यह प्रबल इच्छा है कि आप के साथ निर्भय घूम-घूम कर, पर्वत-वन तड़ागादि खूब देखूँ !

स्वामी ! अपने हृदय का समस्त प्यार आप को समर्पित कर चुकी हूँ। आप के सिवा अन्यत्र मेरा मन नहीं जाता। और कहीं नहीं लगता। मैं आप के बिना जी नहीं सकूँगी। नाथ ! मुझे अपने साथ बन ले चलिए। मेरे रहने पर, आप पर कोई भार न पड़ेगा।"

प्यारे मित्र ! इतना कहते-कहते सीता जी की आँखें डब-डबा गईं। फिर राम बोले,—

"सीते ! वन में हिंसक पशु—बाघ, सिंह, भेड़िए विषैले जन्तु—साँप विच्छू तथा नदी-जल में मगरादि रहते हैं। वे वन वासियों को पीड़ित करते हैं। उनके प्राण ले लेते हैं। खाने को रूखा-सूखा जंगली कन्द मूलादि ही मिलते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पहाड़ का पानी भी लगता है। दिन भर का थका-माँदा भूमि पर ही सोना पड़ता है। वहाँ ईर्ष्या-क्रोधादि विकारों को तज कर, तपस्वी का जीवन बिताना पड़ता है। प्यारी ! वन में कष्ट अनेक हैं। तेरी जैसी सुकुमारी के लिए रहने लायक वन नहीं है।

प्यारे मित्र ! इसी को कविता में सुन लीजिए :—

घोर सिया ! वन तू सुकुमार
कहो, हम सो, कस कै निवहै है।
गूँजत सिंह, डरावत कोल,
भयानक भील लखै, भ्रम ऐ हैं॥
भूँकत साँप वकारत वाघ,
भकारत भूत महा दुःख पै है।
तू सुकुमार रची करतार,
विचार चले तूहि क्यूँ वनि ऐ है॥

प्यारी ! घनघोर बन बड़ा भयावह है। तू सुकुमारी हो, भला, तू मेरे साथ कैसे निबह सकोगी। वन में सिंह गरजते हैं। कोल (सूअर) डकारते हैं। भीलों की डरावनी सूरत देख तू डर जाओगी। वहाँ साँप फुफकारते हैं। बाघ दहाड़ते हैं। भयंकर भूत-पिशाच से भी दारुण दुःख पाओगी। सृष्टिकर्ता ने तुझे बहुत कोमल बनाया है। जरा विचार भी लो ऐसे वन में क्यों जाओगी ?

प्यारे मित्र ! कविता की उपर्युक्त पक्तियाँ खालसा पंथ के पूज्य गुरु गोविन्द सिंह जी की रचना--गोविन्द रामायण से ली गई हैं। उनका रामायण बड़ा ही मधुर और सुन्दर काव्य है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

गुरु गोविन्द सिंह जैसे शूर-वीर वैसे ही उच्च कोटि के विद्वान् थे। बड़े ही त्यागी थे। धर्म और संस्कृत के लिए उन्होंने सब कुछ न्योछावर कर डाला था। मित्र! आप उनकी जीवनी पढ़ें! उनके चरणों में बार-बार नमस्कार है।

प्यारे मित्र! अब विषय प्रसंग पर आवें—

राम आगे बोले,—"प्यारी सीते! तू उत्तम कुल में पैदा हुई है। धर्माचरण को जानती है। तू यहीं रह कर धर्म का आचरण करो। उपवास व्रतादि का पालन करो। प्यारी! वन जाने का हठ छोड़ दो।"

प्यारे मित्र! रामचन्द्र की बातें सुनते-सुनते सीता जी की आँखों से अश्रुधारा बह चली। अब-तक जिन उमड़ते आँसुओं को रोके हुई थीं—साहसा उमड़ पड़े थे।

सीता जी बोलीं,—" प्राण नाथ! आप ने वन के जिन-जिन कष्टों का वर्णन किया है; वे सब आप के स्नेह से सुख में परिणत हो जाएँगे। नाथ! वन में मुझे कोई कष्ट नहीं होगा। मुझे अनाथ छोड़ न जाइए। मैके में गुणी ब्राह्मण ने मेरी हस्तरेखा देख कर कहा था कि मुझे वन में वास करना होगा। एक भिक्षुक ब्राह्मणी ने भी यही बात कही थी। पंडितों ने भी लग्न विचार कर यही कहा था। इससे नाथ! मुझे तो वन में वास करना ही पड़ेगा। क्यों नहीं जो भाग्य में बदा है—उसे आप के साथ रह कर ही भुगत लूँ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्यारे मित्र ! सीता जी इस प्रकार कहती-कहती राम के पैर पकड़, फूट-फूट कर रोने लगीं।

राम बोले,—"प्यारी सीते ! तू ने वन जाने का दृढ़ निश्चय कर ही लिया, तो मेरे साथ वन चलो। तू जाने के लिये शीघ्र तैयार हो जा ! अपने निजी व्यवहार के जो वस्त्र, भूषणादि हैं, उन्हें ब्राह्मणों को दान कर दो। दान से जो बच जाय, उसे सेवकों के बीच बाँट दो।"

प्यारे मित्र ! इस प्रकार से सीता जी का मनोरथ पूरा हुआ। वे निजी वस्तुओं को दान करने लगीं।

इधर लक्ष्मण भी सीता-राम की बातें सुन रहे थे। भाई के शोक से उनका हृदय फटा जा रहा था। आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। प्यारे मित्र ! लक्ष्मण भी वन जाने को मचल गए। राम को उन्हें भी साथ लेना पड़ा।

प्यारे मित्र ! निजी वस्तुओं को दान कर, सीता और लक्ष्मण के साथ राम केकई के महल में पिता के दर्शन के लिए गए ! राजा दशरथ ने सभी रानियों को वहीं बुलवा लिया। सभी रोने विलपने लगीं। राजा दशरथ बेहोश हो-हो जाते। उन्होंने कहा,—"राम के साथ उनकी चतुरंगिणी सेना जाय ! कोष जाय !" पर केकई ने इसका विरोध किया। केकई तो सीता को भी वल्कल पहना कर भेजना चाहती थी। पर उनका वल्कल पहनना लोगों से देखा नहीं गया। सीता

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

का वनवास तो हुआ नहीं था। वे सुन्दर वस्त्र भूषणों से सुसज्जित भेजी गईं।

प्यारे मित्र! लक्ष्मण ने राम के साथ वन जाने की अनुमति अपनी माँ सुमित्रा से चाही। देवी सुमित्रा बोलीं,—"बेटा! तू जा। राम के साथ वन जा। बड़े भाई और माता तुल्य भौजाई की सेवा कर जन्म-सुफल बना। मैं तेरे सकुशल लौटने की आस में जैसे-तैसे चौदह वर्ष दिन गिनते-गिनते बिता लूँगी। बेटा! वन में सतर्क रहना!" इतना कहते-कहते देवी सुमित्रा के नेत्र आँसुओं से भर आए। कंठ रुँध गया। आगे बोल न सकीं। लक्ष्मण माँ के चरण छू प्रणाम कर विदा हुए।

प्यारे मित्र! तब लक्ष्मण, पत्नी ऊर्मिला से विदा लेने गए। राम के साथ चौदह वर्ष के लिये वन जाने का अपना निश्चय बतलाया। देवी ऊर्मिला अपनी सास देवी सुमित्रा की तरह ही, नीति-निपुणा विदुषी महिला थीं। बोली,—"प्राणेश! आप जायँ! वन में भाई-भौजाई के साथ चौदह वर्ष वास करें। उनकी सेवा करें। मैं रुकावट नहीं बनूँगी। मैं आप के इस लम्बे वियोग को जैसे-तैसे काट ही लूँगी। आप से मिलने की आस पर प्राण रखी रहूँगी।

प्यारे मित्र! ऊर्मिला ने लक्ष्मण के चरण छू प्रणाम किया। लक्ष्मण सस्नेह आशीर्वाद दे कर विदा हुए। दोनों

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

के नेत्र आँसुओं से भर आए थे। ऊर्मिला अपने को संभाल न सकीं। लक्ष्मण के जाते ही, मूच्छित सी भूमि पर गिर पड़ीं और फफक-फफक कर रोने लगीं।

राम का वन-गमन

राजा दशरथ ने सुमंत से कहा—"रथ लाओ और राम-लक्ष्मण और बहू सीता को रथ में बिठाकर, राज्य की सीमा तक पहुँचा आओ।"

प्यारे मित्र! सुमंत ने रथ लाया। राम-लक्ष्मण और सीता ने राजा दशरथ को प्रणाम किया। राजा आशिष देते-देते मूच्छित हो भूमि पर गिर पड़े। कौशल्यादि संभालने लगीं। राम, लक्ष्मण और सीता रथ पर, सवारहो चल पड़े। सभी शोकाकुल हो गए। रथ तेजी से आगे बढ़ चला। देखते-देखते कौशल्या और सुमित्रा की आँखों से ओझल हो गया। पुरवासी तो रथ के पीछे लग गए।

प्यारे मित्र! राम को अयोध्या से प्रस्थान करने में भी काफी देर हो गई थी। अयोध्या से छह कोस दूर तमसा नदी के तट पर पहुँचते ही संध्या हो गई। वन की पहली रात राम ने तमसा नदी के तट पर ही विताई। तृण शय्या लगा कर सो गए। लक्ष्मण बैठकर रखवाली करते रहे। सुमंत भी लक्ष्मण के साथ ही बैठ कर बातें करते रहे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

प्यारे मित्र ! अयोध्यावासी, लौटाने पर भी न लौटे थे। वे भी वहीं भूमि पर ही सो गए थे। राम से उनका कष्ट देखा न गया। वे बोले,—"लक्ष्मण ! पुरवासी जन भारी कष्ट पा रहे हैं। लौटाए, न लौटेंगे। इन्हें सोते ही छोड़कर चल चलें।"

प्यारे मित्र ! लक्ष्मण ने राम की युक्ति की सराहना की। सुमंत से तुरंत रथ तैयार कराया। राम, लक्ष्मण और सीता के साथ रथ में सवार हुए। सुमंत चुप के से रथ हाँक चल पड़े। पुरवासियों को भुलवाने के लिए राह काटते गए।

प्यारे मित्र ! सवेरे, उन्हें न पाकर, अयोध्यावासी, बहुत दुःखी हुए। रोते विलपते अयोध्या लौटे।

इधर राम सुबह होते-होते तमसा नदी से दूर निकल गए। शह में कुछ देर विलम कर नित्य-कृत्य से निवृत हुए। फिर आगे बढ़े। वेद श्रुति, गोमती एवम् स्वन्दिका नदियों को पार करता रथ आगे बढ़ता गया। शाम होते-होते रामचन्द्र जी, गंगा जी के तट पर बसे शृङ्गवेरपुर पहुँचे। उस रात गंगा नदी के तट पर, इङ्गुदी-वृक्ष के नीचे विश्राम किया।

प्यारे मित्र ! उस देश के राजा निषाद (मल्लाह) थे। गुह उनका नाम था। वे राम के मित्र थे। राम के आगमन की खबर सुनते ही मिलने आए। अपने साथ राम के लिए बहुत-से सामान लाए। राम ने सब लौटा दिए। बोले,—"मुझे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तो एक तपस्वी का जीवन बिताना है। कन्द-मूल फल खाना है। वल्कल पहनना है और भूमि पर ही सोना है।" राम ने राजा गुह से बड़ी प्रीति से बातें की। उस रात राम सीता ने उपवास किया। केवल गंगा का निर्मल जल भर पान किया। तृण-शय्या लगा कर राम-सीता भूमि पर ही सोए। लक्ष्मण कुछ दूरी पर बैठ कर उनकी रखवाली करते रहे। राजा गुह भी उनके साथ बैठ कर बातें करते रहे। वनवास की ही चर्चा चलती रही।

प्यारे मित्र! रामचन्द्र जी ने वनवास की वह दूसरी रात भी गंगा तट पर सोते-जागते काट ली। भोर होते सुमंत को अयोध्या लौटने के लिए बाध्य किया। राजा गुह से नाव मँगाया और लक्ष्मण के साथ गंगा नदी पार किया।

गंगा-पार कर वत्स देश में पदार्पण किया। किसी तरह से राजा गुह को समझा-बुझा कर लौटाया। राजा गुह-प्रेम-वश राम को छोड़ना नहीं चाहते थे। वे बड़े ही कोमल स्वभाव के श्रद्धालु व्यक्ति थे।

प्यारे मित्र! उधर सुमंत गंगा-तट पर खड़े-खड़े सीता-राम-लक्ष्मण को एक टक से निरखते रहे। जब वे आँख से ओझल हो गए, तब रथ हाँक, अयोध्या चल पड़े।

प्यारे मित्र! अब, राम-लक्ष्मण और सीता अपने अयोध्या-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

राज्य से बाहर हो गए थे। सब लोग भी उन्हें छोड़ लौट गए थे। अब वे तीन ही-वत्स देश में पांव-पैदल आगे बढ़ते गए। आगे राम, पीछे लक्ष्मण और बीच में सीता ! सेवक-सेविकाओं से घिरे-राजमहल में रहने वाले राम, दुर्गम वन में उघार पाँव चल रहे थे। प्यारे मित्र ! यही विधना का विधान है। किस पर, कब, क्या बीतेगा—कोई जान नहीं पाता। सन्ध्या होने पर, तीनों एक वृक्ष के नीचे ठहरे। देर तक आपस में बातें करते रहे। माता-पिता की याद करते रहे। कहते रहे—पिता जी, वियोग कैसे सह सकेंगे ! कैसे प्राण बचा पाएँगे !! माताएँ वियोग के दिन कैसे काट पाएँगी !!!

फिर रामचन्द्र जी बोले,—"प्यारे लक्ष्मण ! हमें जागते रह——सीता की रक्षा करनी होगी। निरंतर सतर्क रहना होगा।"

प्यारे मित्र ! उस वट वृक्ष के नीचे, तीनों ने, वनवास की तीसरी रात काट डाली। सुबह होते आगे बढ़े। सारा दिन चलते ही गए। घोर जंगल पार करते—सन्ध्या समय गंगा यमुना के संगम पर बसे तीर्थ-राज प्रयाग (इलाहाबाद) पहुंचे। वहीं भरद्वाज ऋषि का आश्रम था। ऋषि भरद्वाज अपने शिष्यों के साथ वहीं तप कर रहे थे। उन्होंने राम-लक्ष्मण और सीता का आतिथ्य-सत्कार किया।

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रीति से भोजन कराया। फिर ऋषि भरद्वाज उनके साथ बैठ कर, देर तक बातें करते रहे।

ऋषि भरद्वाज बोले,—"प्यारे राम! मुझे आपके वनवास की बातें पहले से ही मालूम थी। आप मेरे आश्रम पधार कर, दर्शन देंगे—यह भी ज्ञात था। यहाँ मैं आप के दर्शन की आस लगाए रह रहा था। अब आप यहीं वास कर, वनवास काल बिताइए।"

श्री राम बोले,—"महर्षे! आप का आश्रम नगर के समीप है। मुझे और सीता को देखने लोग आते ही रहेंगे। हम लोग शाँति से यहाँ न रह सकेंगे। हमें कोई एकान्त स्थान बताइए—जहाँ हम, लोगों की भीड़ से दूर, वनवासी की तरह रह सकें।"

प्यारे मित्र! तब भरद्वाज ऋषि बोले,—"प्रिय राम! यहाँ (प्रयाग) से दश कोस दूर चित्रकूट नामक एक पर्वत है। उसके कंगूरे पर ऋषि रहते हैं। वह नगर-गाँव से दूर रमणीक स्थान है। फिर वहीं निवास करिए"।

रामचन्द्र जी को मुनि की बात भायी। चित्रकूट पसन्द आया। वहीं ठहरने का निश्चय किया। उन्होंने वनवास की चौथी रात भरद्वाज ऋषि से बातें करते सुख से बिताई। ऋषि से कथा प्रसंग सुने।

सबेरा होते ही, राम चित्रकूट चल पड़े। ऋषि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

भरद्वाज विदा करने दूर तक साथ गए। चित्रकूट की राह बताई। भरद्वाज जी बोले,—"प्यारे राम! यहाँ से गंगा-यमुना संगम पर जाइए। वहाँ से पश्चिम की ओर मुड़ कर, यमुना के किनारे चले जाइए। मार्ग में कई तीर्थ स्थान देखने को मिलेंगे। दर्शन करते जाइए। नाव या बेड़ा से यमुना नदी पार कीजिए। यमुना के उस पार एक बड़ा वट वृक्ष है। उसके चारों ओर और कई वृक्ष लगे हैं। उनकी शीतल छाया में तपस्वी तप कर रहे हैं। उनके दर्शन कीजिए। जी चाहे, तो रात वहीं बिताइए। प्यारे राम! वहाँ से कोस-भर पर सुन्दर नीलवर्ण का वन है। वहीं से चित्रकूट का रास्ता है। उस मार्ग से सुगमता से चित्रकूट पहुंच जाएँगे।"

प्यारे मित्र! ऋषि भरद्वाज चित्रकूट की राह बता कर, आश्रम लौटे। राम, सीता, लक्ष्मण गंगा-यमुना के संगम से होते यमुना तट पहुंचे। वहाँ कोई नाव नहीं थी। फिर लक्ष्मण ने सूखे बाँस की डोंगी बनाई। उसी पर तीनों यमुना-पार उतरे। यमुना की निर्मल धारा के दर्शन किए। सीता ने सकुशल अयोध्या लौटने के लिए मनौतियाँ मानीं। यमुना के निर्मल जल पान कर आगे बढ़े। श्याम वट वृक्ष के पास पहुँचे। तपस्वियों के दर्शन किए। फिर आगे बढ़े। कोस-भर चल कर, सुन्दर नीलवर्ण वन पहुँचे। वहाँ घूम-फिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वन की शोभा देखी। वन फल खाए। यमुना नदी के तट आकर, वहीं रात बिताई।

राम का चित्रकूट-प्रस्थान

भोर होते उठे। यमुना के निर्मल जल में स्नान किया। सन्ध्या-उपासना किया। फिर ऋषि भरद्वाज के बताए मार्ग से चित्रकूट चल पड़े।

प्यारे मित्र ! वसन्त ऋतु था। पेड़ पौधों में नये-नये कोमल-कोमल पत्ते लगे थे। ऋतुराज वसन्त के आगमन पर, प्रकृति ने सुन्दर सिंगार कर डाला था। समस्त वन सुगन्ध सौरभ से गमगमा रहा था। चिड़ियाँ चहक रही थीं। शीतल मंद सुगंध वायु बह रही थी। जंगली पौधों और वृक्षों में रंग-विरंगे फूल खिले थे। उन पर भौंरे गुँजर रहे थे। छटा बड़ी मनोहारी थी। धनुष-वाण लिए आगे राम पीछे लक्ष्मण, बीच में सीता, सघन वन को पार करते चित्रकूट की ओर बढ़े जा रहे थे। यह उनके वनवास का छठा दिन था। चित्रकूट पहुँचे। उस समय वहीं ऋषि वाल्मीकि का आश्रम था। उनके दर्शन किए। वहीं पर्ण कुटी बनाकर राम, लक्ष्मण और सीता के साथ रहने लगे।

प्रिय मित्र ! इस प्रकार रामचन्द्र जी, वनवास के प्रथम दिन, मंत्री सुमंत के साथ, रथ पर तमसा नदी के तट

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पर आए। रात्रि में वहीं ठहरे। पुरवासी भी वहीं तक आए। रात में वहीं रहे। तमसा नदी से अयोध्यापुरी करीब छह कोस दूर थी। राम पुरवासियों को वहीं छोड़, रात में ही तमसा नदी पार कर जाते हैं। उन्हें भुलावा देते रथ पर लक्ष्मण-सीता और सुमंत के साथ आगे बढ़ते हैं—वेद श्रुति, गोमती एवं स्वन्दिका नदियों को पार करते—अयोध्या-राज्य पार कर जाते हैं। लगता है—अयोध्या राज्य और गंगा नदी के बीच का छोटा प्रदेश निषाद राज की छोटी-सी जमीनदारी-सी थी। इस पर भी एकाधिपत्य अयोध्या नरेश का ही था—ऐसा प्रतीत होता है। दूसरे दिन संध्या होते-होते वे गंगा तट पहुँचते हैं। रात्रि में वहीं विश्राम करते हैं। वनवास के तीसरे दिन सबेरे राम-सीता, लक्ष्मण गंगा पार करते हैं। सुमंत अयोध्या लौट पड़ते हैं। गंगा पार कर वे वत्सदेश में पदार्पण करते हैं। शाम होने पर वन की तीसरी रात एक वृक्ष के नीचे बिताते हैं।

चौथे दिन सुबह से चल कर शाम को प्रयाग में भरद्वाज मुनि के आश्रम पहुँचते हैं। चौथी रात वहीं बिताते हैं। पाँचवे दिन प्रातःकाल चित्रकूट के लिए चल पड़ते हैं—यमुना नदी पार कर,श्याम वट और नीलवर्ण वन जाते हैं। पाँचवीं रात यमुना के तट पर विश्राम करते हैं। छठवें दिन यमुना तट से चल कर संध्या समय चित्रकूट पहुँचते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बाल्मीकि ऋषि से वहाँ मिलते हैं। चित्रकूट पसंद आता है। पर्ण कुटी बना वहीं रहने लग जाते हैं।

प्यारे मित्र ! मुझे तो अयोध्यापुरी, प्रयाग तथा गंगा-यमुना के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अब-तक आप को ऐसा सुअवसर न मिल पाया है। मेरी भी चित्रकूट आदि तीर्थ स्थानों के दर्शन की उत्कट अभिलाषा है। जब भगवान् की कृपा होगी दोनों एक साथ ही दर्शन करेंगे। जंगल की मनोहारी छटा देखेंगे। साथ-साथ विचरेंगे। तब-तक तन से न सही मन से ही, राम-सीता लक्ष्मण के संग चित्रकूट में ही विराजेंगे।

अगले पत्र में, फिर, अयोध्या लौटेंगे। देखेंगे वहाँ क्या हो रहा है। सब को शोकाकुल छोड़ आये हैं। उनकी भी सुधि लेनी है। उन्हें भी देखना है। प्यारे मित्र ! हमारे पात्रों के दुर्दिन के दिन आगए हैं। जब वे ही दुःखी हैं--तो हम लोग कैसे सुखी रह पाएँगे। अपने पात्र अपने हो जाते हैं--उनके सुख दुःख अपना-सा लगते हैं। दिल भारी-भारी सा रहरहा है। रोते-रोते तन का ताप भी बढ़ता रहा है। लोग कहेंगे--कैसा यह पागल है, जो कल्पना में रोता है। प्यारे मित्र ! समझें ! लोग पागल ही समझें !! उसमें अपना क्या वसाता है !!!

आप को अनन्त शुभ कामनाओं के साथ सादर प्रणाम !

आप का आत्मरूप

गणेश

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राम-वियोग में राजा दशरथ की मृत्यु

जमशेदपुर
२७-१०-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम

राम जब-तक प्रयाग होते चित्रकूट पहुँचे, तब-तक सुमंत शृङ्गवेरपुर में गुह के घर ठहरे रहे। तदुपरान्त वहाँ से चले और दूसरे दिन अयोध्या लौटे। उनके लौटने की खबर अयोध्या पुरी में तुरंत फैल गई। लोग राम के समाचार सुनने के लिए उमड़ पड़े। सुमंत सीधे राजा दशरथ के पास गये। राजा दशरथ राम के समाचार सुनने के लिए आतुर थे।

सुमंत राजा दशरथ से बोले,—महाराज ! मैं गंगा नदी के तट तक राम के साथ गया। वहाँ से जुदा होते समय उन्होंने आप को तथा माताओं को प्रणाम कहने को कहा। बोले,—"बोलना मैं कुशल से हूँ। वनवास काल बिताकर, लौटकर मिलूँगा। सभी धीरज धर खुशी से रहें।"

प्यारे मित्र ! राजा दशरथ राम का संदेशा सुनते-सुनते बेहोश हो गए। कौशल्या और सुमित्रा उन्हें संभालने लगीं। होश आने पर रानी कौशल्या से बोले,—"देवी !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मुझे एक पुरानी घटना याद हो आई है। तुझ से विवाह होने से पहले की बात है। तब मैं जवान हो चला था। एक दिन जंगल बीच शिकार की टोह में सरयू किनारे बैठा। उसी समय कोई एक वनवासी नदी से जल लेने आया। नदी-जल से घड़ा भरते समय आवाज हुई। मैं समझा—कोई हिंसक पशु नदी में जल पीने आया है। मैंने दूर से ही शब्द भेदी वाण चला दिया। तीर उस वनवासी को लगा। वह चीख उठा। मैं दौड़ कर पास गया और अपना परिचय देते हुए बोला,—"तपस्वी ! मैंने भूल से हिंसक जन्तु समझकर बाण चला दिया। मुझे क्षमा करना।" वनवासी तपस्वी ने कहा,—"मेरा नाम श्रवण कुमार है। मैं अपने अँधे माता-पिता को तीर्थ कराने चला था। यहाँ से कुछ दूरी पर ही, मेरे वृद्ध माता-पिता असहाय पड़े हैं और बहुत प्यासे हैं। उन्हें तुरन्त पानी पिला दीजिएगा।" इतना कहते-कहते तपस्वी बेचारा मर गया।

"देवी ! तब मैं घड़े में पानी भर कर, तपस्वी के वृद्ध माता-पिता के पास गया। वे बहुत प्यासे थे। अपने पुत्र के लौटने की बाट बड़ी आतुरता से जोह रहे थे। दोनों अंधे थे। मैंने उन्हें बिना बोले ही पानी पिला देना चाहा। सोचा जल पी लेने पर, दुःखद समाचार सुना दूँगा। पर जल पिया नहीं। बोले,—"पुत्र बोलते क्यों नहीं हो।" तब तो दुखद

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

घटना सुनानी पड़ी। पुत्र को मृत्यु से वे बहुत दुःखी हुए। अपने को सँभाल न सके। मरते समय बोले,—जैसे हम लोग पुत्र शोक से मर रहे हैं—वैसे ही पुत्र शोक में ही तुम भी मरोगे।" मुझे ऐसा शाप देकर दोनों चल बसे। मुझे लगता है—उनका शाप निकट आ गया है।"

प्यारे मित्र! इतना कहते-कहते राजा दशरथ मूर्च्छित हो गए। उसी रात उनकी मृत्यु हो गई। रनिवास में हाहाकार मच गया। सारी अयोध्यापुरी शोक सागर में डूब गई।

दूसरे दिन सुबह होते ही, वशिष्ट जी ने पाँच दूतों को घोड़े पर, भरत और शत्रुघ्न को बुलाने भेजा। दूत केकय देश को चल पड़े। पहुँचकर, वशिष्ट जी के कथनानुसार भरत से बोले,—"गुरु वशिष्ट जी ने शीघ्र अयोध्या बुलाया है।" भरत-शत्रुघ्न दूतों के साथ चल पड़े।

उधर राजा दशरथ की लाश तेल में डुबो कर रख दी गयी। अयोध्या लौटने पर भरत-शत्रुघ्न को पिता की मृत्यु और राम वनवास की खबर लगी। दूतों ने पहले उन्हें नहीं बताया था।

पिता की मृत्यु तथा राम-वनवास से भरत-शत्रुघ्न दुःखी हुए। केकयी पर बहुत क्रोधित हुए। केकयी को बहुत कुछ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

खरा-खोटा सुनाया। फिर भरत जी ने राजा दशरथ का अन्त्येष्टि संस्कार विधिवत् किया। श्राद्ध-क्रिया समाप्त कर ब्राह्मण और याचकों को काफी धन दान में दिया।

प्यारे मित्र! काम-क्रिया हो जाने पर, १४ वें दिन मंत्रियों ने भरत को राजा बनाना चाहा। भरत बोले,—"ज्येष्ट भाई ही राज्य का उत्तराधिकारी होता है। अतएव ज्येष्ट भ्राता राम ही राजा होंगे।"

प्यारे मित्र! इतना कहकर भरत राम को जंगल से बुला लाने, सेना व मंत्रियों के साथ चल पड़े। साथ में अभिषेक की सामग्री भी ले ली। बोले,—जंगल में ही राम का राज-तिलक कर दिया जायगा। साथ माता कौशल्या, सुमित्रा और केकयी भी गईं। गुरु वशिष्ट भी गए।

प्यारे मित्र! जिस राह से राम गए थे—उसी राह से चलते गए। ऋङ्गवेरपुर पहुँचे। वहाँ निषाद राज गुह से मिले। प्रयाग में भरद्वाज ऋषि के आश्रम गए। भरद्वाज ऋषि ने अपने योग-बल से सत्कार की प्रचुर सामग्री तैयार की और भरत का सेना सहित खूब आतिथ्य सत्कार किया। दूसरे दिन सुबह भरत चित्रकूट के लिए रवाना हुए।

राम चित्रकूट में

प्यारे मित्र! अब जरा, राम-लक्ष्मण और सीता के पास

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चित्रकूट में आइए। चित्रकूट पर्वत, सघन वन से आच्छादित था। उसमें सुन्दर-सुन्दर मीठे फल वाले वृक्ष थे। जंगली फूल के गाछ भरे पड़े थे। सुन्दर-सुन्दर लताएँ थीं। जगह-जगह स्वच्छ, धवल चट्टान थे। भाँति-भाँति के रंग-बिरंगे पक्षी थे। उनके कलरव से सारा वन गूँज उठता। मन्दाकिनी नदी पास ही थी। उसी की निर्मल धारा में आश्रम वासी स्नान किया करते।

प्यारे मित्र! राम का मन चित्रकूट में खूब लगा। वे सीता-लक्ष्मण के साथ वन में खूब विचरते। वन की शोभा खूब निरखते। वन के अनोखे-अनोखे पेड़-पौधों को प्यारी सीता को दिखलाते। उन्हें निरन्तर रिझाए रखते। उनकी सुख सुविधे के लिए पूरी कोशिश करते। सीता का भी मन वन में लगने लगा। लक्ष्मण के लिए क्या कहना! उनका सुख राम-सीता के सुख में ही निहित था।

चित्रकूट में राम-भरत मिलाप

प्यारे मित्र! अब भैया भरत के साथ होलें—

भरत सेना सहित चित्रकूट पहुँच चले। विशाल सेना के आगमन की आहट से वन-पशु हाथी मृगादि भाग चले। भारी कोलाहल मचा। राम को आभास मिला। राम बोले,—"लक्ष्मण! पेड़ पर चढ़कर चारों ओर देखो—कैसा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कोलाहल हो रहा है ? बन के जानवरों में क्यों भगदड़ मच रही है ?"

लक्ष्मण तुरन्त ऊँचे पेड़ पर चढ़ गए। चारों ओर देखने लगे। दूर से बड़ी सेना आती हुई दिखलाई दी। रथों पर अयोध्या राज्य के पताके फहरा रहे थे। वे झट पेड़ से उतरे। दौड़े-दौड़े राम के पास गए। बोले,—"भैया ! जल्दी करें ! सीता को कहीं गुफा में छिपा दें और धनुष-बाण लेकर लड़ने को तैयार हो जायँ। भरत अयोध्या की बड़ी सेना लेकर लड़ने आ गये हैं।"

प्यारे मित्र ! लक्ष्मण क्रोध में तमतमा उठे। उनको शांत करते हुए, श्रीराम बोले,—"लक्ष्मण ! जब भरत ही आ रहे हैं—तब धनुष उठाने की कोई आवश्यकता नहीं। पिता से वन में रहने की मैंने प्रतिज्ञा की है। फिर भरत को मारकर कैसे राज्य लूँगा। अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष कोई भी मेरे भाइयों से बढ़कर नहीं है। उनके अहित की कामना कतई नहीं कर सकता। फिर मुझे पूर्ण विश्वास है, भरत मुझसे लड़ने न आएँगे। उनके शील स्वभाव को मैं जानता हूँ। मैं जानता हूँ—उनका प्रेम मेरे प्रति अटूट है। शाश्वत है। अवश्य ही वे मुझसे मिलने और लौटाने आते होंगे। लक्ष्मण ! तुम धीरज धरो। उतावला न होओ।"

प्यारे मित्र ! इतने में भरत सेना को दूर रख, पाँव-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

पैदल राम के समीप मिलने आ गए। राम को कुशासन पर बैठे देखकर, उनकी आँखों से अविरल अश्रुधारा बह चली। प्रेम में विह्वल हो लड़खड़ाते झट राम के चरणों में आ गिरे। बलपूर्वक राम ने उन्हें उठाकर छाती से लगा लिया। भ्रातृ-प्रेम दोनों के हृदय में उमड़ पड़ा। राम की भी आँखें सजल हो आईं। मुश्किल से वे भरत को संभाल पाए। फिर भरत ने सीता के चरणों में प्रणाम किया। लक्ष्मण को गले से लगाया। उनके भाग्य की सराहना की जो राम के काम आए।

प्यारे मित्र! इतने में वशिष्ठ जी भी कौशल्या, सुमित्रा आदि के साथ आ गए। राम-लक्ष्मण ने माताओं तथा गुरु वशिष्ठ को चरण छूकर प्रणाम किया। सीता जी सासुओं के पैर पड़ीं। उनकी आशिष लीं। प्यारे मित्र! पुत्र-वधू को वनवासी देखकर, माता कौशल्या का हृदय विहरने लगा। वे फूट-फूट कर रोने लगीं। राम के बदन को सहलाने लगीं। वह दृश्य बड़ा ही हृदय विदारक था। किसी को कोई समझा नहीं पाता था।

प्यारे मित्र! रोते-रोते भरत बोले,—"भैया! भैया!! पिता जी चल बसे।"

पिता की मृत्यु से राम व्यथित हो उठे। माताओं को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

विधवा वेष में देख कर उनका दिल विहर-सा गया। उनकी आँखों से आँसू बह चले। इधर सीता फफक-फफक रोने लगीं। लक्ष्मण भी रो पड़े।

महर्षि वशिष्ठ ने सबों को किसी प्रकार से धीरज बँधाया। फिर राम ने मृतक पिता के लिए जल तथा पिंड-दान दिए।

उस रात सब लोग मन्दाकिनी नदी के तीर पर, राम के पर्ण कुटी में ही ठहरे। देर तक बातें करते रहे। प्रातः काल सबों ने मन्दाकिनी में स्नान किया। फिर बैठ कर बातें करने लगे।

भरत जी रामचन्द्र जी से बोले,—"भैया! राज्य का अधिकारी बड़ा भाई ही होता है। मेरी माँ ने मेरे लिए राज माँगकर तथा आपको वन भेजकर भारी दोष किया है। माँ को दण्ड नहीं दिया जा सकता। आप उसे क्षमा करें। मेरे ऊपर कृपा करें। मैं राज-तिलक की सारी सामग्री लेते आया हूँ। मैं चाहता हूँ—यहीं आपका राज-तिलक हो जाय और अयोध्या लौटकर राज करें।"

तब राम बोले,—"प्यारे भरत! व्याह के समय पिता जी ने तेरे नाना से प्रण किया था कि उनकी लड़की से उत्पन्न पुत्र ही उनका उत्तराधिकारी होगा और देवासुर-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

संग्राम में माता केकई ने पिताजी की जान बचाई थी। इससे प्रसन्न होकर उन्होंने माता केकई को दो वरदान दिए थे। प्यारे भरत! विवाह के समय पिता जी की प्रतिज्ञा के अनुसार तू ही राज्य के उत्तराधिकारी हो। माता केकई ने, दिए गए दोनों वरदानों को ही माँगा है। एक में मेरा चौदह वर्ष का वनवास और दूसरे में तेरा राज-तिलक। वास्तव में तुझे तो राज-तिलक मिलना ही चाहिये था। माता केकई ने कोई दोष नहीं किया है।

भरत! पिता जी चल बसे हैं। उनके वचन पूरा करना हम पुत्रों का पवित्र कर्म है। उनके वचन के विपरीत चलकर उनकी अधोगति न करें। तू अयोध्या लौटकर राज करो। १४ वर्ष वन में वास कर, मैं आ मिलूँगा।"

प्यारे मित्र! भरत जी ने राम से बहुत अनुनय-विनय किया। पर राम न माने! गुरु वशिष्ठ ने भी समझाए। माताओं ने भी बहुत कहा। पर राम ने किसी की एक न सुनी। अयोध्या न लौटे। राज तिलक के लिए राजी न हुए! भरत को ही समझा-बुझाकर अयोध्या लौटने को बाध्य किया!

अन्त में भरत बोले,—"भैया! इन खड़ाउओं पर, पैर रखिए। आपके चरण पड़ने से इनमें राज-सत्ता संभालने की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शक्ति आ जाएगी। इन्हें ही, मैं राज-सिंहासन पर आसीन करूँगा! ये ही आपके प्रतीक होंगे। अयोध्या नगरी के बाहर पर्ण कुटी बनाकर, मैं तपस्वी वेष में वास करूँगा। भूमि पर सोऊँगा। जटा-चीर धारण किए रहूँगा। कन्द-मूल खाकर रहूँगा। जिस दिन चौदहवाँ वर्ष पूरा होगा—उस दिन आपके न आने पर, प्राण त्याग दूँगा। नगर के बाहर, पर्ण कुटी में रहकर ही, राज-काज संभालूँगा।"

प्यारे मित्र! तब रामचन्द्र जी ने अपने चरण पादुका पर रख कर हटा लिए। भरत भी उन्हें लेकर—गुरु वशिष्ठ माताओं और सेना के साथ अयोध्या के लिए चल पड़े। रास्ते में भरद्वाज ऋषि से मिलते अयोध्या लौटे।

भरत का नन्दी गाँव में वास

राजा के बिना अयोध्या सूनी पड़ी थी। वीरान जैसी लग रही थी। भरत ने राम की पादुका को राज सिंहासन पर आसीन किया। राज्य की बागडोर हाथ में ली। राम के प्रतिनिधि के रूप में राज्य करने लगे। प्यारे मित्र! भरत जी, अयोध्यापुरी से बाहर नन्दी गाँव में कुटी बनाकर, तपस्वी की तरह फल-फूल, साग-पात खाकर रहते। भूमि पर सोते। नख-बाल नहीं कटाते। जटा बढ़ाए यति की तरह

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

रहते। कहते—"जैसे राम रहते हैं,वैसे ही मैं भी रहूँगा।"

प्यारे मित्र ! अब अयोध्या से चल चलिए, चित्रकूट में; नगर से वन में, राम-लक्ष्मण जानकी के पास। क्या कहना है—हम लोग भी, जंगल से नगर, नगर से जंगल दौड़ लगाते ही रहते हैं। कभी प्रयाग तो कभी शृङ्गवेरपुर। लगता है पुष्पक विमान को भी मात कर डालेंगे। मित्र ! ये सब मन जी की मेहरबानी है। कल्पना जी की महिमा है। अब रहें राम के साथ वन में ही। समझें हमारा भी वनवास हो गया।

प्यारे मित्र ! भरत के परिजनों के साथ लौटने के बाद से, राम को चित्रकूट उतना अच्छा न लग रहा था। रह-रह कर वह स्थान भाई और माताओं की याद दिल में जगा रहा था। इसी बीच वहाँ की ऋषि मंडली भी धीरे धीरे वहाँ से हटने लगी। बाद में उन्हें पता चला कि खर-दूषण नामक राक्षस का उपद्रव वहाँ दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा था। बनवासी तंग आकर सुरक्षित स्थान में शाँति पूर्वक रहने के लिए चित्रकूट छोंड़ कर, इधर-उधर जाने लगे थे।

प्यारे मित्र ! राम को भी वहाँ और रहना अच्छा न लगा। वहाँ से कुछ दूरी पर अत्रि ऋषि का आश्रम था। वहाँ वे अपनी भार्या अनुसूया जी के साथ रहा करते थे। आश्रम बहुत ही प्रतिष्ठित था। रामचन्द्र जी चित्रकूट छोड़कर,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अत्रि ऋषि के आश्रम चले गए। ऋषि उनसे स्नेह से मिले। वात्सल्य-सत्कार किया।

अनुसूया-सीता संवाद

प्यारे मित्र! सीता जी ने देवी अनुसूया को प्रणाम किया। अनुसूया जी उच्चकोटि की तपस्विनी पतिव्रता विदुषी महिला थीं। बहुत प्रतिष्ठित थीं। बहुत बूढ़ी हो गई थीं। वे सीता जी को पातिव्रत धर्म की शिक्षा देने लगीं। बोलीं,—"बेटी सीते! स्त्री के लिए पति ही सब कुछ है। उनकी सेवा में ही स्त्री की भलाई है। किसी भी परिस्थिति में पति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। यह अच्छा ही है कि राज-सुख छोड़ कर, पति के साथ वन-वन भटक रही हो।"

फिर बूढ़ी अनुसूया जी सीता जी को पुत्रीवत् स्नेहवश दिव्य माला, उत्तम वस्त्राभूषण, केसर, चन्दन, अंगराग आदि भेंट कर बोलीं,—"बेटी! इस अंगराग के लगाने से तेरे शरीर की कांति सदा बनी रहेगी।"

फिर राम-सीता और लक्ष्मण को वृद्धा अनुसूया ने प्यार से आशिष दी।

प्यारे मित्र! उस रात राम, सीता और लक्ष्मण के साथ अत्रि ऋषि के आश्रम में वास किया। दूसरे दिन प्रातःकाल नित्य कर्म से निवृत होकर, श्रीराम अत्रि ऋषि को प्रणाम

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कर बोले,—"मुनिवर ! मेरे लिए कोई सेवा हो तो कहें।"

अत्रि मुनि बोले,—"वीरवर राम! इस आश्रम के पास वाले वन में राक्षस बहुत बढ़ गये हैं। वे वनवासी तपस्वियों को बहुत सताते हैं। आप उनका दलन कर, तपस्वियों की रक्षा कीजिये।"

राम बोले,—"मुने ! राक्षसों को मार कर तपस्वियों की रक्षा अवश्य करूँगा।"

प्रिय मित्र ! राम अत्रि ऋषि को प्रणाम कर, सीता और लक्ष्मण के साथ उस वन की ओर चल पड़े।

अयोध्या काण्ड की चर्चा समाप्त हुई। अगले पत्र में अरण्य काण्ड की वार्ता शुरू की जाएगी।

प्यारे मित्र ! सीताजी रामचन्द्रजी से बीच-बीच में ज्ञान-भरी गूढ़ बातें भी पूछा करती थीं। रामचन्द्र उन्हें सन्तोषपूर्ण उत्तर दिया करते थे। वास्तव में स्त्री अपने पति में, माता-पिता, गुरु आदि का समावेश चाहती है। वह पति से अपनी रक्षा, अन्न, जल, वस्त्र के सिवा अपनी आत्मा की भी खुराक चाहती है। श्री संपन्न, वीर, विद्वान, सहृदय, जितेन्द्रिय पुरुष ही आदर्श पति बन सकता है। उसकी भार्या ही निरा उसकी ही हृदय-विहारिणी रह सकती है।

प्यारे मित्र ! राम के वनवास की चर्चा में मेरी आँखों से अविरल अश्रुधारा बहती रही है। पढ़ते समय, आपके नेत्रों में भी अवश्य आँसू छल-छला उठेंगे। ऐसा हृदय विदारक प्रसंग ही है।

प्यारे मित्र ! बिना प्रेमाँसू बहे—हृदय का भार हलका नहीं होता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मन का मैल नहीं घुलता। राम की चर्चा में प्रेमाँसू बहते रहें तो राम के चरणों में प्रीति हुआ ही जानिए।

ऐसे तो, जिनकी भावनाएँ मर चुकी हैं—उनके लिए तो हर्ष और विषाद की चर्चा में कोई अन्तर नहीं पड़ता। उनके जड़वत् दिल तो द्रवते ही नहीं।

प्यारे मित्र! भगवान् की असीम कृपा से आपने बहुत ही कोमल हृदय पाया है। बहुत ही सरस। बहुत ही समवेदनाशील। यह भगवान् की भारी देन है और जग की सारी संपत्तियों से बढ़ कर है।

प्यारे मित्र! आप दृढ़ संकल्प से साधना-पथ पर बढ़े चलें, बढ़े चलें। न रुकें। न विलमें। मुक्ति मिलकर रहेगी। इसी जन्म में। निश्चय ही, इसी जन्म में। मेरे प्यारे मित्र! मंजिल अधिक दूर नहीं। बस सीता-राम की शरण गहे रहिए। कहिए—अशरण-शरण तू ही हो, किसके शरण में जाऊँ!' × × × ×

आपका आत्मरूप

गणेश

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दण्डक वन में राम और शरभंग ऋषि से भेंट

जमशेदपुर
२७-१०-६८

प्रिय मित्र !

आज दिन का यह दूसरा पत्र है। दोनों एक साथ मिलेंगे।

प्यारे मित्र ! श्रीराम अत्रि ऋषि के आश्रम से चलकर दण्डक वन पहुँचे। वास्तव में, उन्हें दण्डक वन में रहना था। यह वन बड़ा ही दुर्गम था। हिंसक जानवरों से भरा था। उसमें अगम्य गुफाएँ थीं। बड़ी ही भयावह घाटियाँ थीं। राम-सीता और लक्ष्मण जंगल को घूम-घूमकर देख ही रहे थे कि अचानक विराध नामक महा भयंकर राक्षस ने आकर सीता जी को पकड़ लिया। उन्हें ले, भाग चला। फिर तो राम-लक्ष्मण उस पर टूट पड़े। तीखे तीरों से बींध डाले। उसके शरीर से रुधिर की धारा बह चली। किन्तु मरा नहीं। लड़ता ही रहा।

वास्तव में, विराध राक्षस को वर मिला हुआ था कि कोई उसे न अस्त्र से मार सकता था, न शस्त्र से काट सकता था। तब राम-लक्ष्मण ने गड़हा खोदकर, उसे जिन्दा ही गाड़ दिया। ऊपर से भारी-भारी पत्थर देकर पाट दिया। इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रकार से सीता को विराध से बचाया। वनवासियों को भी साँस मिली। विराध उन्हें पीड़ित किये हुए था।

प्यारे मित्र! श्रीराम विराध को गाड़ कर, आगे बढ़े और शरभङ्ग ऋषि के आश्रम गए। उनके तथा आश्रम-वासियों के दर्शन किए। सबों को प्रणाम किया।

शरभङ्ग ऋषि राम-सीता व लक्ष्मण को अपने आश्रम में पाकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्हें आशिष दी। उनका स्नेह-पूर्ण सत्कार किया। उन्हें प्रेम से खिलाया।

प्यारे मित्र! शरभङ्ग ऋषि की तपस्या फलवती हो चुकी थी। सिद्धि प्राप्त हो चुकी थी। संसार से उठने का भी समय आ गया था। उन्होंने राम के सम्मुख ही शरीर त्याग दिया। और देखते-देखते सूक्ष्म शरीर से स्वर्ग लोक को चले गये।

उस समय शरभंग ऋषि के आश्रम में आस-पास के अनेक तपस्वी एकत्रित थे। सबों ने राक्षसों के उपद्रव की चर्चा की। बोले,—"राक्षस कितने ही तपस्वियों को मारकर खा गए। वन में तपस्वियों का रहना दुष्कर हो गया है।"

प्यारे मित्र! तब राम बोले,—"महात्मन! मैं निश्चय ही राक्षसों का संहार करूँगा। उन्हें मारकर धरती का भार हल्का करूँगा। आप सब निर्भय रहें।" यह सुनकर सभी आश्रम-वासी बहुत प्रसन्न हुए।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

राम सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में

फिर राम सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम के लिए चल पड़े। ऋषिगण साथ-साथ पहुँचाने चले। राह घनघोर जंगल की पगडंडी थी। मार्ग में मन्दाकिनी नदी उमड़ती-घुमड़ती मिली। उसे पार किया। आगे बढ़े। ऊँचे पर्वत शिखर पर स्थित सुतीक्ष्ण ऋषि के आश्रम पहुँचे। तपोवृद्ध सुतीक्ष्ण ऋषि को प्रणाम कर श्रीराम बोले,—"महर्षे ! मैं अयोध्या के राजा दशरथ का पुत्र राम हूँ। आपके दर्शन के लिए आया हूँ।"

प्यारे मित्र ! इतना सुनते ही सुतीक्ष्ण ऋषि राम को गले लगाकर बोले,—"भगवन ! आप अच्छे आये। आपके दर्शन के लिए ही प्राण रख रहा था। आपके पदार्पण से मेरा आश्रम पवित्र हुआ। हम कृत्य-कृत्य हुए। आप मेरे आश्रम में ही रहिए।"

प्यारे मित्र ! उस रात रामचन्द्र जी सुतीक्ष्ण ऋषि के आश्रम में ही सीता और लक्ष्मण के साथ रहे। ऋषि ने उन्हें प्रीति से जेवाया।

प्यारे मित्र ! दूसरे दिन प्रातःकाल श्री राम ने सीता, लक्ष्मण सहित शीतल सरोवर में स्नान किया। सन्ध्या-उपासना की। अग्नि और देवताओं की पूजा की। सूर्य दर्शन किए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

फिर सुतीक्ष्ण ऋषि को प्रणाम कर, आगे जाने की अनुमति माँगी।

सुतीक्ष्ण ऋषि गद्-गद् कंठ से बोले,—"भगवन! फिर पधारने की कृपा करेंगे।"

प्यारे मित्र! राम बोले,—"महर्षे! अवश्य आऊँगा।" और ऋषि को प्रणाम कर दण्डक-वन में भ्रमण करने चल पड़े।

सीता का राम से अनुरोध

प्यारे मित्र! रास्ते में सीता जी ने कहा,—"स्वामी! असत्य भाषण, पराई स्त्री से प्रीति और अकारण शत्रुता—ये काम से उत्पन्न तीन मुख्य व्यसन हैं। आप न कभी असत्य बोलते, न पराई नारी से प्रीति करते। किन्तु, आपके सामने तीसरा व्यसन—अकारण शत्रुता—आ उपस्थित हुआ है। आप और लक्ष्मण दोनों धनुष-वाण धारण किए–दण्डक-वन को चल पड़े हैं। वहाँ अनेक वनचर राक्षस मिलेंगे। आप ने ऋषियों को वचन दिया है—राक्षसों को मारने का। दण्डक-वन में राक्षसों को देखकर आप उन पर बाण चलाएँगे ही। नाथ! वे वनवासी राक्षस आप का कुछ नहीं बिगाड़ते। आप उनसे अकारण शत्रुता करेंगे और मारेंगे। आप इस तीसरे व्यसन को त्यागिए। तभी तप की सिद्धि मिलेगी।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

नाथ ! आप वन में तपस्वी की तरह रहने आए हैं। क्षात्र-धर्म का पालन करने नहीं आये हैं। धनुष-वाण लेकर अकारण जीव हत्या करने नहीं आये। कम से कम, इस वनवास काल में आप जीव हत्या की अपनी वृति को त्यागिए। तपस्वी की तरह रहिए।

स्वामी ! आपका दण्डकारण्य में जाना मुझे नहीं भाता। वहाँ जाने को जी नहीं चाहता।"

प्यारे मित्र ! श्रीराम बोले,—"सीते ! राक्षसों को मार कर, तपस्वियों की रक्षा करने के लिए, मैं वचन-वद्ध हूँ। राक्षस अत्याचारी हैं। तपस्वियों को सताते हैं। उन्हें मारते हैं। खाते हैं। तपस्वी बेचारे निर्दोष हैं। निरपराध तपस्वियों की रक्षा के लिए ही, मैंने राक्षसों के मारने की प्रतिज्ञा की है। देवी ! लाचार हूँ। प्रतिज्ञा भंग नहीं कर सकता। अपने वचन को असत्य नहीं कर सकता। तेरे स्नेह भरे उपदेश का मैं आदर करता हूँ। तू ने स्नेहवश ही उपदेश भरी बातें कही हैं।"

प्यारे मित्र ! पति के लिए, पत्नी ही हित-मीत सब कुछ है। एक प्रकार से पति के जीवन का रक्षा-भार पत्नी ही सही रूप में वहन करती है। उसके कल्याण की निरंतर चिन्ता वही करती है। हितैषी में माता की बराबरी सती भार्या ही करती है। वही दुःख में दुःखी होती है और सुख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

में सुखी होती है। निरंतर भलाई का ध्यान रखती है। पति का मस्तक ऊँचा रखना चाहती है। मित्रवत् नेक सीख देती रहती है। पत्नी की सुख की छाया में ही पति पूर्ण विश्राम पाता है। माता सीता ने पति के हित की कामना से ही प्रीति भरी वाणी में उपर्युक्त हित भरी बातें कहीं।

प्यारे मित्र! राम, सीता और लक्ष्मण के साथ दण्डक-वन में सारे-दिन घूमते रहे। वन की शोभा निरखते रहे। धर्मभृत नामक एक वनवासी मुनि भी उनकी अगुवाई करते रहे। राह दिखाते रहे। उन्हें उस वन की पूरी जानकारी थी। वे सब कुछ बताते जाते थे।

प्रिय मित्र! जब संध्या हो चली, तब घूमते-फिरते वे एक बड़े मनोहर तालाब पर पहुँचे। उसकी शोभा बरबस मन को हरने वाली थी। धर्मभृत मुनि बताने लगे। बोले,—"प्रिय राम! यह पञ्चाप्सर नामक तालाब है। यह चार कोस लम्बा और चार कोस चौड़ा है। इसे माण्डकर्णि मुनि ने अपने तपोवल से बनाया था। इसके बीच में सुन्दर भवन बनाकर, बहुत समय तक वास किया। वही यह तालाब है।"

प्यारे मित्र! इसी तरह रामचन्द्र जी सीता-लक्ष्मण के साथ दण्डक वन में घूमते रहे। वन के आश्रमों में जाते रहे। तपस्वियों से मिलते रहे। कहीं दस-पाँच दिन तो कहीं महीने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भर ठहरते रहे। इस प्रकार से रहते दस वर्ष बीत चले। फिर वे मुनि सुतीक्ष्ण के आश्रम लौटे। ऋषि ने उनका सस्नेह सत्कार किया। कुछ काल वे वहीं रहे। सुतीक्ष्ण मुनि ने उन्हें अगस्त्य ऋषि से मिलने की राय दी।

सुतीक्ष्ण मुनि बोले,—"प्रिय राम! अगस्त्य मुनि सिद्ध पुरुष हैं। सब के पूज्य हैं। आप लक्ष्मण और सीता के साथ उनके दर्शन कीजिए। यहाँ से दक्षिण की ओर सोलह कोस की दूरी पर अगस्त्य मुनि के भाई का आश्रम है। उसके कुछ और आगे महात्मा अगस्त्य ऋषि का अनुपम पवित्र आश्रम है। एक रात अगस्त्य मुनि के भाई के आश्रम में ही ठहर जाइएगा।"

राम को अगस्त्य ऋषि से दिव्य अस्त्र-शस्त्र की प्राप्ति

प्यारे मित्र! तदनुसार दूसरे दिन प्रातःकाल ही सुतीक्ष्ण मुनि से आज्ञा लेकर, श्रीराम, सीता और लक्ष्मण के साथ अगस्त्य मुनि के आश्रम के लिए चल पड़े। शाम होते-होते अगस्त्य मुनि के भाई के आश्रम पहुँचे। रात्रि में वहीं विश्राम किया। दूसरे दिन प्रातःकाल चल कर, अगस्त्य मुनि के आश्रम पहुँचे। उनके दर्शन किये। अगस्त्य मुनि बहुत प्रसन्न हुए। बोले,—'राम! भले आए। मैं तो बाट ही जोह रहा था। राम के साथ-साथ सीता और लक्ष्मण ने भी उनके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चरण छूकर प्रणाम किया। मुनि ने स्नेह भरी वाणी में आशिष दी। बहुत-बहुत गद्‌-गद्‌ हुए। प्यार से बैठाया। प्रीति से खिलाये-पिलाये। सुन्दर सीख दी। प्यारे मित्र! फिर दिव्य अस्त्र-शस्त्र देते हुए बोले,—

"प्रिय राम! यह बड़ा दिव्य धनुष विश्वकर्मा जी का बनाया हुआ है। इसमें सोना और हीरे जड़े हैं। यह विष्णु जी से मिला था। ये अमोघ उत्तम बाण ब्रह्मा से मिले थे। इनके सिवा ये दोनों अक्षय तरकस इन्द्र से मिले हैं। ये निरंतर उत्तम तीरों से भरे रहते हैं। कभी खाली नहीं होते। इन सभी अस्त्र-शस्त्रों तथा इस उत्तम तलवार को भी लो। इसके मुट्ठे में सोना जड़ा है तथा इसके म्यान भी सोने की ही है। लो—और इनसे राक्षसों का संहार करो।"

रामचन्द्र जी ने सादर सभी अस्त्र-शस्त्रों को लिया। फिर मुनि से बोले,—"मुनीश्वर! कुछ काल वास करने के लिए, मुझे कोई उत्तम स्थान बतलाइए।'

तब अगस्त्य मुनि बोले,—"प्यारे राम! यहाँ से आठ कोस की दूरी पर पंचवटी नामक सुन्दर स्थान है। वहाँ फल-फूल आदि की सुविधा है। आप वहीं पर्ण कुटी बना कर वास कीजिये। वहीं से राक्षसों का संहार भी कर सकेंगे।"

राम का पंचवटी में निवास

प्यारे मित्र! तब राम मुनि को प्रणाम कर, सीता और

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लक्ष्मण सहित पंचवटी के लिए चल पड़े। रास्ते में गीध राज जटायु से भेंट हुई। जटायु राजा दशरथ के मित्र थे। बड़े प्रेम से मिले। स्नेह से बातें की। अपनी और राजा दशरथ की मित्रता की चर्चा की। अपनी जीवन-कहानी सुनाई। फिर राम उनसे बिदा लेकर आगे बढ़े। वे पंचवटी पहुँचे।

प्यारे मित्र! पंचवटी गोदावरी नदी के तीर पर बहुत ही रमणीक वनस्थली है। वहाँ फल-फूल भी पर्याप्त उपलब्ध थे। राम की आज्ञा पाते, लक्ष्मण ने तत्काल सुन्दर पर्ण-कुटी बना ली। राम, लक्ष्मण, सीता—सुख से वहाँ वास करने लगे।

प्यारे मित्र! राम, सीता और लक्ष्मण के साथ, उस पंचवटी की सुन्दर वनस्थली में निर्भय विचरते। प्राकृतिक-दृश्य पान करते। जंगल में भी मगन रहते। प्यारे मित्र! उनके वहाँ रहते, शरद ऋतु बीती। हेमन्त ऋतु (अगहन और पूस) आई। शरदी बढ़ी। नदी और तड़ाग का जल ठंडा हुआ। रात्रि में उनसे धूएँ निकलने लगे। ओस पड़ने लगा। प्रभात बेला धुएँ से आच्छादित रहने लगा। प्यारे मित्र! श्रीराम को यही ऋतु ज्यादा भाती। भीषण शरदी में राम-सीता-लक्ष्मण गोदावरी नदी में प्रभात-बेला में ही स्नान करते।

प्यारे मित्र! अपने प्रिय जनों की याद आया ही करती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

है। एक दिन प्रभात-वेला राम-लक्ष्मण, भरत को याद करने लगे। लक्ष्मण बोले,—"भैया! भरत भी तपस्वी की तरह ही रह रहे होंगे। इसी समय वे भी सरयू के निर्मल धारा में स्नान करते होंगे।"

राम बोले,—"लक्ष्मण! भरत की मधुर स्मृति से चित्त संतप्त हो उठता है। चंचल हो जाता है। वह सुहावना दिन कब आयगा—जब मैं उनसे जा मिलूँगा।"

प्यारे मित्र! गोदावरी में स्नान कर, राम, लक्ष्मण और सीता संध्या-उपासना किया करते। फिर खुशी-खुशी अपने पर्ण कुटी में लौटते।

प्यारे मित्र! सुख के दिन बीतते देर नहीं लगती। देखते-देखते पंचवटी में सुख से रहते राम के कई मास बीत गए। वन के करीब ग्यारह वर्ष काट डाले। तीन ही वर्ष शेष रहे। परन्तु मित्र! आगे के तीन वर्ष दुःख के दिन हैं—जो मुश्किल से कटेंगे। मेरी रचना के पात्र-मेरे आराध्य राम, मैया जानकी और लखन लाल जब आपत्ति में रहेंगे, तब भला मैं कैसे सुख की नींद सो सकूँगा। आँसू बहा-बहा कर ही दिल का भार हलका करूँगा।

मुझे खुशी है कि इस पुण्य राम-कथा में आपकी अभिरुचि है। यह आपके पूर्व जन्म के पुण्य का ही फल है। पूर्व जन्म के अच्छे संस्कारों के उदय होने पर ही धर्मचर्चा में रुचि होती है। तब ही भगवान् के चरणों में प्रीति होती है। पिछली रचनाओं में आपसे बहुत बातें हुई हैं। फिर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

भी जी भरा नहीं। जी चाहता है—आपसे धर्म-चर्चा करता ही रहूँ—अपनी सुनाता रहूँ। आपकी सुनता रहूँ। सुनूँ ज्यादा—बोलूँ कम।

प्यारे मित्र ! अगले पत्र में पंचवटी में शूर्पणखा के आगमन की चर्चा करूँगा। तब-तक के लिए विदा दीजिए। अनन्त शुभ कामनाओं के साथ आपको सादर प्रणाम !

आपका आत्मरूप
गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शूर्पणखा का पंचवटी में आगमन

जमशेदपुर
२८-१०-६८

प्रिय मित्र!

पिछले पत्र में कहता आया हूँ—कि श्रीराम, पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ पंचवटी में सुख से रह रहे थे।

इसी बीच एक दिन लंकापति रावण की बहन राक्षसी शूर्पणखा उनकी पर्णशाला पर आती है। डरावना रूप धर कर सीता को डराती है। बहुत तंग करती है। मना करने पर भी नहीं मानती है। तब राम के संकेत पर लक्ष्मण उसे ताड़ित कर भगाते हैं।

शूर्पणखा को लंकापति रावण की बहन होने का भारी गरूर था। वह अपमानित हो, कुपित हो जाती है।

प्यारे मित्र! शूर्पणखा के भाई खर और दूषण दण्डक वन के जन-स्थान में ही रहा करते थे। खर वहाँ का छोटा-मोटा राजा ही था। शूर्पणखा खर के पास जाती है और बढ़ा-चढ़ा कर बातें बताती है। उसे राम के साथ युद्ध के लिए उत्तेजित करती है। खर बहन के अपमान से क्रोधित हो जाता है। वह अपने चौदह बलवान राक्षस वीरों को राम-लक्ष्मण के वध

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

के लिए भेजता है। शूर्पणखा भी साथ आती है। राम उन्हें सहज में ही मार डालते हैं। शूर्पणखा तुरन्त लौट कर राक्षसों के वध की सूचना खर को देती है।

खर-दूषण-वध

प्यारे मित्र! खर राक्षसों के वध की खबर से उतावला हो जाता है। बहन का अपमान, उसे अब और असह्य हो जाता है। वह चौदह हजार वलिष्ट सेना के साथ राम से लोहा लेने स्वयं चल पड़ता है। उसका भाई दूषण और सेनापति त्रिशिरा सब के सब साथ जाते हैं।

खर की विशाल सेना गगन भेदी गर्जन करती पंचवटी आ पहुँचती है। राम, सीता को लक्ष्मण के साथ पहाड़ की कन्दरा में भेज देते हैं। अकेला ही धनुष-बाण लिए, अपनी पर्ण कुटी के सामने निर्भय खड़े हो जाते हैं।

प्यारे मित्र! खर के साथ विशाल सेना है—तो राम के साथ, उनका आत्मबल है। उनकी आत्म निर्भरता, वीरता और धीरता है। उनका तपोबल है। वे जरा भी विचलित नहीं होते हैं। हिमालय की तरह अटल खड़े रहते हैं। राक्षसी सेना उन पर टूट पड़ती है। चारों तरफ से, धरती से, आकाश से, सर्वत्र से भयंकर बली राक्षस प्रहार करने लगते हैं।

प्यारे मित्र! अजेय राम, सहज भाव से धनुष पर वाण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

संधानते हैं। । शत्रु दल पर तीर बरसाने लगते हैं। सब को मार गिराते हैं। खर और दूषण दोनों भाई मारे जाते हैं। सेनापति त्रिशिरा तथा समस्त राक्षसी सेना भी खेत आती है।

प्यारे मित्र ! वनवासी तपस्वी और देवगण आते हैं। सब के सब राम की जय-जयकार करने लगते हैं। राम नत मस्तक हो, सब को प्रणाम करते हैं। सीता भी लक्ष्मण के साथ गुफा से आ जाती हैं। पति की विजय से फूली नहीं समाती हैं। युद्ध में पति के बेदाग बच जाने से और-और प्रफुल्लित होती हैं। तन पुलकित हो जाता है। नैनों से हर्ष उल्लास के आंसू उमड़ आते हैं। खुशी से कंठ रुँध जाता है। पति को निहारती ही रह जाती हैं—बोल नहीं पातीं।

प्यारे मित्र ! सीता के प्यारे पति राक्षसों की भारी सेना से अकेला लड़ रहे थे। भाई लक्ष्मण भी साथ न थे। ऐसे विकट समय, गुफा में बैठी सीता के मन कैसे-कैसे विचार उठते होंगे—इसकी कल्पना आप स्वयं करें।

सीता-हरण

प्यारे मित्र ! आगे आप सीता-हरण वार्ता सुनिए—

अकम्पन नामक राक्षस दण्डकारण्य जन स्थान से लंकापुरी जाता है और रावण को उनके भाई खर और दूषण की

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

सेना सहित वध की खबर देता है। रावण की बहन शूर्पणखा के अपमान की बात भी कहता है। राम का परिचय देता है। उनकी वीरता भी बखानता है। रावण कुपित हो जाता है। राम पर आक्रमण करने के लिए उतावला हो जाता है।

प्यारे मित्र ! अकम्पन राक्षस रावण को समझाने लगता है। अकम्पन कहता है,—"राजन ! राम महाबली हैं। उनकी वीरता खर-दूषण के साथ लड़ाई में देखी गई है। इससे राजन ! राम को मारने के लिए मुक्ति से काम लीजिए। सो युक्ति मैं ही बताए देता हूँ :—

"राजन ! पत्नी सीता—राम को प्राण से भी प्यारी हैं। उनका वियोग राम न सह सकेंगे। वियोग में निर्बल हो जायेंगे। प्राण ही तज देंगे। आप सीता को उनसे पृथक कीजिए।"

प्यारे मित्र ! रावण को अकम्पन की युक्ति भली लगती है। फिर वह सीता को चोरी से हर लाने पर उतारू हो जाता है।

रावण अकम्पन से बोल उठता है,—'यहो होगा। सीता को हर लाऊँगा। राम को पत्नी-वियोग दुःख से पीड़ित करूँगा।"

प्यारे मित्र ! रावण लंका से तत्काल चल पड़ता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ताड़का-पुत्र मारीच से मिलता है। वही मारीच जिसे राम ने मानवास्त्र से मार कर, महर्षि विश्वामित्र के आश्रम से सौ योजन दूर फेंक डाला था। पर जिन्दा ही छोड़ दिया था।

रावण सीता-हरण की अपनी मनसा मारीच से कहता है। मारीच राम से उलझने से मना करता है। मारीच अन्त में कहता है,—"राजन !आप अपनी सुन्दर-सुन्दर रानियों के साथ महल में रमण कीजिए और राम को अपनी पत्नी के साथ वन में विचरने दीजिए। नाहक रार बेसाह कर राक्षस कुल का नाश न कराइए। पराई नारी का हरण कर कुकर्म न कीजिए।"

प्यारे मित्र ! राक्षस मारीच तपश्चर्या में लग गया था। उसकी बुद्धि सात्विक हो गई थी। रावण को मारीच की बातें भाती हैं। वह लंका वापस चला जाता है।

प्यारे मित्र ! होनी हो कर रहती है। रावण की बहन शूर्पणखा लंका पहुँच जाती है। भाई को दु:खड़ा सुनाती है। खरा-खोटा भी कहती है। रावण क्रोधित हो जाता है। उसकी बदला की भावना प्रबल हो जाती है। रथ में सवार हो, आकाश मार्ग से मारीच के पास पुन: पहुँच जाता है। तपश्चर्या में लीन मारीच, रावण का उचित सत्कार करता है। फिर दुबारा आने का प्रयोजन पूछता है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

तब रावण कहता है,—"तात ! अयोध्या नरेश दशरथ के वनवासी पुत्र राम—पत्नी और भाई के साथ पंचवटी में रह रहा है। जनस्थान में मेरे भाई खर और दूषण रह रहे थे। बहन शूर्पणखा भी उनके साथ रहा करती थी। पहले राम ने मेरे निरपराध बहन शूर्पणखा को अपमानित किया। पीछे खर-दूषण को भी मार डाला। सेनापति त्रिशिरा और राक्षसी सेना को मार गिराया है। इससे मैं बहुत अपमानित और दुःखित हुआ हूँ। राम की पत्नी का अपहरण कर, मैं बदला लेना चाहता हूँ।"

प्यारे मित्र ! मारीच रावण को समझाने लगता है। अपनी बीती सुनाता है। कहता है,—"राजन ! सीता-हरण का विचार त्याग दीजिए। ऐसा कुकर्म न कीजिए। राम से रार भी न वेसाहिए, वरन् राक्षस कुल का नाश हो जायगा। राम अजय हैं। आपके रनिवास में हजारों सुन्दर स्त्रियां हैं उनके साथ सुख से वास कीजिए।"

प्यारे मित्र ! रावण क्रोधित होकर बोल उठता है,—"मारीच ! मैं तुझसे अपना काम कराने आया हूँ। तेरे उपदेश सुनने नहीं आया हूँ। मैं जैसा कहता हूँ—वैसा करो।"

प्यारे मित्र ! रावण को क्रोधित देख कर, मारीच डर जाता है। बोलता है,—"अच्छा ! मैं आपका काम करूँगा।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रावण तब मारीच की सराहना करता हुआ बोला,— "यही वीरोचित वचन है। तुम तुरन्त मेरे साथ रथ पर चलो। मैं तुझे राम के आश्रम के पास उतार दूंगा। तुम सोने का मृग बन कर राम के आश्रम के पास जाना ! सीता को लुभाना। फिर भाग चलना। कोशिश करना जिसमें राम-लक्ष्मण तेरे पीछे चले जायँ। फिर सीता को अकेली पा कर मैं उन्हें बलपूर्वक हर लूँगा।"

प्यारे मित्र ! रावण मारीच को अपने रथ में बिठाकर आकाश मार्ग से राम के आश्रम के लिये चल पड़ा। समीप आने पर रथ जमीन पर उतारा। मारीच सोने के सुन्दर मृग का रूप धरकर राम के आश्रम पर गया और आश्रम के आसपास विचरने लगा। सीता जी उस समय फूल तोड़ रही थीं। उनकी दृष्टि सुनहले मृग पर पड़ी। वे लुभा गईं। बोलीं,—"आर्य पुत्र ! इस सुन्दर सुनहले मृग को पकड़ लाइए। इसे पालूँगी। जिन्दा न आ सके तो मारकर ही लाइए। इसके सुन्दर मृग चर्म रखूँगी।"

लक्ष्मण बोल उठे,—"भैया ! सोने का मृग होना आश्चर्य की बात है। हो न हो मारीच ही वेष बदल कर आया है।" लेकिन सीता जी बहुत ज्यादा लुभा गई थीं। इससे राम बोले—"लक्ष्मण ! तू सीता की रखवाली सावधानी से करना। मैं मृग के लिए जाता हूँ !"

लक्ष्मण बोले,—"जो आज्ञा !"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

प्यारे मित्र ! राम धनुष-बाण लेकर, सुनहले मृग के पीछे चले। मृग भाग चला। राम चहेटते दूर निकल गये। वह कभी दिखाई पड़े, कभी अन्तर्धान हो जाय। राम ने अब उसे पकड़ने का विचार छोड़, मार डालना चाहा। बस, उन्होंने बाण चला ही दिया। मृग के वेष में मारीच को वाण लगा। वह आहत हो राक्षस वेष में गिर गया। गिरते समय—वह राम के ही कंठ स्वर में चिल्लाया,—"हाय लक्ष्मण बचाओ! हाय सीता बचाओ !!"

प्यारे मित्र। मारीच खून से लथ-पथ हो गया। उसके प्राण पखेरू उड़ गए। अब राम को सीता की चिन्ता हुई। वे आश्रम को लौट पड़े।

प्यारे मित्र ! राम के कंठ स्वर में—हाय लक्ष्मण बचाओ, हाय सीता बचाओ—सुनकर माता सीता घबरा गईं। सोचीं,—राम के प्राण संकट में हैं। उन्होंने लक्ष्मण को तुरन्त राम की सहायता में जाने को कहा। लक्ष्मण बोले,—"राम को कोई जीत नहीं सकता। राम महापराक्रमी हैं—अजेय हैं। आप चिन्ता न करें। राम ने आप की रक्षा का भार मुझ पर सौंपा है। मैं राम की अवज्ञा नहीं कर सकता। मुझे क्षमा कीजिए। मैं आपको अकेली छोड़कर नहीं जा सकता।"

प्यारे मित्र ! सीता जी राम के अमंगल की आशंका से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बहुत चिन्तित हो गई थीं। वे लक्ष्मण को डाँटने और फटकारने लगीं। लक्ष्मण भारी संकट में पड़े। न जाते बने, न रहते। सीता व्याकुलता में तीर से तीखे व्यङ्ग भरी बातें कहने लगीं। लक्ष्मण का मर्मस्थल विंध-सा गया। अन्त में सीता को अकेली छोड़ कर, वे राम के पीछे चल पड़े।

प्यारे मित्र ! इधर सीता को आश्रम में अकेली पाकर, रावण साधु वेष में आता है। अपना परिचय लंका-पति रावण बोल कर देता है। अपने वैभव का बखान कर, सीता को पत्नी बनने को कहता है। सीता उसे फटकारती हैं। तब वह बलपूर्वक उन्हें उठा, ले भागता है। सीता विलाप करने लगती हैं। जटायु को बैठे देखती हैं। देखते ही पुकारती हैं। वृद्ध जटायु रावण से लड़ पड़ते हैं। उस पर प्रहार करते हैं। उसके रथ तोड़ देते हैं। सारथी और घोड़ों को मार डालते हैं।

प्यारे मित्र ! रावण जटायु के हाथ-पाँव काट डालता है। जटायु धराशायी हो जाते हैं। रावण सीता को उठा कर, आकाश मार्ग से उड़ जाता है। सीता विलपती हैं। रोती हैं। चीत्कारती हैं। रावण को धिक्कारती हैं। सब विफल होता है। रावण उन्हें ले कर लंका की ओर बढ़ता ही जाता है।

आकाश से ही सीता, पर्वत के एक टोंगरे पर कुछ लोगों

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

को बैठे देखती हैं। सोचती हैं—राम मुझे खोजते इस मार्ग से गुजरेंगे ही। कपड़े में कुछ भूषण बांध कर उन लोगों के पास गिरा देती हैं। रावण सीता को लेकर लंका पहुँचता है।

सीता को पहले अपने अन्तःपुर में ले जाता है। अपना वैभव दिखलाता है। उन्हें रानी बन जाने को कहता है। सीता उसे फटकारती हैं। राम में ही अनुरक्त रहती हैं। तब रावण सीता को अपनी अशोक बाटिका में रखवाता है। उन पर राक्षसियों की कड़ी पहरा बैठाता है। वे सीता को भाँति-भाँति से समझाती हैं। डराती हैं। धमकाती हैं। रावण की पत्नी बन जाने को कहती हैं। सीता एक भी नहीं सुनती हैं। दारुण दुःख सहती हैं। चित्त को राम के चरणों में पिरोये रहती हैं। प्यारे मित्र! माता सीता की करुण व्यथा बताई नहीं जाती। लगता है—प्रभु ने दुःख सहने ही के लिए उन्हें इस भूतल पर भेजा था।

प्यारे मित्र! सीता माता को लंका के अशोक बाटिका में छोड़ कर, दण्डक वन में राम के पास आवें।

राम मारीच को मार कर, अपने आश्रम लौट रहे हैं। रास्ते में अपशकुन होते हैं। सीता के लिए चिन्ता में पड़ जाते हैं। इतने में लक्ष्मण को आते देखते हैं। तब तो और व्याकुल हो जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्री राम, लक्ष्मण से बोल उठते हैं—"लक्ष्मण ! तुझे सीता को अकेली छोड़ कर न आना चाहिए था। रास्ते भर अपशकुन हो रहे हैं। लगता है—सीता का भारी अनिष्ट हुआ है। राक्षसों ने खा ही न लिया हो। निश्चय ही, मेरे स्वर में राक्षस मारीच की आर्तनाद सीता ने सुनी है। फिर तुझे यहाँ आने को विवश किया है। लक्ष्मण ! फिर भी तुझे उसे अकेली छोड़ न आना चाहिए था।"

प्यारे मित्र ! इस प्रकार से लक्ष्मण को कोसते राम आश्रम आते हैं। वहाँ सीता को न पाते हैं। फिर तो व्यथित हो जाते हैं। फिर-फिर लक्ष्मण को कोसने लगते हैं।

प्यारे मित्र ! लक्ष्मण माता-पिता और प्यारी पत्नी को त्याग कर वन में भाई-भौजाई की सेवा करने आए थे। उनके हित अपने सुख-स्वार्थ को न्योछावर किये थे। अनेक कष्ट झेले थे। वन-वन भटके फिरे थे। सीता ने कुछ व्यंग भरी बातें ऐसी कही थीं कि उनका हृदय टुकड़े-टुकड़े हो गया था। राम की आज्ञा भंग करनी पड़ी थी। सीता को अकेली छोड़ जाना पड़ा था। सीता-हरण का दुःख भारी था। ऊपर से कलंक भी उनके माथे था।

व्यथित हृदय से रुँधे कंठ में लक्ष्मण बोले,—"भैया ! मैं अपने मन से नहीं गया। आपके ही स्वर में किसी ने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

कहा,—"हाय लक्ष्मण बचाओ ! हाय सीता बचाओ !! यह ध्वनि सीता के कानों में पड़ी । वे व्यथित हो उठीं । रोती हुई बोलीं,—लक्ष्मण ! जाओ ! जाओ !! शीघ्र जाओ !!!

उन्हें धीरज बँधाते हुए मैंने कहा,—"देवि ! विश्व में ऐसा कोई नहीं जो भैया राम को संकट में डाल सके । निश्चय ही यह किसी दूसरे की बोली है । इसमें भारी छल है । 'मुझे बचाओ' यह कायरता पूर्ण बात सर्वशक्तिमान भैया के मुँह से नहीं निकल सकती । देवी ! आप शाँत होवें ।"

पर वे बार-बार मुझे जाने को ही कहती गईं ! मेरी एक न सुनीं । अब तो मैं अवाक खड़ा रहा । मुझे न जाते देख, सीता दुःख और रोष से काँप उठीं । करुण क्रन्दन कर रोष भरी वाणी में बोलीं—

"लक्ष्मण, आज मुझे तेरी नीयत का पता चला । अवश्य ही तू भरत के षड़यंत्र से साथ आया है । राम को संकट में डाल उनके प्राण लेकर, मुझे पाना चाहता है । सो तू निश्चय जानो, राम के बिना मैं जी न सकूँगी । तू कभी भी मुझे पा न सकोगे ।"

भैया ! जिस सीता को मैं मातृवत् मानता आया, उनके मुँह से—इतने गंदे दुर्वाक्य सुनते ही मेरा हृदय विदीर्ण हो गया । मैं रोष और दुःख से आकुल-व्याकुल हो आपके पास तत्क्षण चल पड़ा ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्यारे मित्र ! राम बोले,—"लक्ष्मण ! फिर भी नारी के क्रोध भरे बचन पर, तेरा इस प्रकार से चला जाना उचित न था। मुझे तेरे बचनों से सन्तोष न हुआ।"

प्यारे मित्र ! अगले पत्र में राम-लक्ष्मण सीता की खोज करेंगे। हम दोनों भी उनके पीछे-पीछे चलेंगे। हम लोग तो माता सीता को लंका की अशोक बाटिका में बैठा आए, लेकिन राम-लक्ष्मण को अभी कहाँ पता। वे तो वन-वन भटकेंगे। खोजेंगे। ढूढेंगे। विलपेंगे। सो सब अगले पत्र में। मित्र ! अब विदा दीजिए। जब मेरे आराध्य देव राम, मैया सीता और लखन लाल जी संकट में हैं—रोते विलपते हैं—तो मैं कैसे सुख से रह पाऊँगा। मेरे प्यारे मित्र ! सच मानिए—उनके साथ मैं भी विलपता हूँ। आँसू बहाता हूँ। ऐसे भी रचना के पात्र आत्मीय जन हो जाते हैं। उनके सुख में सुख, उनके दुःख में दुःख अनायास ही होता है।

प्यारे मित्र ! प्रारब्ध बली होता है। उसके आगे किसी का बस नहीं चलता है। वह अपना प्रभाव डाले बिना नहीं रहता। और जैसी भवितब्यता होती है; बुद्धि भी वैसी ही हो जाती है। परिस्थिति भी अनुरूप ही बन जाती है। सोने का मृग—न देखा गया—न सुना गया। फिर भी नीति-कुशल पुरुषोत्तम राम सोने के माया मृग के पीछे दौड़ गए। सीता जैसी आदर्श सती नारी कटु से कटु ओछी बात बोल गईं। प्रारब्ध ने सब की मति फेर दी।

प्यारे मित्र ! हमारे आपके जीवन में भी अब तक जो कुछ घटित हुआ है—समझिए, प्रारब्धवश ही। उनके लिए न चिन्ता करें न हर्षोल्लास हो। उनके बारे में सोचें ही नहीं। खुशी-खुशी जीवन-पथ पर आगे बढ़ते जायँ।

प्यारे मित्र ! जरा विचार कीजिए—राम के राज्याभिषेक का लगन ब्रह्मर्षि वशिष्ठ जैसे पंडित ज्ञानी ने विचारा था। उत्तमोत्तम मुहूर्त

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

निश्चित किया था। फिर भी भारी विघ्न पड़ा। प्रारब्ध न टल सका। राम का राज्याभिषेक हो न सका। उन्हें वन जाना पड़ा। राजा दशरथ को प्राण गँवाने पड़े। वन से भी सीता हरी गईं। एक पर एक विपत्ति आती गई—

प्यारे मित्र ! इसी को कबीर दास की वाणी में सुनिए :—

करम गति टारे नाहि टरी,
मुनि वशिष्ठ से पंडित ज्ञानी, सोध के लगन धरी ॥
सीता-हरण मरण दशरथ की वन में विपत्ति परी।
कँह वह फंद कहाँ वह पारधि कँह बहु मिरग चरी ॥
सीया को हरि लैगो रावन सुवरन लंक जरी।
नीच हाथ हरिचंद बिकाने बलि पाताल धरी ॥
कोटि गाय नित पुन्न करत नृप गिरगिट जोन परी।
पांडव जिनके आपु सारथी तिन पर विपत्ति परी ॥
दुरजोधन को गरब घटाओ जदुकुल नाश करी।
राहु केतु औ भानु चन्द्रमा विधि संजोग परी ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो होनी होके रही।

प्यारे मित्र ! पवित्र राम-कथा सुन्दर नीति और सीख से भरी है। उसके हर स्थानों पर जीवनोपयोगी उपदेश मिलते हैं। आवश्यकता है—उन्हें समझने और जीवन में उतारने की। आप पढ़ने के साथ-साथ विचारते भी जायँ। इसके अनमोल उपदेशों को जीवन में उतारते भी जायँ। तभी पढ़ना सफल। ऐसे भी राम-कथा की चर्चा में लगे रहने से धीरे-धीरे मन का मैल धुलेगा ही। काया की काई छूटेगी ही।

वास्तव में, मेरे मित्र ! बिना राम-कृपा के राम के चरणों में प्रीति नहीं होती और जब तक जन्म जन्मान्तर के अच्छे संस्कार उदय नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

होते,—उनकी कृपा भी नहीं होती। निश्चय ही आपके पूर्व जन्म के अच्छे संस्कार उदय हुए हैं। तभी राम चर्चा में प्रीति हुई है। आपका मंगल होगा। जगन्नियन्ता ने आपको शक्ति भी प्रचुर दी है। आपकी बुद्धि भी प्रखर है। सात्विक है। आप अपनी प्रभु दत्त शक्ति का सदुपयोग करें। देखें, जीवन का एक पल भी व्यर्थ न जाय। सदा लोक-हित का ध्यान रखें।

हमारी सद्भावनाएँ सदा आपके साथ रही हैं और रहेंगी ही।

आपका आत्मरूप

गणेश

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

सीता की खोज

जमशेदपुर
२६-१०-६८

प्यारे मित्र !

सादर प्रणाम !

राम-लक्ष्मण, सीता की खोज आतुरता से करने लगे। आश्रम के आस-पास की वनस्थली छान डाली। पर सीता न मिलीं। राम तरह-तरह से विलाप करने लगे। सीता के गुणों का गान कर—उनके रूप-स्वभाव का वर्णन कर-कर रोने-विलपने लगे।

प्यारे मित्र ! राम पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों से भी सीता की सुधि पूछते हैं। उन्हें प्यारी सीता का वियोग असह्य हो जाता है। सीता के क्लेशों की चिन्ता से बेचारे पागल-सा हो जाते हैं। ऊँट-पटाँग बकने लगते हैं। कहते हैं,—"सब तो सब—देवताओं ने भी सीता की सहायता न की। मैंने दुनिया की बेवफाई देख ली। मैं भी दुनिया को दिखला दूँगा। अब तक के प्राप्त दिव्य अस्त्र-शस्त्रों से पृथ्वी को रसातल पहुँचा दूँगा।"

प्यारे मित्र ! तब लक्ष्मण बोले,—"भैया ! धीरज धरिए। हिम्मत से काम लीजिए। संकट में घबराने से काम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

न बनेगा। जिस पापी ने सीता को हरा है, पहले उसका पता लगाना है। फिर उससे निबटना है। उस एक के अपराध के कारण दुनिया को मिटाने की बात क्यों कर रहे हैं! ऐसे विचार मन में क्यों आने दे रहे हैं!! अब तक आप मुझे समझाते आए हैं। सदा सुन्दर सीख देते रहे हैं। आज मुझे समझाना पड़ता है।"

प्यारे मित्र! तब राम ने अपने को सँभाला। सीता की खोज में दक्षिण की ओर बढ़े।

सन्त जटायु से भेंट

खोजते-खोजते राम-लक्ष्मण जटायु के पास पहुँचे। जटायु अन्तिम साँस ले रहे थे। उनका शरीर खून से लथ-पथ था। जटायु लड़खड़ाती धीमी आवाज में बोले,—"प्रिय राम! सीता को लंका का राजा रावण हर ले गया है। जब वह लिए जा रहा था—सीता विलाप कर रही थीं। देखते ही मैं रावण से भिड़ गया। युद्ध में उसके सारथी व घोड़ों को मार डाला। अन्त में उस दुष्ट ने अपने शस्त्रों से मुझे घायल कर डाला। मैं आहत हो भूमि पर पड़ गया। तब वह सीता को उठा कर, आकाश मार्ग से दक्षिण की ओर चला गया। प्रिय राम! रावण के टूटे रथ, मरे घोड़े और सारथी की लाश ओ पड़ी है।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्यारे मित्र ! राम का हृदय श्रद्धा और दुःख से भर आया। वे जटायु का बदन सहलाने लगे। जटायु उनके पिता के मित्र थे। उनके काम आये थे—इससे उनका हृदय जटायु के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता से भर आया। प्यारे मित्र ! देखते-देखते जटायु के प्राण निकल गये। राम को भारी शोक हुआ। उन्होंने जटायु का दाह संस्कार किया। गोदावरी में स्नान कर जलाञ्जलि दी। फिर सीता की खोज में आगे बढ़े।

जन स्थान से तीन कोस दूर, क्रौंच वन पहुँचे। वह बड़ा ही दुर्गम वन था। तीन कोस पूर्व जाकर क्रौंच को पार किया। अब मतङ्ग मुनि के आश्रम के पास पहुँचे। सीता जी को ढूंढ़ते एक गुफा के पास पहुँचे। वहाँ एक विशाल-काय राक्षसी पड़ी मिली। उसने लक्ष्मण को पकड़ लिया। छुड़ाये न छोड़े। तब लाचार हो, अन्त में लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट डाले। औरत जान, जान न ली। फिर तो बहुत रोती भाग खड़ी हुई।

कबन्ध-वध

राम-लक्ष्मण तेजी से आगे बढ़े। अति सघन वन में पहुँचे। रास्ते में कबन्ध नामक राक्षस से भेंट हो गई। कबन्ध का शरीर बड़ा विचित्र था। पेट में ही मुंह था। छाती में ही ललाट था। ललाट में बड़ी-बड़ी डरावनो आँखें थीं। वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अपनी जीभ को बराबर लपलपाते रहता। मित्र ! बड़ी ही भयावनी उसकी सूरत थी।

कवन्ध आकर, राम-लक्ष्मण से भिड़ गया। दोनों भाइयों ने तलवार से उसकी दोनों बाहें काट डालीं। कबन्ध धराशायी होकर बोला,—"वीरवर राम ! पहले मेरा शरीर बहुत सुन्दर था। मैं पराक्रमी था, लेकिन बड़ा उपद्रवी था। डरावना रूप धर कर, मैं ऋषि-मुनियों को डराया करता था। एक बार स्थूलसिरा नामक मुनि को यही रूप धर कर डराने गया। वे जान गये। कुपित हो बोले,—"दुष्ट मैं जानता हूँ कि तू दनु का पुत्र है। मुझे डराने के लिए यह भयावह रूप धारण किया है। जा, तू सर्वदा इसी डरावने रूप में रहेगा।"

तब तो मुनि के शाप से भयभीत होकर, मैंने उनकी बहुत प्रार्थना की। तब मुनि कृपा कर बोले,—"त्रेता-युग में दशरथ नन्दन राम-लक्ष्मण जब तेरे दोनों भुजाओं को काट देंगे—तब तू शाप से मुक्त हो जायगा। इस शरीर के भस्म हो जाने पर, तू पुनः अपना रूप पा जायगा। भगवन् ! इस प्रकार से आज मैं शाप से मुक्त हुआ। भगवन् ! मेरे मृतक शरीर को जला कर भस्म कर दें। तब मैं सुन्दर शरीर और दिव्य ज्ञान प्राप्त कर लूँगा।"

प्यारे मित्र ! इतना कहते-कहते कबन्ध की मृत्यु हो

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

गई। उसके मृतक शरीर को, सूखी लकड़ी इकट्ठा कर राम-लक्ष्मण ने जला डाला। शरीर के भस्म होते ही कबन्ध सुन्दर नव युवक बन खड़ा हो गया और प्रणाम कर राम से बोला,—"भगवन्! मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ। मेरे लायक कोई सेवा बतलाइए!"

तब राम बोले,—"मेरी प्यारी पत्नी सीता सूने आश्रम से हरी गई है। पता नहीं चलता। सीता का पता लगाने की युक्ति बताओ!"

तब कबन्ध सुन्दर नवयुवक के रूप में बोला,—"भगवन्! भाग्य के चक्र से आप और लक्ष्मण अनेक कष्ट झेल रहे हैं। राज छूटा, वनवास हुआ। वन-वन भटकते फिरे। वन में सीता हरी गई—ये सब भाग्य-चक्र के चलते ही हुआ। आप अभी विपत्तियों में फंसे हैं। ऐसे समय आप को उत्तम मित्र प्राप्त करना चाहिये।

भगवन्! पम्पासर के पास ऋष्यमूक पर्वत पर बालि का भाई सुग्रीव रहता है। उसके भाई बालि ने उसे राज्य से निकाल दिया है। वह बड़ा विश्वासी है। उसके पास कपि सेना भी है। आप ऋष्यमूक पर्वत पर जाइए और सुग्रीव से मित्रता कीजिए। वह अवश्य ही सीता की खोज कराएगा।

भगवन्! वहीं शबरी का आश्रम है। वह आप की सच्ची पुजारिन है। आपके दर्शन के लिए ही जी रही है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आपके दर्शन कर, स्वर्ग चली जायगी! भगवन्! उसे भी जा कर, दर्शन दीजिए। पम्पासर बहुत रमणीक स्थान है। वहाँ अपना दुःख भी भूल जाइएगा।"

प्यारे मित्र! इसी बीच आकाश से दिव्य रथ उतरा। कबन्ध उस पर सवार होकर स्वर्ग चला गया। जाते-जाते कहता गया—भगवन्! शीघ्र ही सुग्रीव से मित्रता कर, सीता की खोज कराइए। राम-लक्ष्मण ने भी उसका अभिनन्दन किया।

राम-लक्ष्मण शबरी के आश्रम में

प्यारे मित्र! कबन्ध के कथनानुसार राम-लक्ष्मण पम्पासर के लिए चल पड़े। घन-घोर जंगल, बीहड़ पहाड़-घाटियाँ पार करते पम्पासर पहुँचे। पम्पासर के निर्मल जल में स्नान किया। रात में एक पर्वत शिखर पर विश्राम किया। दूसरे दिन सबेरे पम्पासर के पश्चिम तट पर गए। वहाँ से तपस्विनी शवरी के आश्रम पधारे। शवरी राम-लक्ष्मण के दर्शन कर बहुत खुश हुई।

विधिवत् उनका सत्कार किया। बोलीं,—"श्री राम! आपके दर्शन की आस बहुत दिनों से लगी थी। आज मैं धन्य-धन्य हो गई। मेरे सकल मनोरथ पूरे हुए। अब तक आपके दर्शन के लिए ही प्राण रखी हुई थी। मेरे गुरुजनों ने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

कहा था—कि आप मेरे आश्रम पर पधारेंगे। लक्ष्मण सहित मेरे अतिथि होंगे।

प्यारे मित्र! तपस्विनी शवरी बहुत दिनों से राम-लक्ष्मण को खिलाने के लिए मीठे-मीठे वन-फल रखती आ रही थीं। बड़े स्नेह से राम-लक्ष्मण को शवरी खिलाने लगीं। स्नेह भरी बातें करने लगीं। राम के प्रेम में विभोर हो गईं। तन की सुध-बुध न रही। भक्त-वत्सल राम भी प्रेम में गद्-गद् हो गए। बड़े चाव से शवरी के वन-फल खाए। फिर शवरी ने मतङ्ग वन दिखलाया। तपस्विनी शवरी बोली,--"प्रिय राम! जिस आपके दर्शन के लिए जी रही थी–वह पूरा हो गया। आप मुझे इस लोक से उठने की अनुमति दीजिए।"

राम बोले,—"देवि! तूने मेरी आराधना विधिवत् की है। तेरी साधना पूरी हुई। अब तू अपने अभीष्ठ लोक को जा।"

प्यारे मित्र! शवरी योगाग्नि में प्रवेश कर, राम-लक्ष्मण के देखते-देखते दिव्य लोक को चली गई।

प्यारे मित्र! अरण्य काण्ड की भी वार्ता समाप्त हुई। अगले पत्र में किष्किन्धा काण्ड की होगी।

प्यारे मित्र! नारी बेचारी श्रद्धा की, भक्ति की, करुणा की, वात्सल्य और प्रेम की साक्षात मूर्त्ति ही है। सेवा ही उसके जीवन का व्रत है। हमें उसकी रक्षा हर कीमत पर करनी चाहिए। तभी हम फलते-फूलते रहेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्यारे मित्र ! धन्य हैं संत जटायु, जिन्होंने नारी की रक्षा के लिए अपने प्राण गवाएँ। अपने प्राणों की परवाह किए बगैर निहत्थे महा पराक्रमी रावण से भिड़ गए। नारी की रक्षा में जूझ गए। मर कर स्वर्ग सिधारे। अमर कीर्ति छोड़ गए। रामायण के पाठक जटायु से स्त्री-रक्षा की प्रेरणा पावें। कर्त्तव्य-पथ पर जूझ मरना उनसे सीखें।

प्यारे मित्र ! राजा दशरथ का दाह-संस्कार ज्येष्ट पुत्र: राम के हाथों न हो पाया। पर जटायु का दाह-संस्कार राम ने स्वयम् किया ! मित्र ! तर गए भक्त जटायु। कर्त्तव्य-पथ पर मर मिटने वाले भक्त जटायु की जय ! भक्त वत्सल सिया राम की जय !! सब संतन की जय !!!

प्यारे मित्र ! आज की कथा विसर्जन होती है। प्रसाद रूप में स्त्री-रक्षा एवं कर्त्तव्य-परायणता का व्रत लेवें। प्यारे मित्र ! कर्त्तव्य-पथ पर मर मिटने को उद्यत रहें।

आपका आत्मरूप

गणेश

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

किष्किन्धा काण्ड

राम-सुग्रीव मित्रता और वालि-वध

जमशेदपुर
३०-१०-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम !

पिछले पत्र में, अरण्य काण्ड की चर्चा समाप्त हुई। आज किष्किन्धा काण्ड की करनी है। अरण्य काण्ड में हम दोनों ने जंगल की खूब सैर की है। नदी, पहाड़, वनचर जीव-जन्तु खूब देखे हैं। उमड़ती मन्दाकिनी नदी कई बार पार किया। गोदावरी में स्नान किया। पञ्चाप्सर तथा पम्पा-सर जैसे सुन्दर निर्मल जल वाले मन मोहक तड़ागों को, देख-देख नैना जुड़ाए। उनमें नहा-नहा तन के साथ मन का मैल भी धोया, पर कल्पना में ही। प्रभु कृपा से कभी सच-मुच भी नहा लेंगे।

प्यारे मित्र! शरभङ्ग मुनि, सुतीक्ष्ण मुनि, अगस्त्य मुनि तथा उनके भाई के पवित्र आश्रम देखे। उन देव तुल्य ऋषियों के दर्शन कर-करके कृत्य-कृत्य हुए। दण्डकारण्य के भिन्न-भिन्न आश्रमों में गए। तपस्वियों के अतिथि बने। कहीं पांच दिन, कहीं दस दिन, कहीं पन्द्रह दिन तो कहीं महीने दो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

महीने तो कहीं पाँच-दस महीने ही श्री राम, जानकी और लखन लाल जी के साथ टिके रहे। तपस्वियों के दर्शन कर-कर हियरा हर्षाये। जीवन सफल बनाये।

प्यारे मित्र ! पंचवटी की मनोहर छटा भी खूब देखी। उस सुन्दर वनस्थली में, राम-लक्ष्मण और मैया सीता की प्रतिच्छाया बन कर, खूब बिचरे। वन की शोभा भर पूर देखी। फिर देखी दुःखद घटनाएँ—विराध, खर-दूषण, त्रिशिरा, कबन्ध आदि अनेक राक्षसों का अपने आराध्य श्री राम द्वारा वध।

प्यारे मित्र ! राम लक्ष्मण और सीता की प्रतिच्छाया बन कर, पंचवटी में सुख से अरसे तक वास किया। सुख के बाद वहीं दुःख के दिन भी आये। शूर्पणखा विपत्ति बन कर, आई। स्वयं अपमानित हुई। हमें भी खूब रुलाई। खर-दूषण राम की भीषण लड़ाई कराई। राम रावण को भिड़ाई। सीता का अपहरण कराई—मित्र! क्या-क्या न कराई !

प्यारे मित्र ! सीता वियोग में, राम को वन-वन विलपते भी देखा। जटायु की मृत्यु भी देखी। पम्पासर गए। मतङ्ग वन देखा। शवरी के दर्शन किए। उनके स्नेह भरे, वात्सल्य प्रेम से सराबोर मधुर वचन सुने। उनके मीठे फल चखे।

प्यारे मित्र ! जब सीता मैया लंका की अशोक वाटिका

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

में बन्दी रहें—अपने आराध्य देव राम, पत्नी वियोग में वन-वन भटकें, जारो बेजार रोवें—फिर अपने राम को चैन कहाँ ! नींद कहाँ !! भूख-प्यास कहाँ !!!

अब आइए—राम-लक्ष्मण के पीछे-पीछे चल सीता मैया की खोज करें। प्यारे मित्र ! लगता है, आज हमारे-आप-दोनों के भाग्य उदय हुए हैं। थोड़ी देर में ही, भक्त-वर हनुमान दर्शन देने वाले हैं। आइए, विषय प्रसंग पर। जल्दी-जल्दी आगे बढ़ भक्तवर हनुमान के दर्शन करें।

प्यारे मित्र ! राम-लक्ष्मण, शवरी-आश्रम से निकले। ऋष्यमूक पर्वत की ओर बढ़े। कपि राजा सुग्रीव की खोज में, मतङ्ग वन में भ्रमण करने लगे। सुग्रीव अपने मतङ्ग आश्रम से बाहर, पर्वत के कंगूरे पर अपने मंत्री आदिकों के साथ बैठे थे। दूर से ही राम-लक्ष्मण को धनुष-वाण लिए अपने आश्रम की ओर आते देखा। सोचा—कहीं वालि ने ही न उसे मारने के लिए उन्हें भेजा हो। घबराया। उनके कुशल मंत्री हनुमान जी भी वहीं थे। वे बोले,—"राजन ! जाकर पता लगाना चाहिए—कि ये धनुष-वाण-धारी वीर तपस्वी वेष में कौन हैं ?"

तब सुग्रीव की अनुमति से, वीरवर हनुमान, व्राह्मण-वेष में राम-लक्ष्मण के पास गए। उन्हें प्रणाम कर बोले,—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"तपस्वी वेश में धनुष-वाण लिए आप दोनों कौन हैं ? किस लिए वन में फिर रहे हैं ? किस काम से इस घन-घोर बोहड़ जंगल बीच आए हैं ?"

प्यारे मित्र ! कुछ उत्तर न पाकर—हनुमान जो अपना परिचय देते हुए कहते गए—"कपि-राज सुग्रीव अपने भाई वालि द्वारा बुरी तरह सताए जा रहे हैं। वे वालि के डर से इस ऋष्यमूक पर्वत पर—मारे-मारे फिर रहे हैं। मैं उन्हीं सुग्रीव का मन्त्री हूँ। हनुमान मेरा नाम है। पवन का पुत्र हूँ। मैं स्वेच्छा रूप धरता हूँ। अपने राजा सुग्रीव की आज्ञा से आया हूँ। कपि-राज सुग्रीव आप से मित्रता करना चाहते हैं।"

प्यारे मित्र ! इतना सुनकर राम ने लक्ष्मण को हनुमान से बातें करने को कहा। तब लक्ष्मण बोले,—"प्रिय हनुमान ! हम लोग सुग्रीव की प्रशंसा सुन चुके हैं। उनको ही ढूँढ़ रहे हैं। हम लोग भी उनसे मैत्री करना चाहते हैं।"

प्यारे हनुमान ! ये जगत विख्यात अयोध्या नरेश के ज्येष्ट पुत्र हैं। रामचन्द्र इनका नाम है। मैं इनका छोटा भाई हूँ। लक्ष्मण मेरा नाम है। ये राज्य-लक्ष्मी पा रहे थे—लेकिन कुछ ऐसी बात हुई कि उससे वञ्चित होकर, इन्हें वन में वास करना पड़ा। इनकी पत्नी और मैं साथ आया। वन में भाई

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

की पत्नी को सूने आश्रम से मनमाना रूप धरने वाला कोई राक्षस हर ले गया है। हरण करने वाला राक्षस कौन है और कहाँ है ?—इन सारी बातों का ठीक-ठीक पता नहीं चलता। दनु नामक दैत्य (कबन्ध) से मालूम हुआ कि सुग्रीव, भाई की पत्नी का पता लगा सकेंगे। तब हम लोग सुग्रीव को ढूँढ़ते यहाँ आ पहुँचे हैं।

प्यारे मित्र ! तब हनुमान बोले,—"सुग्रीव का भाई वालि शत्रु हो गया है। सुग्रीव वालि के डर से इधर-उधर भागे फिर रहे हैं। वे भी मैत्री करना चाहते हैं।"

प्यारे मित्र ! इतना सुनकर लक्ष्मण जी बहुत खुश हुए। हनुमान जी को गले लगा लिया। हनुमान जी खुशी में गद्-गद् हो गए। राम-लक्ष्मण को ऋष्यमूक पर्वत पर ले गए। दोनों भाइयों को वहीं बैठा कर, आप सुग्रीव के पास मलय पर्वत पर गए। सुग्रीव से सब वृतान्त कहा। फिर उन्हें राम-लक्ष्मण के पास लिवा लाए। उनसे परिचय कराया। सुग्रीव ने राम की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया। राम ने सुग्रीव का हाथ पकड़ कर मित्र रूप में आलिङ्गन किया। फिर राम-सुग्रीव ने सच्चे मित्र बने रहने की शपथ अग्नि-ज्वाला के सामने खाई। सुग्रीव ने सीता की खोज कराने की प्रतिज्ञा की। राम ने वालि को मार कर, सुग्रीव को किष्किन्धा का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राजा बनाने का वादा किया। दोनों ने, दोनों के गाढ़े में काम आने की प्रतिज्ञा की।

फिर सुग्रीव दुःखी मन से, अपने भाई वालि से शत्रुता होने का कारण बताने लगे :—

सुग्रीव बोले,—"मित्र! बचपन से वालि और मुझमें बहुत स्नेह था। पिता की मृत्यु के बाद ज्येष्ठ भाई होने के नाते वालि राजा बना। मैं उसका अनुचर-सा रहने लगा। राक्षस दुंदुभी के भाई मायावी से, उसकी स्त्री के चलते वालि की शत्रुता हो गई। एक रात मायाबो ने किष्किन्धा में आकर, वालि को युद्ध के लिए ललकारा। वालि उसके पीछे दौड़ पड़ा। मैं भी वालि के पीछे-पीछे गया। हम दोनों भाइयों को देखकर, मायावी भाग चला। चाँदनी रात में हम लोग उसका पीछा करते-करते दूर निकल गए। वह भय के मारे, एक गुफा में घुस गया।

मुझे बाहर बैठे रहने को कह वालि भी गुफा में घुसा। मैं साल भर बैठा रहा पर वालि न लौटा। गुफा से राक्षस के गर्जन की आवाज आई। खून-फेन बाहर आए। तब मैंने सोचा—भाई वालि मायावी द्वारा मारा गया। मैं बहुत दुःखी हुआ। गुफा के द्वार पर एक चट्टान रख, दुःखी मन किष्किन्धा लौटा। कई दिनों तक दुःखद घटना छिपाए रखा। बाद में

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

मालूम हो जाने पर, लोगों ने मेरा राज्याभिषेक कर दिया। मैं राज-काज देखने लगा।

मित्र ! इसी बीच वालि मायावी को मारकर, गुफे के ऊपर से चट्टान को हटाकर, बाहर आया। मुझे बाहर न पाकर क्रुद्ध हुआ। किष्किन्धा आने पर, मुझे राजा बना देखकर, उसका क्रोध और चढ़ गया। गुफा द्वार पर चट्टान रखने, मेरा वहाँ से हट जाने तथा राजा बन जाने से उसने मुझे अपना शत्रु समझ लिया। लोगों से इस घटना की चर्चा करते हुए,—उसने कहा कि वह साल-भर तक मायावी से गुफे में लड़ता रहा। अन्त में उसे मार डाला। फिर गुफे से बाहर आने लगा तो उसका द्वार चट्टान से बन्द पाया। सुग्रीव सुग्रीव बहुत पुकारा। कोई जवाब न मिला। तब गुफा द्वार से चट्टान को हटा कर, बाहर आया। मित्र ! उसने मेरी बड़ी निन्दा की और मेरा सब कुछ छीन कर–खाली हाथ मुझे किष्किन्धा से निकाल दिया। तब से उसके डर से भागे-भागे फिरता हूँ।

वालि मेरी जान लेने की भी कोशिश करता रहता है। शापवश वह इस पर्वत पर नहीं आ सकता। इसीलिए यहाँ रह रहा हूँ।

प्यारे मित्र राम ! वालि महाबली है। बड़े-बड़े चट्टानों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

को उठा कर गेंद की तरह फेंक देता है। उनसे खेला करता है। बलवान से बलवान को भी युद्ध के लिए ललकारा करता है। उन्हें पछाड़ देता है।"

प्यारे मित्र ! लक्ष्मण को लगा— शायद सुग्रीव को शंका हो रही है कि राम वालि को मार सकेंगे भी। तब लक्ष्मण बोले,—"सुग्रीव ! आप को कैसे विश्वास होगा कि भैया राम वालि को मार सकेंगे।"

तव सुग्रीव बोले,—"तालाब के किनारे-किनारे ये सात ताड़ के वृक्ष हैं। इनमें एक-एक को वालि बेधा करता था। अगर राम एक को भी बेध देते तो वालि-वध का विश्वास मुझे हो जायगा। ऐसे तो मित्र राम के पराक्रम में मुझे पूर्ण विश्वास है ही।"

प्यारे मित्र ! तब रामचन्द्र जी ने एक ही वाण में वृत्ताकार लगे सातों ताड़ वृक्षों को बेंध डाला। वाण बेंध कर तरकस में वापस आ गया। सुग्रीव का जी खुशी से भर आया। वालि-वध का विश्वास हो आया। बोले,—"अच्छा हो कि वालि का वध आज ही हो जाय !"

तब राम बोले,—"अच्छा ! हम लोग अभी किष्किन्धा चल दें। सुग्रीव आप आगे बढ़ युद्ध के लिए वालि को ललकारें।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

प्यारे मित्र ! सुग्रीव ने आगे बढ़ कर, युद्ध के लिए वालि को ललकारा। वालि गरजता हुआ निकला। सुग्रीव पर टूट पड़ा। मुष्टि प्रहार से सुग्रीव को अधमरा कर डाला। सुग्रीव प्राण बचा भाग चले। तब राम वालि से भिड़ गए और एक ही वाण में मार गिराया।

पुत्र अंगद के लिए वालि का राम से अनुरोध

वालि बोला,—"राम ! मेरे जैसे पापी को मार कर आप ने अच्छा ही किया।"

फिर वालि जैसे-तैसे लड़खड़ाती जबान में बोला,—"राजन ! मुझे अपने मरने का सोच नहीं है। पत्नी तारा के लिए भी चिन्ता नहीं ! मैं अंगद को, आप को सौंप जाता हूँ। उसकी भली भांति रक्षा करेंगे। वह अभी अनाड़ी है।"

प्यारे मित्र ! तब राम बोले,—"कपि-राज ! मैं अंगद को पुत्र की तरह मानता रहूँगा।"

प्यारे मित्र ! इतने में वालि की स्त्री तारा, पुत्र अंगद आदि वालि के अन्तिम दर्शन के लिए दौड़ पड़े। तारा विलाप करती, भूमि पर पड़े घायल पति से लिपट गई। चीत्कार करती रोने-विलपने लगी। उसके करुण-क्रन्दन से सभी शोकाकुल हो गए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्यारे मित्र ! राम-लक्ष्मण, सुग्रीव आदि पास में ही बैठे थे। हनुमान जी तारा को समझाने लगे। बोले,—"देवि ! एक-न-एक दिन मृत्यु तो सब की आती ही है। अब आप आगे की सोचें। अंगद के मंगल की कामना करें।"

फिर वालि—भाई सुग्रीव से बोला,—"सुग्रीव ! पापवश मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी। इससे तुझे बहुत सताया है। तू मुझे माफ कर देना। अब तो मैं मर रहा हूँ। तू अंगद को पुत्रवत् मानना। तेरी भाभी तारा विदुषी और नीति को जानने वाली है। सदा उचित बोलने वाली है। राज-काज में तारा की राय लेते रहना।

राम का भी काम शीघ्र कर देना; नहीं तो वे तुझे भी मार देंगे। वे महाबली हैं।

और भाई ! तू अब मेरी दिव्य माला को लो।" प्यारे मित्र ! इतना कहते हुए वालि ने अपनी दिव्य माला सुग्रीव को दे दी।

प्यारे मित्र ! वालि की बातें सुनकर, सुग्रीव का भ्रातृ-प्रेम उमड़ पड़ा। वह रो पड़ा।

अंगद वालि के पास खड़े रो रहे थे। वालि अंगद से बोला,—"बेटा ! तू सदा अपने चाचा सुग्रीव के कहने में रहना। उनकी अवज्ञा कभी न करना। उनका अहित करने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

वालों की संगति में न जाना। न तू किसी से बहुत ज्यादा प्रीति करना, न किसी से रूखा बर्ताव ही करना। दोनों ही दुःखदाई हैं।"

प्यारे मित्र! इतना कहते-कहते वालि के प्राण निकल गए। तारा चीत्कार कर भूमि पर बेहोश पड़ गई। अंगद अनाथ की नाईं फूट-फूटकर रोने लगे। सुग्रीव भी अब अपने को रोक न सके। वैर-भाव भूल कर सिसकियाँ भरने लगे।

प्यारे मित्र! तब राम ने सुग्रीव, तारा, अंगद आदि को भाँति-भाँति से समझाया और धीरज बँधाया। वालि का दाह-संस्कार कराया।

फिर राम सुग्रीव से बोले,—"कपिराज! सावन मास बीत रहा है। बरसात शुरू हो गई है। सर्वत्र पानी भर आया है। राह-बाट बन्द हो गए हैं। आप अभी किष्किन्धा जाइए। अपना राज्याभिषेक कराइए। अंगद को युवराज बनाइए। मैं बरसात भर इसी पर्वत पर वास करूँगा। वर्षा ऋतु बीतते ही मित्र! सीता की खोज करावें।"

वर्षा ऋतु-भर राम को ऋष्यमूक पर्वत पर निवास

प्यारे मित्र! सुग्रीव, तारा-अंगदादि के साथ किष्किन्धा लौटे। महल पधारे। पत्नी रूमा के साथ महल में आनन्द से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रहने लगे। उधर राम-लक्ष्मण ऋष्यमूक पर्वत पर पर्ण कुटी बनाकर रहे। पत्नी-वियोग में दुःखी राम जैसे-तैसे दिन काटते रहें।

प्यारे मित्र ! दिन-दिन बीतते-बीतते वर्षा ऋतु भी बीत गई। उधर सुग्रीव को राम के काम की याद न रही। हनुमान ने याद दिलाई। तब सुग्रीव ने कपि सेना तैयार कराई।

प्यारे मित्र ! उधर सुग्रीव की चुप्पी से राम चिन्तित हुए। लक्ष्मण को सुग्रीव के पास किष्किन्धा भेजा। सीता की खोज शीघ्र कराने के लिए, कहने को कहा।

लक्ष्मण किष्किन्धापुरी गए। कपि सेना तैयार देखी। सुग्रीव ने लक्ष्मण का खूब सत्कार किया। फिर सेना सहित लक्ष्मण के साथ राम के पास गए। प्रणाम किया। राम ने उन्हें गले से लगाया। सुग्रीव बोले,--"महावली राम ! तेंतीस सेनापतियों के अधीन ३३ हजार कपि सेना तैयार है।"

तब राम बोले—"प्यारे मित्र ! पहले पता लगाओ कि सीता जीवित हैं या नहीं। रावण किस प्रदेश में रहता है। सीता जीवित हैं-तो कहाँ रखी गई हैं। फिर हम लोग आगे का कार्यक्रम निश्चित करेंगे।"

सुग्रीव की सेना द्वारा सीता की खोज

फिर सुग्रीव ने सेना को सीता के पता के लि ए रवाना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

किया। हनुमान को विशेष तौर से समझाया। राम ने हनुमान को पहचान के लिए अपना नाम अंकित अँगूठी दी। और कहा,--"अँगूठी देखकर सीता को विश्वास हो जायगा कि तू मेरे पास से आया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तू सीता का पता लगा सकेगा।"

प्यारे मित्र! हनुमान ने अँगूठी को यत्न से संभाल रखा। फिर सुग्रीव की आज्ञा से अंगद के सेनापतित्व में तारक, हनुमान, जाम्ववान, नल-नील आदि सीता की खोज में दक्षिण दिशा की ओर गए। कपि सेना के पृथक-पृथक यूथ भिन्न-भिन्न दिशाओं में गये। अंगद की सेना टुकड़ी ने सारा विन्ध्य पर्वत छान डाली, पर सीता का पता न चला।

प्यारे मित्र! आश्विन मास के भीतर, सुग्रीव ने सीता की खोज करने की आज्ञा दी थी। आश्विन मास बीत चला, पर सीता का सूत्र तनिक न मिला। अब तो कपि मंडली बहुत घबराई। बहुत व्यथित हुई। आपस में बातें करने लगी। सीता का पता बिना लगाए लौटने पर तो राजा सुग्रीव मृत्यु दंड ही देंगे। अंगद बोले,--"बिना पता लगाये कौन-सा मुँह लेकर वापस जाएँगे।"

सन्त जटायु के भाई वृद्ध सम्पाति से भेंट

प्यारे मित्र! अंगद आमरण अनशन करने पर उतरू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हो गए। इसी बीच, संयोगवश जटायु के भाई वृद्ध संपाति से भेंट हो गई। बात चीत में अंगद ने जटायु की मृत्यु की चर्चा कर दी। संपाति रो पड़े। बोले,—"जटायु मेरा छोटा भाई था। पापी रावण ने भाई को मार डाला। इससे बहुत दुःखी हूँ। वृद्ध हो गया हूँ। देह थक गई है। लड़ने की शक्ति न रही, वरना रावण से भाई-वध का बदला अवश्य लेता। बुद्धि से मैं राम की सहायता अवश्य करूँगा। हे अंगद! सीता का पता सुनिये :—

एक दिन मैं लंका के राजा रावण को एक युवती स्त्री को पकड़ कर आकाश मार्ग से ले जाते देखा। नारी हाय राम! हाय राम!! कहती विलाप कर रही थी। अवश्य ही वह सीता ही थीं। लंका यहाँ से सौ योजन दूर समुद्र के मध्य में स्थित है। सीता को रावण ने अपने अन्तःपुर में बन्दी कर रखा है। उन पर राक्षसियों का पहरा बैठाया है। आप लोग समुद्र पार करने को सोचें। लंका में जायँ। वहाँ सीता अवश्य मिलेंगी। मैं अपने योगबल से उन्हें रावण के अन्तःपुरी में यहीं से देख रहा हूँ।"

प्यारे मित्र! संपाति से सीता का पता पाकर, कपि-मंडली बहुत खुश हुई। फिर समुद्र पार करने की चिन्ता हो आई। अंगद ने कहा,—"हे वीरो! कौन सौ योजन समुद्र पार कर लंका जा सकेगा?"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

प्यारे मित्र ! कोई बोला,—"दस योजन जा सकता हूँ तो कोई बीस योजन, और कोई तीस योजन, कोई चालीस, कोई पचास, कोई साठ, कोई सत्तर, कोई अस्सी तो किसी ने नब्बे योजन जाने को कहा। तब अंगद बोले,—"मैं स्वयं पार जा सकता हूँ, लेकिन लौटने भर की शक्ति रहेगी कि नहीं इसमें सन्देह है।" तब जाम्बवान बोले,—"आप हमारे स्वामी हैं। आप क्यों जाएँगे। इस काम को महावली हनुमान कर पाएँगे ! मैं उन्हें प्रेरित करता हूँ।"

प्यारे मित्र ! जाम्बवान ने हनुमान के बल-विक्रम की बड़ी प्रशंसा की। बोले,—"महावली हनुमान ! तुम क्यों चुपचाप बैठे हो। तुम ही यह कठिन काम कर सकते हो।"

प्यारे मित्र ! फिर तो हनुमान जी लंका जाने के लिए सहर्ष तैयार हो गए। तय हुआ—कि जब तक हनुमान लौट कर न आएँगे—कपि मंडली समुद्र किनारे बैठ कर उनकी बाट जोहती रहेगी। हनुमान समुद्र के किनारे स्थित एक ऊँचे पर्वत के शिखर पर चढ़ गए। विशाल समुद्र को वहाँ से देखा। छलाँग मारने को तैयार हुए।

प्यारे मित्र ! किष्किन्धा काण्ड की चर्चा भी समाप्त हुई। अगले पत्र में सुन्दर काण्ड की चर्चा होगी। हनुमान समुद्र पार कर लंका जायँगे। सीता जी से मिलेंगे। लौट कर कपि मंडली को खुश-खबरी सुनाएँगे। फिर किष्किन्धा लौट कर सुग्रीव और राम को खुश-खबरी

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सुनाएँगे। सेना सहित राम लंका के लिए चल पड़ेंगे। समुद्र तट पर पहुँच पड़ाव डालेंगे।

प्यारे मित्र! मित्र-धन सभी प्रकार के धनों में बढ़ कर है। सच्चा मित्र तो भगवान की देन है। आपति-काल में अपने लोग भले ही मुख मोड़ लें—किन्तु मित्र सदा साथ देता है। मित्र ही जीवन को सरस बनाता है। वास्तव में दो मित्रों के शरीर भर ही दो होते हैं—दोनों की आत्मा तो एक ही होती है। दोनों के आचार-विचार एक से होते हैं।

सौभाग्य वश, मुझे जीवन में मित्र-धन प्रचुर प्राप्त रहा है। पग-पग पर मित्रों की सहायता मिलती रही है। इससे जीवन सरस बना रहा है। इसकी मधुरता उनकी संगति में ही मिल पाई है।

आपको मित्र रूप में, पाकर तो, मैं धन्य-धन्य हो गया हूँ। जीवन की हर कमी पूरी हो गई है। आपके भरोसे-मगन हो विचरता हूँ। आपकी प्रसन्नता के लिए, रचनाओं में लगा रहता हूँ।

प्यारे मित्र! आज की कथा विसर्जन होती है। कथा विसर्जन पर, चरणामृतवत् मित्र-धनामृत पान करें। सदा सच्चा मित्र बने रहने का व्रत लेवें। मित्रों के सुख-दुःख के भागी बनें। उनके सुख-सुविधे का ध्यान रखें। सदा नेक सीख देवें।

आपको अनन्त शुभ कामनाओं के साथ पुनः प्रणाम!

आपका आत्मरूप
गणेश

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सुन्दर काण्ड

राँची से टाटानगर ट्रेन में
७-११-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम

पिछले पत्र में किष्किन्धा काण्ड की चर्चा हो चुकी है। आज सुन्दर काण्ड की करनी है।

अंगद कपि-टोली के साथ, हिन्द महासागर के तट पर पहुँच चुके हैं। सीता को चुराने-वाले रावण और उसकी राजधानी लंकापुरी का पता चल चुका है। आगे की वार्ता सुनिए :—

प्यारे मित्र ! लंका हिन्द महासागर में आम की गुठली के सकल का एक छोटा-सा टापू है। रामायण के वर्णन के अनुसार दक्षिण भारत के छोर से सौ योजन यानी चार सौ कोस दूर समुद्र में स्थित है। हनुमान जी पार करने को तैयार हुए। वे झट तटवर्ती पर्वत की चोटी पर चढ़ गए। वहाँ से सागर की लहरों को भरपूर निरेखा। लहर पर लहर आ रही थीं। समुद्र दहाड़ रहा था। उसमें तूफान-सा आया हुआ था।

प्यारे मित्र ! हनुमान जी ने अपने साथियों से कहा,—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"मैं राम की कृपा से सागर को बेरोक झट लाघ जाऊँगा। सीता न मिलीं तो रावण को बाँध लाऊँगा।"

हनुमान का समुद्र लाँघना

प्यारे मित्र! योगबल से, हनुमान ने चार सौ कोस समुद्र पल में पार किया। उस पार लंका राज्य में समुद्र तट पर विस्तृत सुन्दर बन देखा। उसकी शोभा देखते ही बनती। दृष्टि अपलक निहारते ही रह जाती।

प्यारे मित्र! हनुमान पास के त्रिकूट पर्वत पर चढ़ गए। उसकी चोटी से लंकापुरी को देखा। फिर शिखर से उतरे। छिपे-छिपे लंकापुरी के निकट चले गए। छिपे-छिपे ही पुरी को देखने लगे। लंकापुरी उन्हें अतीव रमणीक लगी। उसकी गगन चुम्बी अट्टालिकाओं की शोभा देखते ही बनती। देखते जी न अघाता। उन पर रंग-बिरंगे झण्डे-पताके फहरा रहे थे। पुरी गहरी दुर्गम खाइयों और ऊँचे चहार दीवारियों से घिरी थी। उन्हें पार करना बड़ा ही दुष्कर था। फिर पुरी के चारों ओर कड़ा पहरा था। पहरेदार तैनात थे। पुरी के चारों दिशाओं में विशाल प्रवेश द्वार थे। उन पर भाँति-भाँति के अनुचर गुप्तचरादि तैनात थे। उनसे आँख बचाकर लंकापुरी में प्रवेश करना सहज न था।

लंका में हमनुान द्वारा सीता की खोज

प्यारे मित्र! हनुमान दिन में ही लंका पहुँच चुके थे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सारा दिन छिप-छिप कर लंकापुरी बाहर से ही देखते रहे। रात्रि में चुपके-चुपके लंकापुरी में घुसे। कोई पहरेदार देख न पाया। हम-खौफिया पुलिस (सी॰ आई॰ डी॰) को भी चकमा दे गए।

प्यारे मित्र ! सीता की खोज में वीरवर हनुमान ने सारी लंकापुरी छान डाली। रावण के अन्तःपुर में गए। वहाँ रावण को सोया देखा। उसकी पटरानी मंदोदरी को देखा। रनिवास को कई अन्य युवतियों को भी नींद में बेहोश पड़ी पाया। पर सीता जी न मिलीं। अब तो हनुमान भारी सोच में पड़े। अब करें तो क्या करें। संपाति ने तो सीता का पता रावण के रनिवास में बतलाया था।

हनुमान अशोक वाटिका में

प्यारे मित्र ! हनुमान ने हिम्मत न हारी। लंकापुरी के भीतर-बाहर सर्वत्र देखने लगे। खोजते-खोजते आधी रात में रावण की अशोक-वाटिका में पहुँचे।

प्यारे मित्र ! अशोक-वाटिका की शोभा तो नन्दन-कानन को भी मात कर रही थी। वह भाँति-भाँति के पेड़-पौधों से सुशोभित थी। उन पर पंछी बसेरा किए हुए थे। वाटिका में निर्मल जल वाली मनोहर-मनोहर पोखरियाँ थीं। उनकी सीढ़ियों में मणि जड़े थे। झर-झर झरते कृत्रिम झरने थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कल-कल बहती नदी थी। मित्र ! लंकापुरी ही त्रिकूट पर्वत पर बसी थी। वहाँ की प्राकृतिक शोभा ही निराली थी। बहुत मनोहारी। बहुत लुभावनी। फिर अशोक-वाटिका की शोभा का क्या कहना !

प्यारे मित्र ! हनुमान अशोक वृक्ष पर चढ़ गए। ऊपर से इधर-उधर सर्वत्र देखा। देखा—सघन वृक्ष के नीचे एक मानवी बैठी है। बेचारी शोक में डूबी है। उसके वस्त्र मैले हो गए हैं। गात कृषित हो गया है। बेचारी राक्षसियों से घिरी है। उसे वे तरह-तरह से सता रही हैं। डरा रही हैं। धमका रही हैं। भारी विवशता में पड़ी हैं।

प्यारे मित्र ! राम ने हनुमान को सीता के वस्त्र भूषणादि के जैसा पहिचान बतलाए थे, हनुमान ने वैसे ही उस दु:खनी तिरिया के तन पर पाया। वही सीता है—उन्हें विश्वास हो आया। अब तो वे खुशी में फूले न समाए।

सीता से रावण की याचना

प्यारे मित्र ! उधर रात भी बीत चली। भोर हुआ। चिड़िएँ चहक उठीं। सारी वाटिका कलरव से गूँज उठी। रावण उठा। उठते ही सीधा, अपने महल से सीता के पास आया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

रावण सीता जी से बोला,—"रे सुकुमारी ! तू वृथा तन को क्यों गलाती है ! क्यों घोर पीड़ा सहती है !! क्यों नादानी करती है !!! तू मेरी हो जा। पटरानी बन जा। रानियों पर हुकुम चला। राज-सुख भोग। तू वनवासी राम के लिए क्यों मर रही है। राम यहाँ न आ सकेगा। तुझे न पा सकेगा। तू उसे भूल जा। मन से उसे निकाल दे। मुझे बिठा ले। तू मेरे मन में बस गई हो।

रे सुकुमारी ! मैं तेरे प्यार का भूखा हूँ। प्रेम की भीख माँगता हूँ। मैं चाहता हूँ—तू भी मुझे उतना ही चाहने लगो, जितना मैं तुझे चाहता हूँ। और सुन, सुकुमारी ! जब-तक तू मुझे चाहने न लगोगी, मैं तेरा शील-हरण कदापि न करूँगा।"

रावण को सीता का उत्तर

प्यारे मित्र ! बीच में ही बात काटती, सीता बोल उठीं,—"तू मेरे पर से मन हटा कर, अपनी पत्नी में लगा। मैं पराई पत्नी हूँ। पतिव्रता हूँ। उच्च कुल में जन्मी हूँ। पवित्र कुल में ब्याही गई हूँ। मैं घृणित कर्म नहीं कर सकती। तेरी पत्नी नहीं बन सकती। तू अधर्म की राह न अपना। स्वयम् विचार। भला ! पराई सती नारी तेरी भार्या कैसे बन सकती है ! अपनी स्त्री की तरह दूसरे की स्त्री की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भी रक्षा कर। तू अपनी स्त्री से ही प्रीति कर। मुझे सता कर कुछ न पाएगा। अपना ही यश गँवाएगा। नाहक अपने कुल का नाम डुबोएगा।

और सुन रावण! तू अपने वैभव से मुझे लुभा नहीं सकता। मेरा मन तो राम में रम गया है। एकीभूत हो गया है। कोई विलगा नहीं सकता। तू मुझ दुखिनी को राम को सौंप दे। उनसे मैत्री कर ले। तू मेरे प्राणेश राम से न पार पाएगा। उनके हाथ प्राण गँवाएगा।"

प्यारे मित्र! रावण अब आगे सुन न सका। रोष में तिलमिला उठा। बोला,–"रे सुकुमारी! तू अपने कार्य-कलाओं से वध के ही लायक हो। किन्तु तुझ पर दया करता हूँ। तुझे जीता छोड़ता हूँ। तेरे प्राण नहीं लेता हूँ। तू सुन ले—दो महीने के भीतर मेरी न बनोगी—तो अपने को जीती न पाओगी। निश्चय ही मारी जाओगी।"

प्यारे मित्र! फिर रावण ने राक्षसियों को अलग बुला कर कहा,—"चाहे जैसे भी हो—सीता को मेरी पत्नी बनने के लिए राजी करो। डराओ। धमकाओ। फुसलाओ।"

प्यारे मित्र! इतना कह कर रावण अपने अन्तःपुर में चला गया। इधर राक्षसियाँ सीता को तरह-तरह से डराने, धमकाने और फुसलाने लगीं। रावण की पत्नी बन जाने की सीख देने लगीं।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

त्रिजटा के स्वप्न

प्यारे मित्र ! सीता के दुःख का वारापार नहीं था। राक्षसियों द्वारा बुरी तरह सतायी जा रही थीं। उनका दुःख त्रिजटा नामक राक्षसी से नहीं देखा गया। वह स्वभाव से नेक थी। उसका दिल पिघल-सा गया। बोली,—"मैंने बहुत बुरा सपना देखा है। देखा है—राम-लक्ष्मण सुन्दर रथ पर लंका पधारे हैं। सीता को रथ में बैठाकर उत्तर दिशा की की ओर ले गए हैं। और भी देखा है"–बोली,--"रावण ने सिर मुड़ाकर, काला वस्त्र पहना है। नशे में पुष्पक विमान से गिर पड़ा है। औरतें उसे घसीट रही हैं। फिर देखा कि वह गधे पर सवार होकर नगर से बाहर जा रहा है। और भी देखा कि रावण के पुत्र, भ्राता दि सिर मुंडे गधे सूअरादि भिन्न-भिन्न जानवरों पर सवार होकर दक्षिण की ओर बढ़े जा रहे हैं। और भी देखा कि लंकापुरी समुद्र में जा पड़ी है। इससे बहनो, सीता को न सताओ। इस दुःखियारी को वृथा न कलपाओ। मेरा सपना सत्य होकर रहेगा। रावण के साथ तुम सबों का भी नाश हो जायगा।"

प्यारे मित्र ! इतना सुनकर सीता जी बहुत प्रसन्न हुईं। उधर राक्षसियाँ डर गईं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सीता-हनुमान सम्वाद

प्यारे मित्र ! उधर हनुमान गाछ पर बैठकर पत्तों की आड़ में सब कुछ देखते-सुनते रहे। सोचते रहे--सीता से कैसे मिलें। सोच-विचार कर, सीता जी को सुना-सुना कर, राम गुण गाने लगे। हनुमान बोले,--"राजा दशरथ के पुत्र राम पिता की आज्ञा से भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ चौदह वर्ष के लिए वन आये। वन से लंका का राजा रावण सीता को चुरा ले आया है। राम ने सुग्रीव से मित्रता की है। सुग्रीव का खोया राज लौटवाया है। मैं सुग्रीव का अनुचर, स्वामी की आज्ञा से सती सीता की खोज में आया हूँ। राम ने जैसा सीता का पहिचान बतलाया था—वैसा ही देवी तुझे पाता हूँ। तेरे चरणों में प्रणाम करता हूँ।"

प्यारे मित्र ! इतना कहकर हनुमान चुप हो गए। सीता जी सुन कर चकित-सी हो गईं। रूखरे-बिखरे बालों को मुँह पर से हटा·कर, आस भरी नजरों से हनुमान की ओर देखा।

प्यारे मित्र ! संयोगवश राक्षसियाँ कुछ दूर बैठ कर, त्रिजटा के स्वप्न पर विचार रही थीं। सुअवसर पाकर, हनुमान सीता के पास आये। माथा नवाकर सादर प्रणाम

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

किया । फिर हाथ जोड़े, बोले,—"माता आप कौन हैं ? क्या आप ही राम-पत्नी सीता हैं ?"

तब सीता जी बोलीं,—"हाँ मैं ही यशस्वी राम की पत्नी हूँ ,—अयोध्या नरेश दशरथ की पुत्र-वधू और ज्ञानी राजा जनक की पुत्री हूँ । मैं अपने पति के साथ दण्डकवन में रह रही थी । देवर लक्ष्मण भी साथ था । धोखे से दुष्ट रावण मुझे चुरा लाया है । पापी ने दो मास की अवधि दी है । इस बीच उसकी न होने से मार डालने को कहा है । दो महीने बीतते-बीतते मैं प्राण त्याग दूँगी ।"

प्यारे मित्र ! सीता और बोलीं,—"वत्स ! तू कौन है ? यदि राम का दूत है, तो उनका कुशल समाचार सुना ! मैं सुनने के लिए लालायित हूँ ।"

प्यारे मित्र ! तब हनुमान हाथ जोड़े बोले,—'माता ! मैं राम का दूत हूँ । उनका कुशल-संदेसा लेकर आया हूँ । राम भाई लक्ष्मण के साथ शरीर से कुशल हैं । किन्तु आपके वियोग दुःख से बहुत दुःखी हैं । आपको प्रणाम कहा है ।

देवि ! राम बड़े बलशाली हैं । तेजस्वी हैं । रूपवान हैं । सर्वगुण सम्पन्न महापराक्रमी हैं । वे रावण को सहज में मार गिरायेंगे । वे आपके वियोग से बहुत-बहुत दुःखी हैं । आपका समाचार पूछा है । लक्ष्मण ने भी आपका कुशल पूछा है ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्यारे मित्र ! इतना सुनकर सीता जी गद्‌गद्‌ कंठ से बोलीं,—"वत्स ! तू राम-लक्ष्मण को कैसे जानते हो। राम और सुग्रीव में कैसे मिताई हुई। अगर राम-लक्ष्मण को तूने देखा है—तो उनका रूप-रंग कैसा है ? सो-सब मुझे वताओ।"

प्यारे मित्र ! तब हनुमान ने राम-लक्ष्मण का रूप-रंग वर्णन किया। फिर राम और सुग्रीव में कैसे मित्रता हुई—सो सब कहा। किष्किन्धा काण्ड में उल्लेखित वार्ता की चर्चा संक्षेप में की। तदुपरान्त राम द्वारा दी गई अँगूठी सीता जी को देते हुए बोले,—"देवि ! राम ने पहिचान के लिए, अपनी अँगूठी भी आपको देने के लिए दिया है।"

प्यारे मित्र ! सीता ने अँगूठी ली। गौर से देखा। पहिचाना। राम की अँगूठी पाकर बहुत-बहुत प्रसन्न हुईं। हनुमान को हार्दिक आशिष दीं। फिर गद्‌गद्‌ कंठ से बोलीं,—"वत्स ! राम मुझे पाने के लिए पूरी चेष्टा तो कर रहे हैं ? कहीं अत्याधिक दुःखी होकर, प्रयत्न में ढीलें तो न पड़ गए हैं ? लंका पर शीघ्र चढ़ तो आएँगे ? रावण को मार मुझे उबार तो लेंगे ? विलम ता न करेंगे।"

प्यारे मित्र ! तब हनुमान बोले,—"देवि ! अब तक राम को आपका पता न मिल सका था। नहीं तो राम कब ही

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लंका पर चढ़ आए होते। मेरे लौटते ही आपकी खबर पाकर राम कपि सेना के साथ तुरन्त लंका पर चढ़ आएँगे। रावण को मार गिरायेंगे। माता! आपको राम झट उबार लेंगे। वे आपके दुःख से बहुत-बहुत दुःखी हैं।"

प्यारे मित्र! तब सीता जी हनुमान से बोलीं,—"पुत्र! राम से कहना—जरा जल्दी करने को। दो महीने होते हो, रावण मुझे जीवित न छोड़ेगा। मार ही डालेगा।

पुत्र! राम से और भी कहना कि रावण बिना युद्ध के मुझे किसी भी कीमत पर लौटाने को तैयार न होगा। उससे युद्ध करना ही होगा। लोग उसे समझा-समझा कर थक गए। वह किसी का कुछ नहीं सुनता। प्यारे पुत्र! रावण के भाई विभीषण की पत्नी ने अपनी पुत्री कला से कहला भेजा था कि रावण किसी का कुछ नहीं सुनता।

वत्स! ऐसे तो मुझे अन्तरात्मा से आभास मिलता है कि राम शीघ्र मिलेंगे।"

प्यारे मित्र! इतना कहते-कहते माता सीता की आँखों से आँसू छल-छला पड़े। कंठ रुँध गया। आगे बोल न सकीं।

तब हनुमान बोले,—"देवि! आप निश्चय जानिए—मुझसे आप का पता पाते ही राम लंका पर चढ़ आएँगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मुझे आप पहिचान के लिए कुछ दीजिये—जिससे राम को विश्वास हो जाय कि मैं आप से मिल चुका हूँ।"

प्यारे मित्र! तब सीता जी ने सिर के चूड़े का मणि उतार कर हनुमान को पहिचान के लिए दिया। और-और भी कहा,—"पुत्र ! लक्ष्मण महाव्रत धारी हैं। राम को पिता की तरह और मुझे माता की तरह मानते रहे हैं। वे राम को मुझसे भी ज्यादा प्यारे हैं। उन्हें मालूम न था कि मैं हरी जाऊँगी, न तो मेरे कटुबचन कहने पर भी वे मुझे छोड़ कर नहीं जाते। तू लक्ष्मण का समाचार मेरी ओर से पूछना। मेरा बहुत-बहुत प्यार और आशिष कहना।"

लंका से लौटकर हनुमान का, अंगदादि को सीता का पता बताना

प्यारे मित्र ! सीता जी की आखों से अविरल अश्रुधारा बहती जा रही थी। रुँधे कंठ से ही जैसे-तैसे बोल रही थीं। भीतर-भीतर हनुमान भी रो पड़े। सीता मैया का दारुण दुःख, उनकी दयनीय दशा हनुमान से देखी न जा सकी। उनसे विदा हो लौट पड़े। योग-बल से समुद्र पार किया। महेन्द्र पर्वत पर गए। यूथाधिपति अंगद से मिले। खबर सुनने के लिए सभी योद्धा उन्हें घेर कर खड़े हो गए।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

प्यारे मित्र ! तब हनुमान बोले,—"सीता को लंका की अशोक वाटिका में बन्दी पाया है। रावण ने उन्हें नजरबन्द कर रखा है। उनपर राक्षसियों का भारी पहरा बैठा रखा है। वे बहुत दुःखी हैं। उनके बाल बिखरे पड़े हैं। चोटी एक ही कर रखी हैं। राम के वियोग में सूख कर काँटा हो गई हैं।"

तब यूथाधिपति अंगद, हनुमान को बार-बार धन्यवाद देने लगे। उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। बोले,—"वीरवर हनुमान ! समुद्र लाँघ कर, लंका जा, सीता का पता लगाकर, हम लोगों के प्राण बचा लिए। अब क्यों नहीं रावण को मार कर, सीता को लेते ही चलें और किष्किन्धा में राम-लक्ष्मण और सुग्रीव के सामने हाजिर कर दें !"

प्यारे मित्र ! तब वयोवृद्ध जाम्बवान बोले,—"हमें स्वामी से केवल सीता का पता लगाने भर का ही आदेश मिला है। उसके आगे करने पर, स्वामी सुग्रीव और राम-लक्ष्मण अप्रसन्न हो सकते हैं। फिर हम लोगों का किया-निष्फल हो जायगा !"

प्यारे मित्र! जाम्बवान की नीति पूर्ण बातें सब को भली लगीं। कपि-टोली खुशी में उछलते-कूदते किष्किन्धा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वापस गई। सेनापति अंगद ने राजा सुग्रीव और राम-लक्ष्मण को खुश खबरी सुनाई। फिर राम हनुमान से सीता का हाल पूछने लगे।

हनुमान सीता का संदेश राम को सुनाते हैं।

हनुमान बोले,—"देवी सीता को लंका की अशोक वाटिका में देख आया हूँ। इतना सुनते ही राम का दिल खुशी से भर आया। हनुमान को प्यार से पास बैठा कर उनकी बातें बड़े स्नेह से सुनने लगे। हनुमान कहने लगे,—"समुद्र लाँघ कर लंका गया। खोजते-खोजते देवी सीता को अशोक वाटिका में बन्दी पाया। उन पर राक्षसियों का भारी पहरा देखा। राक्षसियाँ उन्हें तरह-तरह से उत्पीड़ित करती हैं। आप के दर्शन के लिए वे प्राण रख रही हैं। आप में लव लगाई हुई हैं! तापसी की तरह रह रही हैं। दो मास के भीतर आप के न पहुँचने पर उन्होंने मर जाने को ठान ली है। रावण ने भी जीने की उतनी ही अवधि दी है।"

प्यारे मित्र! हनुमान जी फिर सीता का दिया हुआ चूड़ामणि राम को देते हुए बोले,—"पहिचान के लिए यह चूड़ामणि आपको देने के लिए देवी सीता ने दिया है।

देव! विदा होते समय, देवी सीता ने और भी आप

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

से कहने को कहा है,—"पुत्र ! जैसा मुझे देखते हो वैसा राम को बता देना ! कहना—आप के चूड़ामणि को बड़े यत्न से पहन रखा था। जब-जब दुःख से ज्यादा विकलित होतीं, तो इसे देख लेतीं। आप का स्वरूप इसमें पा लेतीं। मास भर मुश्किल से जी सकूँगी।"

प्यारे मित्र! राम ने चूड़ामणि को हृदय से लगा लिया। उनकी आँखें डब-डबा गईं। वे रुँधे कंठ से सुग्रीव से बोले,—"यह मणि सीता को विवाह में मेरे श्वसुर ने दिया था। यह समुद्र से उत्पन्न है। यह इन्द्र के पास था। उन्होंने राजा जनक को भेंट की थीं। इसे सीता अपने केशों में लगाए रहती थीं। इसे आज देख कर लगता है सीता हो मिल गई हैं।"

प्यारे मित्र ! सीता का समाचार सुनते राम का जी भरता नहीं था। देर तक वे हनुमान से विस्तार में सुनते रहे। फिर-फिर पूछते रहे।

प्यारे मित्र ! सुन्दर काण्ड की चर्चा समाप्त हुई।

रावण की अशोक वाटिका जहाँ सीता रखीगई थीं; बहुत सुन्दर थी। सीता को ढूँढ़ निकालना हनुमान का बड़ा ही सुन्दर काम था। बड़े ही सुन्दर ढंग से हनुमान ने सुन्दरी सीता को खोज की थी। इससे हो मित्र ! सीता खोज प्रसंग वार्ता सुन्दर काण्ड कहलाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्यारे मित्र ! ऋषि वाल्मीकि ने अपनी रचना वाल्मीकीय रामायण में व्यावहारिक दृष्टिकोण खूब अपनाया है। जीवन के हर पहलू पर दृष्टि डाली है। बोल-चाल आचार-व्यवहार कार्य सम्पादनादि में मर्यादा का खूब पालन किया है। हमें सफल जीवन बिताने की भरपूर सीख दी है। हम इनसे लाभान्वित होवें। जीवन में उतारें।

प्यारे मित्र ! सुन्दर काण्ड में हनुमान के साथ-साथ हम लोग भी लंका में विचरे ! वहाँ की सुन्दरता देखो। दुःखी माता सीता के दर्शन किए। उसकी दर्दभरी वाणी सुनी। उनका पता पाकर कुछ खुश तो हुए, किन्तु उनके दुःख से ज्यादा दुःखी। इसी से जरा जल्दी में हूँ। चाहता हूँ—मैया सीता को झट लंका से वापस लाऊँ। अब देर भी नहीं है। अगले पत्र में हम लोग राम और उनकी सेना के साथ लंका चढ़ जाएँगे। राम-रावण की घमासान लड़ाई देखेंगे। रावण मारा जाएगा। मैया सीता वापस लाई जाएँगी।

प्यारे मित्र ! हनुमान बाल ब्रह्मचारी थे। कठिन व्रतधारी थे। अतुल बलशाली थे। फिर, उन पर राम की अनुकम्पा थी। इससे सहज में ही सौ योजन समुद्र लाँघ गए। बड़े-बड़े महत्वपूर्ण कार्य किए। उसे पाठक-गण असंभव न समझें। ब्रह्मचर्य्य, तपश्चर्य्यादि की महिमा अपार है। सच्चे दृढ़ व्रतधारी के लिए सब कुछ सुलभ है।

वास्तव में यह शरीर ब्रह्म की सारी शक्तियों से परिपूर्ण ब्रह्मवत् ही है। शक्तियाँ कुसंस्कार से आच्छादित हो सोई पड़ी रहती हैं। जन्म-जन्मान्तर के अच्छे संस्कारों के फल स्वरूप ही जगाई जा सकती हैं। उन शक्तियों के जगते ही, इस मुट्ठी-भर हड्डी वाले शरीर में अपार शक्ति आ जाती है। फिर तो, उसके लिए सौ योजन समुद्र को लाँघना कौन कहे ! विश्व को लाँघना सुलभ हो जाता है।

प्यारे मित्र ! लोग उन सुषुप्त शक्तियों को जगाने के लिए अपनी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अपनी रुचि के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रयास करते हैं। साधना की अलग-अलग राह अपनाते हैं। मुझे तो सबसे सुगम और समीप की राह सीता मैया और राम के शरण में जाना ही जँचती है। वे शरणागत को पालने वाले हैं। जैसा संत तुलसीदास ने, तुलसीकृत रामायण के प्रारम्भ में ही कहा है—उनकी कृपा से सब कुछ सुलभ है—

सो०—मूक होइ वाचाल पंगु चढ़ई गिरवर गहन।
जासु कृपा सो दयाल, द्रवउ सकल कलिमल दहन॥
नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन नीरज नयन।
करउ सो मम उर धाम सदा छीर सागर सयन॥

अर्थात्—जिनकी कृपा से गूँगा, सुन्दर वचन बोलने वाला हो जाता है; लँगड़ा-लूला दुर्गम पहाड़ को पार कर जाते हैं, कलिकाल के पापों को नाश करने वाले, भगवान मुझ पर दया करें।

नील कमल के समान श्याम वर्ण वाले, पूर्ण खिले लाल कमल के समान नेत्र वाले, एवं सदा क्षीर सागर में शयन करने वाले विष्णु भगवान मेरे हृदय में निवास करें। ये थीं तुलसीदास की आकाँक्षाएँ। मेरे प्यारे मित्र! मेरी और आपकी भी यही रहे। सीता राम की शरण के सिवा हमारी-आपकी गति दूसरी नहीं!

बोलिए—सियावर राम की जय!

आपका आतमरूप
गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

युद्ध काण्ड

कपि सेना सहित राम का लंका जाना और रावण का वध करना

जमशेदपुर
११-११-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम

पिछले पत्र में, सुन्दर कांड की चर्चा हुई है। आज युद्ध कांड की करनी है। युद्ध कांड को ही लंका-कांड भी कहते हैं। इसमें राम-रावण में हुई घनघोर लड़ाई का वर्णन है।

प्यारे मित्र ! बाल्मीकीय रामायण के रचयिता ने हमारे हित उत्त-मोत्तम आचार-विचार, नीति-नियम चरित्रादि को पात्रों के चरित के माध्यम से प्रस्तुत किया है। वास्तव में रचना का यही भाग विचार-णीय है। इसी से हमें शिक्षाएँ लेनी हैं। इसीलिए रचना के इस भाग का साँगो-पाँग वर्णन करते हैं। आगे राम के मुखारविन्द से ही सेवक के लक्षण सुनिए :—

सेवक हनुमान ने बड़े ही कठिन परिश्रम और बुद्धिमानी से माता सीता का पता लंका में लगाया। बड़ा ही दुष्कर काम किया। अपने प्राण की बाजी लगाकर स्वामी का काज बजाया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राम द्वारा हनुमान की प्रशंसा

प्यारे मित्र ! रामचन्द्र जी हनुमान की प्रशंसा करते हुए बोले,—"प्यारे हनुमान ! तूने कितना बड़ा काम किया। इसके अनुरूप तेरे लिए, मैं कुछ कर नहीं पाता। इससे मुझे भारी दुःख है। उत्तम सेवक वही है—जो स्वामी के कठिन से कठिन काम को भी खुशी-खुशी प्रीति से कर डालता है। मध्यम श्रेणी का सेवक वह है, जो एक काम पर स्वामी द्वारा नियुक्त हुआ, उसी बीच दूसरे काम के अचानक आ जाने पर सामर्थ्य रहते हुए भी उसे नहीं कर डालता। वह सेवक अधम है—जो स्वामी द्वारा किसी कार्य के लिए नियुक्त होने पर, करने में सामर्थ्य रहता हुआ भी नहीं करता।"

प्यारे मित्र ! राम आगे बोले,—"हनुमान ! लंका पर तत्काल विजय पानी है। इसके लिए योजना बनानी है ! तू लंका का सविस्तार वर्णन करो।"

तब हनुमान बोले,—"देव ! लंकापुरी त्रिकूट पर्वत की चोटी पर बसी है। उसके चारों तरफ गहरी खाइयाँ हैं, जो निर्मल जल से भरी हैं। वह ऊँची चहारदीवारी से घिरी है। पुरी में गगनचुम्बी अटारियाँ हैं। चारों दिशाओं में विशाल प्रवेश द्वार हैं। उन पर राक्षसों का कड़ा पहरा है। विभिन्न वेष में गुप्तचर भी वहाँ तैनात हैं। उनकी आँख बचाकर, पुरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

में आना-जाना महा दुष्कर है। रावण की सेना विशाल है!"

प्यारे मित्र! इतना सुनते-सुनते, राम विचार में मग्न हो गए। तब सुग्रीव बोले,—"मित्र राम! आप चिन्ता न करें। चिन्ता में व्यर्थ ही शक्ति क्षीण होगी। कपि सेना सहज में ही, सौ योजन समुद्र, लाँघ कर लंका पर चढ़ जाएगी। राक्षसों को मार गिराएगी।"

सेना सहित राम का लंका के लिए प्रस्थान

तब राम सुग्रीव से बोले,—"मित्र! सेना को तुरन्त कूच करने का आदेश दें। हम लोग शीघ्र लंका के लिए चल पड़ें। अभी मुहूर्त भी अच्छा है।"

प्यारे मित्र! सुग्रीव ने अपने सेनापति—गज, गवाक्ष, मैन्द, द्विविद, नल, नील, सुषेण, जाम्बवान आदि को तुरन्त कूच करने की आज्ञा दी। सेनापतियों ने अपनी-अपनी यूथ (कम्पनी) को झट प्रस्थान कराया। सुग्रीव की विशाल सेना पूरे जोश के साथ लंका के लिए चल पड़ी। सेना के बीच में राम-लक्ष्मण और सुग्रीव चले।

प्यारे मित्र! सेना रात-दिन चलती गई। रास्ते में मलयाचल सह्याद्रि के घनघोर वन पार किए। पहाड़ों को पार करके सेना समुद्र तट पहुँची। वहीं पड़ाव पड़ा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्यारे मित्र ! विविध जल-जन्तुओं से भरा समुद्र दहाड़ रहा था। अब राम समुद्र पार करने को सोचने लगे। सीता की याद में और-और दुःखी होने लगे।

प्यारे मित्र ! थोड़ी देर राम-सेना को समुद्र के इस पार ही ठहरने दें। हम दोनों चल चलें लंका में। देखें वहाँ रावण क्या कर रहा है। लीजिए—सोचते ही, लंका भी पहुँच गए। क्या कमाल है ! कितनी तेज गति (चाल) है—मन की।

रावण द्वारा मंत्रणा

प्यारे मित्र ! रावण भी अपना गुप्तचर छोड़े हुए था। राम-सेना की शक्ति का पता लगाने के लिए, उसने पूरी व्यवस्था कर रखी थी। हनुमान ने भारी पहरा रहने पर भी, लंकापुरी में प्रवेश किया था। सीता से बातें की थीं। फिर सुरक्षित निकल गए थे। समुद्र लाँघ आए थे। समुद्र लाँघ गए थे। इससे रावण थोड़ा चिन्तित था। उसने राज्य-सभा बुलाई। मंत्रि गणादि से मंत्रणा करने लगा। अवसरवादी मंत्री उसकी भाँति-भाँति से प्रशंसा करने लगे। बोले,—"राजन ! आपने समस्त लोकों पर विजय पाई है। देव-दानव, गंधर्वादि सब को हराया है। कुबेर को परास्त कर उनका पुष्पक विमान हर लाया है। आपने मेघनाद जैसे महाबली पुत्र पाया है, जिन्होंने देवराज इन्द्र को भी परास्त किया है। राजन ! वनवासी राम से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सशंकित होने का कोई कारण नहीं है। असावधानी में हनुमान लंका आकर, बचकर चला गया है। ऐसे हमारी सेना राम को सहज में परास्त कर सकती है।"

प्रिय मित्र! फिर रावण ने अपने भाई कुम्भकरण से मंत्रणा की। कुम्भकरण ने सीता को राम को सौंप, सन्धि करने की राय दी। पर रावण को यह बात नहीं भायी। वह सीता को किसी भी कीमत पर लौटाने को तैयार नहीं था। अन्त में कुम्भकरण को रावण का समर्थन करना पड़ा।

प्यारे मित्र! इसी बीच रावण के दूसरे भाई विभीषण पधारे। रावण के बगल में बैठे। लोगों के भिन्न-भिन्न विचार सुने। फिर बोले,—"राजन! राम भगवान के अवतार ही हैं; और सीता साक्षात जगत जननी हैं। राम के साथ युद्ध में, आप पार नहीं पा सकेंगे। राम की सेना महावली राक्षसों को भी मार गिराएगी। सभी मारे जाएँगे। राक्षस कुल का नाश हो जायगा। राजन! आप सीता को राम को सौंप उनसे मित्रता कर लीजिए। आपके मंत्रीगण उचित परामर्श नहीं दे रहे हैं।"

रावण द्वारा विभीषण का तिरस्कार

प्यारे मित्र! रावण को विभीषण की हित भरी बातें, तीखी लगीं। उसने उन्हें दुत्कार कर राज-सभा से निकलवा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दिया। विभीषण अपमानित होकर, अपने महल गए। वहाँ से अपने मंत्रियों के साथ, रावण के शत्रु-पक्ष राम से मिलने गए।

सुग्रीव और राम से मिलकर बोले,—"मैं रावण का भाई हूँ। विभीषण मेरा नाम है। मैंने रावण को बहुत समझाया कि सीता को वापस कर, मित्रता कर लीजिए। पर उनने एक नहीं सुनी। उलटे मुझे दुत्कार कर राज-सभा से निकलवा दिया। भगवन! मैं दुःखी होकर, अपने विश्वासी मंत्रियों के साथ आपकी शरण में आया हूँ।"

प्यारे मित्र! राम ने विभीषण को अपनी शरण में ले ली। राम बोले,—"विभीषण! मेरे भक्त मुझे प्राणों से भी प्यारे होते हैं। तू मेरा भक्त है। मुझे अतिशय प्यारा है। रावण की तो मृत्यु निकट आई है। उसे मेरे बाणों का शिकार बनना है। तुझे लंका का राजा होना है। मैं आज ही राज्याभिषेक करा देता हूँ।"

प्यारे मित्र! राम फिर लक्ष्मण से बोले,—"लक्ष्मण! कलस में समुद्र से जल मँगाकर विभीषण का राज-तिलक कर दो।"

लक्ष्मण ने विभीषण का तुरन्त राज्याभिषेक किया। विभीषण लंका का भावी राजा हो गए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तब सुग्रीव विभीषण से बोले,—"अब आप युद्ध में हमारी सहायता कीजिए।"

प्यारे मित्र ! विभीषण ने यथा-शक्ति सहायता करने का वचन दिया।

समुद्र पर पुल बाँधा जाना

प्यारे मित्र ! राम समुद्र पार कर, लंका पहुँचने को उतारू थे। उन्होंने उसके लिए, सुग्रीव, नल, नील आदि से मंत्रणा की। समुद्र में पुल-बाँधना तय हुआ। नल इस काम में कुशल बताए गए। कपि सामान लाने लगे। नल पुल बाँधने लगे।

प्यारे मित्र ! उधर राम ने कार्य सिद्धि के लिए समुद्र तट पर, रामेश्वर महादेव की स्थापना की। विधिवत् पूजा की। आज भी रामेश्वर महादेव का बड़ा महातम है। दूर-दूर से लोग रामेश्वरम् रामेश्वर महादेव के दर्शन के लिए आते हैं।

प्यारे मित्र ! नल ने पहले दिन चौदह योजन, दूसरे दिन बीस योजन, तीसरे दिन इक्कीस योजन, चौथे दिन बाइस योजन और पाँचवे दिन तेईस योजन पुल समुद्र पर बांधा। इस प्रकार से पाँच दिनों में पूरे सौ योजन पुल बाँध

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

डाला। रामचन्द्र जी सेना सहित, पुल से समुद्र पार गए। लंका राज्य में छावनी डाली।

रावण के गुप्तचर शुक का पकड़ा जाना

प्यारे मित्र! उधर रावण ने भी अपने गुप्तचरों को राम की सैन्य-शक्ति का पता लगाने के लिए, तैनात कर रखा था। जब राम समुद्र के उस पार ही थे, शुक नामक गुप्तचर उनके पास गया। कपियों ने उसे पकड़ लिया। लाकर सुग्रीव के पास हाजिर किया। बेचारे को पीटा भी। सुग्रीव उसे राम के पास ले गए। राम ने शुक को छुड़वा दिया। शुक लौटकर रावण के पास गया। रावण भारी उत्सुकता से राम-सेना का विवरण पूछने लगा।

शुक बोले,—"राजन! राम की कपि सेना बहुत विशाल है। उसमें एक से एक वीर हैं। विभीषण भी जाकर राम से मिल चुके हैं। युद्ध में राम की सहायता करने को बचन दे चुके हैं। राजन! राम को युद्ध में परास्त करना संभव नहीं है। सीता को लौटाकर, राम से मित्रता कर लेने में ही बुद्धिमानी है।"

प्यारे मित्र! रावण ने शुक को भी खूब डाँटा। बोला,—"तू मुझे सीख देने चला है।" बेचारे शुक मौन हो गए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्यारे मित्र। रावण के नाना माल्यवान बड़े नीतिज्ञ थे। वे भी रावण को समझाने आए। भाँति-भाँति से समझाया। सीता को लौटाकर, राम से संधि करने के लिए, बहुत-कुछ कहा। रावण ने अपने वृद्ध नाना की भी बात न मानी। उन्हें भी फटकारा। वे भी अनादृत हो वापस चले गए।

रावण बार-बार मंत्रणा करता है।

प्यारे मित्र ! अब राम के पास लौट चलें। राम-लक्ष्मण सुग्रीव आदि पर्वत की ऊँची चोटी से लंकापुरी देखने लगे। देखा—रावण राजसभा में बैठकर मन्त्रणा कर रहा है। उसका मुकुट चमक रहा है।

प्यारे मित्र ! राम ने एक ही वाण में, रावण के मुकुट और छत्र काट गिराया। रावण और उसके सभासद विस्मित हो गए।

प्यारे मित्र! रावण नीतिज्ञ था। वह अपने सभासदों से पद-पद पर परामर्श लिया करता। सीता को लंका में लाकर, वह बुरी तरह उलझ चुका था। वह गर्वीला व्यक्ति था। सीता को लौटा कर, राम से मैत्री करने में अपना अपमान समझता था। अब उसे सीता को लौटाते न बनता था।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आखिर युद्ध छिड़ ही गया।

प्यारे मित्र ! होनी होकर रही। राम के कहने पर, सुग्रीव ने सेना को युद्ध की आज्ञा दे दी। कपि सेना पूरे जोश के साथ लंकापुरी को चल पड़ी। उनके युद्ध नाद से आकाश गूंज उठा। उधर रावण ने भी अपनी सेना को लड़ने का आदेश दे दिया। रण-भेरी बजी। राक्षसी सेना लंकापुरी से निकल पड़ी। आगे बढ़ी। दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हो गई। जुझारू बाजा बजने लगे। तलवारें तमतमाने लगीं। हाथी चिंघाड़ने लगे। घोड़े हिनहिनाने लगे। दोनों दलों से मारो-काटो की आवाजें आने लगीं। मित्र ! भारी कोलाहल हुआ।

प्यारे मित्र ! कपि सेना पूरे जोश के साथ शत्रु सेना पर टूट पड़ी। रण बाँकुरे प्रहार-पर-प्रहार करने लगे। राक्षस गण भी अपने तीखे-चोखे हथियारों से शत्रु दल पर घात करने लगे। देखते-देखते दोनों ओर कितनी लाशें गिर गईं। हाहाकार मच गया। भारी रक्त-पात हुआ। कितने धड़-मुंड अलग हो-हो गिरे। रक्त की धारा बह चली। नर-मुंड और लाशों से रण-क्षेत्र भर-सा गया। मारो-काटो की ध्वनि घायलों के कराहने में परिवर्तित हो गई। सन्ध्या हुई। दिन युद्ध में विराम आया। निशाचरों ने निशा युद्ध छेड़ा। छिप-छिप कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कपि सेना पर घात करने लगे। कपि-सेना भी वैसे ही लड़ती रही।

भोर होते, दोनों सेनाएँ फिर रण-क्षेत्र में आ जुटीं। पूर्ववत् घमासान लड़ाई। युद्ध का यह क्रम—दिन में दिवा-युद्ध और रात्रि में निशा-युद्ध—चलता रहा।

राम-लक्ष्मण की मूर्च्छा

प्यारे मित्र ! एक दिन रावण के पुत्र मेघनाद के वाण से राम-लक्ष्मण दोनों घायल होकर मूर्च्छित हो गए। मृतवत् रण-भूमि में पड़ गए। राक्षस दल में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। इधर कपि सेना निरुत्साह हो गई। सुग्रीव, अंगद, जाम्बवान, हनुमानादि राम-लक्ष्मण को घेर कर बैठ गए। सभी विलाप करने लगे।

प्यारे मित्र ! इतने में विभीषण आ गए। राम-लक्ष्मण को देखकर बोले,—"भाइयो ! राम-लक्ष्मण दोनों जीवित हैं। आप लोग हतोत्साह न हों। सभी लड़ाई के मोर्चे पर डटे रहें। राम-लक्ष्मण दोनों भाई कुछ समय में होश में आ जाएँगे। तब तक इनके शरीर की रक्षा डटकर करें।"

प्यारे मित्र ! फिर तो कपि सेना में पुनः जोश भर आया। सबों ने मोर्चे पकड़े। सुग्रीव, अंगद, जाम्बवान,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हनुमानादि राम-लक्ष्मण के शरीर-रक्षा में जुटे रहे।

प्यारे मित्र ! उधर राम-लक्ष्मण के धराशायी होते ही मेघनाद सीधे अपने पिता रावण के पास गया और राम-लक्ष्मण को मृत्यु की खुश-खबरी सुनायी। रावण सुन कर बहुत खुश हुआ। पुत्र की बहादुरी से उसे दूनी खुशी हुई। उसने तत्काल आदेश दिया कि सीता को वायु-यान में चढ़ा कर रण-क्षेत्र के ऊपर घुमाया जाय, और उन्हें राम-लक्ष्मण के मृतक शरीर को दिखलाया जाय।

प्यारे मित्र ! रावण की राजाज्ञा तुरंत पालन की गई। माता सीता को वायु-यान पर चढ़ाया गया। वायु-यान उनको कुछ राक्षसियों के साथ लेकर उड़ा और रण-क्षेत्र के ऊपर मँडराने लगा। माता ने ऊपर से ही रक्त-मांस, धड़-मुंड़ व लाशों से भरी रण-भूमि देखी। राम-लक्ष्मण को भी कपियों से घिरे अचेत पड़े देखा। उन्हें लगा दोनों मर चुके हैं। फिर तो, उनका हृदय विदीर्ण हो गया। भाँति-भाँति से विलाप करती रोने लगीं। कहने लगीं—"ज्योतिषियों ने लगन-विचार कर कहा था कि मेरा अहिवात आजीवन बना रहेगा, मैं पुत्रवती हूँगी; सम्राज्ञी हूँगी—मेरा जन्म शुभ नक्षत्रों में हुआ है। सो सब आज मिथ्या हो गया।

मेरा अंग-अंग शुभ लक्षणों से युक्त है—मेरे चरणों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कमल की रेखाएँ हैं; मेरे महीन नीले केश हैं; भौंहें अलग-अलग हैं, दाँत पाँति में सटे हुए हैं ; नेत्र, हाथ, पैर, जँघाएँ समान रूप से उभरे हुए हैं, नख चिकने उतार-चढ़ाव वाले हैं, उँगलियाँ समान हैं, रोम कोमल हैं और शरीर सर्वाङ्ग सुन्दर कान्तिवान है। इन सारे शुभ लक्षणों से युक्त होने से, मैं सुलक्षणा नारी कही जाती हूँ। फिर भी मुझे वैधव्य-दुःख सहना पड़ा। ज्योतिषियों के वचन एवं शरीर के शुभ लक्षण सब के सब आज मिथ्या हो गए।"

प्यारे मित्र ! संयोग से त्रिजटा भी साथ थी। उसने सीता को धीरज बँधाते हुए कहा—"देवि ! राम-लक्ष्मण के शरीर में मृतक के एक भी चिन्ह विद्यमान नहीं है। बल्कि जीवित के ही लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे हैं—उनके शरीर की कान्ति बनी रही है। उनके अपने लोग घेरे बैठे हैं। वे निरुत्साह नहीं दीखते। कपि सेना लड़ाई के मोर्चे पर डटी हुई है। निश्चय ही अचेत अवस्था में पड़े अपने स्वामी के होश में आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। देवि ! आप निराश न हों। धीरज धरें ! सदा सत्य की विजय होती आई है—और होकर रहेगी। राम-लक्ष्मण की मूर्च्छा टूटेगी। वे उठेंगे। लड़ेंगे। विजय-श्री प्राप्त करेंगे !"

प्यारे मित्र ! तब जाकर, सीता जी को कुछ ढाढ़स

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हुआ। राम-लक्ष्मण के जीवित रहने की प्रतीति जी में हुई। विमान उन्हें अशोक वाटिका में ला-उतारा।

प्यारे मित्र! माता सीता को अशोक बाटिका में छोड़ कर, राम-लक्ष्मण के पास युद्ध-क्षेत्र में चलें।

प्यारे मित्र। चन्द घंटों के बाद पहले राम होश में आए। फिर लक्ष्मण भी। पुनः लड़ाई जोर-शोर से होने लगी।

प्यारे मित्र! राम धर्म-युद्ध ही करना चाहते थे। युद्ध में भी असत्य पथ का आश्रय लेना उन्हें मान्य नहीं था। वैरी के साथ भी धोखा और कपट का व्यवहार उन्हें गवारा नहीं था। रावण तो अधर्म पर उतर ही चुका था। वह छल-कपट सब कुछ बरत रहा था। वह सोचता था कि राम को मृतक जान, सीता का दिल टूट जाएगा और वे उसकी होना स्वीकार कर लेंगी। उनके उसकी होने पर, राम अपना-सा मुँह लेकर निराश लौट जाएँगे। यह भी सोचता था कि सीता का मरा, जान राम का दिल टूट जाएगा। उनकी शक्ति क्षीण हो जाएगी। फिर वे उसका सामना न कर सकेंगे। पराजित हो लौट जाएँगे।

इसलिए, प्रत्यक्ष युद्ध के साथ-साथ रावण छल-प्रपंच भी करता जा रहा था। राम की मुड़ी बनवा कर, लहू से सरा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बोर कर सीता के पास भेजवा दिया—कि राम मारे गए। माता सीता देखते ही रो पड़ीं। पुनः त्रिजटा ने उन्हें धीरज बँधाया। नकली राम-मुंड होने का आभास कराया।

प्यारे मित्र ! राम को हतोत्साह करने के लिए रावण ने घोषणा करा दी कि सीता मेघनाद के द्वारा मारी गईं। राम बहुत दुःखी हुए। उन्हें विभीषण ने धीरज बँधाई। विभीषण बोले,—"देव ! रावण के दिल की बात मैं जानता हूँ,—वह किसी भी कीमत पर सीता की हत्या न होने देगा। आपका दिल तोड़ने के लिए, ये सब रावण की चाल हैं।"

प्यारे मित्र ! विभीषण के कथन से राम को रावण की चाल का पता चल गया। सीता जीवित हैं—इसका उन्हें विश्वास हो आया।

प्यारे मित्र ! युद्ध चलता रहा। रावण की सेना बुरी तरह हारती गई। सैनिकों के साथ उसके अनेक सेना-नायक भी खेत आये। उसके अपने पुत्र प्रहस्त आदि भी मारे गये। अपनी हार होती देख कर, रावण ने अपने भाई कुम्भकरण को सोने से उठाया। उससे सब हाल कहा। उसे लड़ने के लिए प्रेरित किया।

कुम्भकरण बोला,—"राजन ! सीता को लंका में लाकर आपने अच्छा न किया। नाहक मुसीबत मोल ली। खैर, जो

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हुआ सो हुआ। सीता को अपनी बना भी सके ?"

प्यारे मित्र ! रावण बोला,—"भाई कुम्भकरण ! सीता को अपना बनाने की बहुत चेष्टा की, पर अपना बना न सका। बहुत समझाया-बुझाया, डराया-धमकाया भी, किन्तु सीता मेरी होने को तैयार न हुई। उनका मन राम में ही बसा रहा। उन्हें अपनी पटरानी बनाने का मेरा प्रयास विफल ही रहा।"

प्यारे मित्र ! तब कुम्भकरण बोला,—"राजन ! आप तो स्वेच्छा रूप धरते हैं। राम का रूप धर कर, क्यों नहीं सीता के पास जाते ? फिर तो, सीता आपको राम जानकर अपना ही लेगी।"

रावण बोला,—"मैंने यह युक्ति भी लगाई। पर इसमें भी विफल रहा। भाई कुम्भकरण ! जब राम का रूप धरता हूँ, तो पराई नारी माता की तरह लगने लगती है। फिर तो सीता को अपनी पत्नी बनाने की इच्छा ही नहीं होती।"

प्यारे मित्र ! जब राम के रूप की इतनी महिमा है तो फिर, उनके व्यक्तित्व का क्या कहना ! बोलिए—सियावर रामचन्द्र की जय !

प्यारे मित्र ! रावण के आदेश पर, कुम्भकरण रण-भूमि में उतर पड़ा। कपियों पर घातक प्रहार करने लगा। कितनों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

को मार गिराया। कपि दल में भगदड़-सी मच गई। तब राम ने अपने अमोघ बाणों से उसे बेंध डाला। महा पराक्रमी कुम्भकरण धड़ाम से धरती पर गिरा। उसके प्राण निकल गए। उसकी मृत्यु से रावण बहुत मर्माहत हुआ। मेघनाद ने उसे धीरज बँधाई।

प्यारे मित्र! कुम्भकरण को रावण के खोटे काम पसन्द न थे। आज्ञाकारी भाई होने के कारण वह उनकी हर आज्ञा मानता गया। हर परिस्थिति में साथ देता गया।

प्यारे मित्र! जैसे कुम्भकरण रावण का आज्ञाकारी पराक्रमी भाई था—वैसे ही मेघनाद उसका पुत्र। दोनों के लिए रावण को बहुत गौरव था। आज दिन भी दोनों वीरों का नाम आदर के साथ लिया जाता है। विभीषण के चरित्र पर मतैक्य नहीं है। अधिकांश लोग उनकी निन्दा ही करते हैं। उनको लक्ष्य कर लोग कहा करते हैं—"घर का भेदिया लंका डाहा।"

प्यारे मित्र! अब विषय प्रसंग पर आवें—

मेघनाद-वध

प्यारे मित्र! पिता का परम भक्त मेघनाद बड़ा ही शूर वीर था। तपश्चर्या में भी उसकी स्पृहा थी। उसने तप द्वारा प्रचुर शक्ति प्राप्त की थी। वह शत्रु सेना पर टूट पड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

बाणों की वर्षा कर, अनेकों को आहत किया। तब लक्ष्मण उससे लड़ने लगे। देर तक दोनों ओर से बाण पर बाण छूटते रहे। दोनों एक से एक पराक्रमी और रण कौशल में प्रवीण थे। बसी में, लक्ष्मण के पक्ष में सत्य था। उनकी आत्मिक शक्ति मेघनाद से बढ़ कर थी। उन्होंने अपने चोखे-तीखे बाणों से मेघनाद को मार गिराया। उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

प्यारे मित्र! मेघनाद की मृत्यु से रावण अत्यधिक मर्माहत हुआ। उसकी हिम्मत टूट चली। बचो-खुची सेना के साथ वह स्वयम् लड़ने लगा। उसे भी राम ने तीखे बाणों से घायल किया। वह रण-क्षेत्र से लौट पड़ा।

रावण का धार्मिक अनुष्ठान

प्यारे मित्र! रावण तपश्चर्या भी किया करता था। शक्ति संचय के लिए, उसने धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ किया। हवन-कुंड में घो की आहुति पड़ने लगी। वह स्वयम् ध्यानस्थ हो गया। उसके धार्मिक अनुष्ठान की सूचना विभीषण को मिली। उसने राम से कहा,—"भगवन् रावण का धार्मिक अनुष्ठान शीघ्र भ्रष्ट कराइए; वरना वह शक्ति संचय कर और बली हो जायगा।"

प्यारे मित्र! हनुमान, अंगदादि वीर तुरन्त भेजे गए। लंका में घुसे। रावण का यज्ञ विध्वंस किया। खूब गोरोला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

युद्ध हुआ। रावण स्वयम् समाधि लगा कर बैठा था। उसकी समाधि भंग हुई। अनुष्ठान के अवसर पर एकत्रित, उसके अन्तःपुर की स्त्रियाँ भाग चलीं। महारानी मंदोदरी भी धक्के में पड़ी। तन के वस्त्र-भूषण फिसल चले। इससे रावण को आन्तरिक वेदना हुई।

रावण मंदोदरी संवाद

प्यारे मित्र ! रावण की पटरानी मंदोदरी मेघनाद प्रहस्त आदि पुत्रों के वध तथा रावण की हार होती देखकर बहुत दुःखी हुईं। रावण के चरण पकड़ कर, समझाने लगीं। आँसू बहाती बोलीं,—"स्वामी ! अब भी मान जाइए। सीता को वापस कर, राम से मित्रता कर लीजिए।"

तब रावण बोला,—"प्यारी ! सेना मारी गई। भाई मारे गए। पुत्र गँवा डाले। तू ही कहो—अब तू-हम जी कर क्या करेंगे। अभी मित्रता कर लोक-बीच कैसे मुँह दिखाएंगे !! अपमानित घृणित जीवन कैसे बिता पाएँगे !!!

प्यारी ! अब रोने-कलपने-विलपने का समय नहीं। उठो। धीरज धरो। अब देर न करो। मुझे रण-क्षेत्र में विदा करो। जानता हूँ, मैं वीर गति को प्राप्त हूँगा। तू भी सती हो पातिव्रत धर्म निभा देना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

प्यारी ! निश्चय ही हम दोनों स्वर्ग में मिल पाएँगे।"

प्यारे मित्र ! मंदोदरी बहुत ही विदुषी, नीति निपुणा नारी थीं। उन्होंने उमड़ते आँसुओं को भीतर 'ही भीतर रोका। मुंह पोंछा। ओठों पर कृत्रिम मुस्कान लायीं। स्वामी की आरती उतारीं। चरण छू कर प्रणाम किया। फिर स्वामी की मंगल-कामना करती रण क्षेत्र में विदा किया।

प्यारे मित्र ! मंदोदरी को आज, अप-शकुन हो रहे थे। दाहिने अंग फड़क रहे थे। मन में अमंगल की अशंकाएँ उठ रही थीं। चित्त उद्विग्न हो रहा था। शोक-सागर में डूब रही थीं। उनका स्थूल शरीर भर ही महल में था। सूक्ष्म शरीर तो पति के साथ था। आज उनका जी नहीं लग रहा था।

राम-रावण-युद्ध और रावण वध

प्यारे-मित्र ! रावण, मंदोदरी से विदा लेकर, सुन्दर विमान पर सवार हुआ। रथ में अस्त्र-शस्त्र रखे। अवशेष सेना के साथ रण-क्षेत्र में उतर पड़ा !

प्यारे मित्र ! उधर से राम अपनी सेना के साथ पैदल ही पधारे। युद्ध प्रारम्भ हुआ। दोनों ओर से ब।ण पर बाण छूटने लगे। राम-रावण ने भिन्न-भिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

छोड़े। खूब रण-कौशल दिखलाए। अन्त में राम ने अपने अमोघ बाणों से रावण को मार गिराया। देखते-देखते वह वीर गति को प्राप्त हो गया। उसकी मृत्यु की खबर बिजली की तरह तुरंत लंका पुरी भर में फैल गई। मंदोदरी आदि अन्तःपुर की स्त्रियाँ विलाप करने लगीं।

प्यारे मित्र! युद्ध का अन्त हुआ। राम विजयी हुए। विभीषण लंका का राजा बने।

हनुमान द्वारा सीता को राम-विजय और रावण-वध की सूचना

प्यारे मित्र! राम सीता से मिलने के लिए, आतुर हो रहे थे। तुरंत हनुमान से बोले,—"हनुमान! शीघ्र जाओ, और सीता को विजय की खुश-खबरी सुनाओ। और विभीषण से कहो,—कि सीता को स्नान करा कर, उबटन, लेपादि लगवा अच्छे वस्त्र-भूषण पहना कर यहाँ शीघ्र लावें।"

प्यारे मित्र! हनुमान तुरंत सीता जी के पास गए। माता जानकी शोकाकुल बैठी थीं। देह मुरझा कर सूख-सी गई थी। तन के वस्त्र मलीन हो गए थे। रूखरे बाल मुँह पर बिखरे पड़े थे। माता सीता बहुत ही दुःखिनी-सी लग रही थीं।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

प्यारे मित्र ! हनुमान ने माता जानकी को हाथ जोड़कर प्रणाम किया। सीता मैया ने धीमे स्वर में आशिष भर दीं। हनुमान ने हाथ जोड़े विनीत भाव से रावण-वध और राम विजय की खुशखबरी सुनायी। सीता जी का दिल खुशी से भर आया। पुलकित हो उठा। हर्ष से कँठ रुँध-सा गया। कुछ बोल न सकीं।

प्यारे मित्र ! तब हनुमान जी हाथ जोड़े बोले—"माता ! आप कुछ बोल नहीं रही हैं ?"

क्षण-भर चुप रह, माता सीता बोलीं,—"पुत्र ! पति की विजय की खुश खबरी सुनते ही, मेरा हृदय हर्ष से भर गया। कंठ रुँध गया। कुछ देर बोल न सकी। प्यारे पुत्र ! तू ने इतना प्रिय संदेसा लाया है कि इसकी बराबरी में तुझे देने के लिए, मैं कुछ नहीं पाती। पुत्र ! तेरा सदा मंगल होगा।"

प्यारे मित्र ! इतना कहते-कहते माता जानकी की आँखें आँसुओं से छल-छला उठीं।

प्यारे मित्र ! इसी बीच हनुमान की दृष्टि राक्षसियों पर पड़ी। वे बोले,—"माता इन राक्षसियों ने आपको बहुत सताया है। आज्ञा मिले तो, इन्हें तुरन्त मार डालूँ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्यारे मित्र ! माता सीता बोलीं,—"वत्स ! प्राणी अपने ही कामों का फल भोगता है। मैंने अपने कर्म का ही फल भोगा है। प्रारब्धवश दुःख झेला है। इन बेचारियों ने तो स्वामी की आज्ञा ही भर पालन की है। अब ये मुझे कहाँ सताती हैं !

पुत्र ! भूलें सब से होती हैं। पापी भी दया का पात्र होता है। हमें सदा सदाचार ही बरतना चाहिए। पापी के साथ भी पाप-पूर्ण वर्त्ताव न करना चाहिए।"

प्यारे मित्र ! वास्तव में, मैया सीता दया की मूर्ति हो हैं। बहुत ही दयालु। बहुत ही कृपालु। माता दोष नहीं देखती हैं। सदा वात्सल्य प्रेम ही बरसाती हैं। माता कभी कोपित नहीं होती हैं।

प्यारे मित्र ! वास्तव में थोड़ा कम या बेसी दोष सब से होता है। भूलें सभी करते हैं। हमें पापी के साथ भी सदाचार बरतना चाहिए। उसे भी सहारा देना चाहिए। बेचारे को उबारना ही चाहिए। औरों के दोष न ढूँढ़ना चाहिए।

सीता-राम मिलन

प्यारे मित्र ! हनुमान ने विभीषण को राम का संदेश सुनाया। विभीषण सीता जी के पास अपने अन्तःपुर की स्त्रियों

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: I

के साथ तुरंत गए। स्त्रियों ने सीता जी को स्नान कराया। उबटन लेपादि लगाए। अच्छे वस्त्र-भूषण पहनाए। फिर विभीषण माता जानकी को सुन्दर रथ में बैठाकर, राम के शिविर में लाए। उनके आने की खबर राम को दी। राम ध्यानस्थ बैठे थे। बोले,—"सीता को शीघ्र लाओ।"

प्यारे मित्र! कपि गण सीता जी के दर्शन के लिए दौड़ पड़े। सुग्रीव उन्हें भगाने लगे। भारी कोलाहल-सा मचा। तब राम बोले,—"नारियों का पर्दा उनका पाति-व्रत्य है। उनका शील है। साथ-साथ दुःख विपत्ति में, युद्ध में तथा स्वयंवर, यज्ञ और विवाहों में स्त्रियों का सब के सामने सोझा होना, (आना) अनुचित नहीं होता। सीता विपत्तियों में पड़ी रही हैं। सहानुभूतिवश सभी उनके दर्शन चाहते हैं। उन्हें करने दिया जाय! सीता पाँव पैदल मेरे पास लाईं जायँ।"

प्यारे मित्र! ऐसा ही हुआ। सीता राम के पास पैदल ही पहुँची। लम्बे अरसे के बाद, राम के दर्शन करके कृत्य-कृत्य हो गईं। पैर छू प्रणाम किया। फिर एक टक से राम को निहारती रहीं! आँखों से प्रेम की अश्रुधारा बह चली। राम बड़े सम्मान से मिले। पास बैठाकर प्रीति पूर्वक बातें करने लगे।

राम बोले,—"प्राण प्यारी! दैवयोग से तुझे दारुण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दु:ख सहने पड़े। शत्रु का बंदी बन, कई मास रहना पड़ा। तेरे अपहरण के दिन से लगा-लगा; शत्रु पर घमासान युद्ध के बाद विजय पाई। तेरे हरने वाले रावण को मार डाला। अब मेरे और तेरे दु:खों का अन्त हुआ।"

प्यारे मित्र! माता सीता का शरीर गद्-गद् हो उठा। प्रेम और प्रसन्नता में कंठ रुँध-सा गया। कुछ बोल न सकीं। शीलवश आँखें नीची कर पति के चरणों को निरखने लगीं। कपि सेना सीता के दर्शन कर कृत्य-कृत्य हो गई। लक्ष्मण ने विनीत भाव से हाथ जोड़ कर माता जानकी को प्रणाम किया। माँ ने प्रीति भरी सस्नेह आशिष दीं। लक्ष्मण के नेत्र आँसुओं से भर आए।

प्यारे मित्र! आज मेरी भी खुशी का वारा-पार नहीं है। सीता की अपहरण बेला से अब तक कल्पना में रोता ही रहा हूँ। आज सीता मैया को राम के साथ पा कर फूला न समा रहा हूँ। लगता है जीवन में सब कुछ पा गया हूँ।

प्यारे मित्र! आगे की चर्चा अगले पत्र में होगी। अब विदा दीजिये।

प्यारे मित्र! आज की कथा विसर्जन होती है। चरणामृत रूप में आइए रामायण के अमृतवत् वचनामृत को पान करें। सत्य, प्रेम और धैर्य को जीवन में उतारें। सत्य-पथ पर अडिग रहें। जीवन में असत्य असत्य पथ का आश्रय कभी न लेने का व्रत लेवें।

आपका आत्मरूप—गणेश

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

लंका से राम का अयोध्या प्रस्थान

जमशेदपुर
१५-११-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम !

पिछले पत्र में रावण का वध हो चुका है। सीता-राम मिल चुके हैं। आगे की वार्ता सुनिए :—

प्यारे मित्र ! मिलन की वह प्रथम रात राम-सीता ने लंका में अपनी सेना शिविर में बिताई। उधर चौदह वर्ष का बन-वास काल बीतते-बीतते बीत गया था। अब उन्हें तुरन्त अयोध्या लौटने की पड़ी थी। भोर होते ही राम ने सुग्रीव से सेना को लौटने की आज्ञा देने को कहा। सब लौटने को तैयार होने लगे।

प्यारे मित्र ! इतने में विभीषण भी लकापुरी से आ गए। तब राम, सुग्रीव, विभीषण आदि से बोले—

"आप सब गाढ़े में काम आये। मेरे हित अनेक कष्ट सहे। मेरी विजय कराई। मेरे बन-वास के दिन बीत चुके हैं। मुझे अयोध्या शीघ्र लौटना है। भाई भरत से मिलना है। मैं आप सबों का भारी आभारी हूँ। अब विदा चाहता हूँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

विभीषण ! आप लंका में राज्य करें और सुग्रीव ! आप किष्किन्धा लौट कर अपना राज-काज सँभालें।"

प्यारे मित्र ! तब विभीषण बोले,—"देव ! कुछ दिन लंका में निवास करें।"

राम बोले,—"विभीषण ! मुझे अयोध्या लौटकर शीघ्र भरत से मिलना है। भाई भरत बड़ी उत्सुकता से मेरी वाट जोह रहे होंगे। अब आप ऐसा उपाय करें, जिसमें, मैं शीघ्र अयोध्या लौट जाऊँ।"

तब विभीषण बोले,—"देव ! कुवेर का पुष्पक विमान आपके लिए सुरक्षित रखा गया है। उस पर सवार हो, आप आज ही अयोध्या पहुँच जाएँगे।"

प्यारे मित्र ! फिर राम की आज्ञा से विभीषण ने पुष्पक विमान मँगवा लिया। लंकापुरी से विभीषण के अन्तःपुर की नारियाँ भी आईं। सीता का सिंगार किया। तेल-उबटन लगाया ! बालों में कंघी दे सँवारा। पवित्र सुन्दर वस्त्र-आभूषण पहनाए।

फिर विभीषण बोले,—"देव ! मुझे सेवा की आज्ञा दीजिए।"

तब राम बोले,—"स्वर्ण, मणि आदि कपि सेना में बाँट दीजिए। उन्हें भरपूर पुरस्कृत कर दीजिए। उन्होंने युद्ध में

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

बड़ी वीरता दिखलाई है। उन्हें देते-लेते रहेंगे, तो वे आते-जाते रहेंगे।"

प्यारे मित्र ! संकेत पाते ही, विभीषण ने स्वर्ण, मणि आदि बहुमूल्य वस्तुएँ मँगवा कर, कपियों में खूब बाँटें। सभी निहाल हो गए।"

फिर विभीषण राम से बोले,—"देव ! हमें भी अयोध्या चलने की आज्ञा दीजिए। आपका राज्याभिषेक देखना चाहते हैं।"

प्यारे मित्र ! सुग्रीव, अंगद, हनुमान, नल-नील आदि भी राम के साथ अयोध्या जाने को उत्सुक थे। राम ने सबों को साथ चलने की अनुमति दे दी। सभी पुष्पक विमान पर आरूढ़ हुए। विमान आकाश से अयोध्या उड़ चला। कपि सेना किष्किन्धा को लौट पड़ी।

प्यारे मित्र ! रामचन्द्र जी सीता जी से बातें करते, राम सब कुछ ऊपर से दिखलाते चले।

राम बोले,—"सीते ! सुन्दर लंकापुरी देखो। रक्त-मांस से लद-फद रण-क्षेत्र देखो। देखो, यहीं रावण को मार गिराया था।

प्यारी सीते ! सौ योजन लम्बा समुद्र-सेतु देखो। नल-नील ने बड़ी कुशलता से बाँधा है। इसी से होकर हमारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सेना समुद्र पार हुई है। देखो यहाँ समुद्र-तट पर विजय की कामना से रामेश्वर महादेव की स्थापना की है।

प्यारी ! देखो, यही सुन्दर किष्किन्धा पुरी है।"

प्यारे मित्र ! तब सीता जी बोलीं,–"स्वामी ! किष्किन्धा से सुग्रीव के अन्तःपुर की नारियों को भी साथ लेते चलें। वे भी कुछ दिन अयोध्या में रहेंगी।"

प्यारे मित्र ! फिर तो विमान किष्किन्धा में उतरा। सुग्रीव के रनिवास की रानियाँ साथ होलीं। अंगद की माता तारा भी साथ चलीं।

प्यारे मित्र ! तारा बहुत ही विदुषी, नीति-निपुणा, पतिव्रता नारी थीं। तारा का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। अपने पति राजा बालि की मृत्यु के बाद, वैधव्य जीवन बिता रही थीं। पुत्र अंगद को पाल रही थीं। राजकाज में सुग्रीव को परामर्श दिया करती थीं। आखिर, क्या करतीं। बेचारी के दुर्दिन के दिन आ गए थे। पति वियोग से शोकाकुल रहा करती थीं।

प्यारे मित्र ! सब को लेकर किष्किन्धा से पुष्पक विमान उड़ चला।

राम सीता से बातें करते चले। बोले,—"प्यारी सीते !

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यही सुन्दर ऋष्यमूक पर्वत है। देखो, यहीं सुग्रीव से मित्रता हुई थी। ओ, देखा, वहीं शवरी का आश्रम है। ओ, देखो, हम लोगों की पर्ण कुटी सूनी पड़ी है।"

प्यारे मित्र ! पर्ण कुटी देखते ही सीता जी को अपहरण-वेला याद हो आई। दुःखद घटना चित्रवत आँखों के सामने से गुजर गई। पल भर के लिए मन मलीन हो गया। राम भाँप गए। दोनों चुप रहे।

कुछ क्षण चुप रह, राम बोले,—"प्यारी ! गोदावरी नदी की निर्मल धारा। ऋषि अगस्त्य और शरभंग के आश्रम भी देखो। ओ देखो अत्रि मुनि का आश्रम दिख रहा है। और देखो, यहीं हमने विराध का वध किया था।

प्यारी ! देखो, यहीं न तूने अनुसूया के दर्शन किये थे। लो, चित्रकूट पहुँच गए। यहीं भरत हम लोगों से मिले। देखो, यही भरद्वाज ऋषि का पवित्र आश्रम है।"

भरद्वाज ऋषि के आश्रम में राम का आगमन

प्यारे मित्र ! रामचन्द्र जी ने विमान को भरद्वाज ऋषि के आश्रम पर उतारने का आदेश दिया। विमान वहीं उतारा गया। सब उतर कर मुनि के आश्रम में गए। सबों ने मुनि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

को सादर प्रणाम किया। भरद्वाज मुनि बहुत प्रसन्न हुए। सस्नेह आथित्य सत्कार किए।

ऋषि भरद्वाज बोले,—"प्यारे राम! मेरे शिष्य प्रायः अयोध्या आया-जाया करते हैं। वहाँ सब कुशल है। सभी माताएँ कुशलपूर्वक हैं। भरत, आपके पादुका को राज-सिंहासन पर रखकर, आपके प्रतिनिधित्व के रूप में ही राज-काज चलाते हैं।

प्रिय राम! जब आप वन जा रहे थे, आपको वनवासी वेष में देखकर बड़ा कष्ट हुआ था। आपको दण्डकवन के जन स्थान में भीषण कष्ट झेलने पड़े हैं। मुझे योग-वल से सब कुछ मालूम है। आपने बड़े-बड़े कठिन काम किए। राक्षसों को मारकर पृथ्वी का भार उतारा। बनवास का चौदह वर्ष आज पूरा होता है। आज रात मेरे आश्रम में रहिए। कल प्रातःकाल चले जाइएगा।"

प्यारे मित्र! उस रात रामचन्द्र जी ने भरद्वाज मुनि के आश्रम में विश्राम किया।

हनुमान द्वारा भरत को राम-आगमन की सूचना

प्यारे मित्र! रामचन्द्र जी महावीर जी से बोले,—"हनुमान! आप शीघ्रता से अयोध्या चले जाँय। राह में

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शृङ्गवेरपुर में निषाद पति गुह से मिलते जायँ। अयोध्या में भरत से मिलकर, मेरे आगमन की सूचना दें। कहें,—"मैं सीता-लक्ष्मण तथा अपने मित्रों के साथ वापस आ रहा हूँ। वहाँ का समाचार लेकर शीघ्र लौटें।" हनुमान तुरन्त चल पड़े।

प्यारे मित्र! युद्ध काण्ड की चर्चा समाप्त हुई। अगले पत्र में उत्तर काण्ड की चर्चा की जायगी। आज रात भरद्वाज मुनि के आश्रम में ही विराजें। कल सवेरे राम-सीता के साथ हो लेंगे और अयोध्या चल चलेंगे।

आप को अनन्त शुभकामनाओं के साथ पुनः प्रणाम!

आपका आत्मरूप
गणेश

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उत्तर काण्ड

जमशेदपुर
१६-११-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम !

पिछले पत्र में, राम-मंडलो भरद्वाज आश्रम में विश्राम कर रही है। हनुमान अयोध्या के लिए चल पड़े । आगे की वार्ता सुनिए :--

हनुमान गंगा नदी पार कर श्रृङ्गवेरपुर पहुँचे । गुह से मिले । उन्हें राम-आगमन की खुश खबरी सुनाई । बोले,— ‘राम आज की रात भरद्वाज आश्रम में विश्राम करेंगे । कल प्रातः काल इसी राह से अयोध्या जायँगे । आप यहीं रहें। यहीं से दर्शन हो जायँगे ।”

प्यारे मित्र ! निषाद राज गुह से विदा ले, हनुमान अयोध्या के लिए चल पड़े । शीघ्रता से जाकर अयोध्या से एक मील दूर बसे नंदी ग्राम पहुँचे । भरत यहीं पर्ण-कुटी में तपस्वी की तरह रह रहे थे । हनुमान ने देखा—भरत जटा बढ़ाए, कोपीन पहने, तपस्वी वेष में जमीन पर मृग चर्म बिछाए बैठे हैं । तन कृषित हो गया है । चिन्ता में डूबे हुए हैं ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हनुमान बड़ी नम्रता से भरत से बोले—"जिनकी चिंता में डूबे हैं—वे राम, भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ कुशल से वापस आ रहे हैं। आज रात प्रयाग के पास, भरद्वाज आश्रम में ठहर गए हैं। कल प्रातःकाल वहाँ से प्रस्थान कर यहाँ आ जाएंगे। उनके साथ उनकी मित्र-मंडली भी आ रही है। किष्किन्धा के राजा सुग्रीव, लंकापति विभीषण, युवराज अंगद आदि आ रहे हैं।

प्यारे मित्र! राम के आगमन की खुश खबरी से भरत का दिल खुशी से भर आया। खुशी के आँसू उमड़ पड़े। उन्होंने बड़े प्रेम से हनुमान का आलिंगन किया। कहा,—"तू ने बड़ी प्रिय खबर सुनाई। इसकी कीमत मैं नहीं चुका सकता।

भरत ने तुरंत राम-आगमन की सूचना माताओं को अन्तःपुरी में दी। शत्रुघ्न को पुरवासियों को खबर देने के लिए कहा। अयोध्यापुरी को खूब सजाने को बोले।

प्यारे मित्र! राम के आगमन की खबर अयोध्यापुरी में बड़ी तेजी से फैल जाती है। सभी पुरवासी खुशी में उछल पड़ते हैं। अपने घर-दरवाजों को सजाते हैं और नगर के बाहर राम के दर्शन के लिए निकल पड़ते हैं। सारी पुरी गूंज उठती है। मित्र! आज की अयोध्यापुरी देखते ही बनती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

है। लोग खुशी में झूम रहे हैं। माता कौशल्या और सुमित्रा की खुशी का क्या कहना! वे झट अन्त:पुरी से निकलीं और पुरवासियों के आगे हो लीं।

प्यारे मित्र! उधर हनुमान राम के पास लौटे। अयोध्या का समाचार कह सुनाया।

राम अयोध्या लौटे।

प्यारे मित्र! राम प्रातःकाल ही उठे। भरद्वाज मुनि से विदा ली और अयोध्या के लिए सब के साथ चल पड़े। पुष्पक विमान आकाश मार्ग से उड़ चला।

रामचन्द्र जी सीता जी से बोले—"सीते! ओ, देखो गंगा नदी की निर्मल धारा को! निषाद पति गुह का नगर शृङ्ग-वेरपुर देखो। यहीं हम लोगों ने विश्राम किया था। देखो, सुहानी अयोध्यापुरी भी दीखने लगी।"

प्यारे मित्र! सभी अयोध्या को देखने लगे। राम बोले,—"मेरी जन्मभूमि अयोध्या मुझे बहुत प्यारी है।"

प्यारे मित्र! देखते-देखते पुष्पक विमान अयोध्या पहुँचा। राम के आगमन में खड़े-अयोध्यावासी—आकाश में विमान देखते ही, हर्षोल्लास में बोल उठे—"ओ, राम का विमान आ गया।" हर्ष ध्वनि से आकाश गूँज उठा।

प्यारे मित्र! पुष्पक विमान उतरा। विमान में प्रवेश

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कर भरत राम से मिले । राम ने उन्हें बड़े स्नेह से छाती से लगा लिया । फिर राम-लक्ष्मण ने माता कौशल्या, सुमित्रा और केकई के पैर छू-छूकर प्रणाम किए । फिर पुरोहितों को सादर प्रणाम किया । सीता सासों के पैर पड़ीं । कौशल्या और सुमित्रा ने छाती से लगा-लगा आशिष दीं ।

प्यारे मित्र ! पूरे चौदह वर्ष के बाद राम-सीता और लक्ष्मण लौटे थे—सो भी वन से । फिर माताओं की खुशी का क्या कहना ! उस मिलन के मार्मिक दृश्य को मेरी लेखनी चित्रित करने में पार नहीं पा रही है । कौशल्या और सुमित्रा—की खुशी का थाह क्या पाया जा सकता है ! उसे तो माँ का हृदय ही जान सकता है । प्यारे मित्र ! पर इस खुशी में भी दुःख की भारी कसक थी । माताओं को आज राजा दशरथ का अभाव खटक रहा था । प्यारे मित्र ! नहीं कहा जा सकता कि स्त्री पति को ज्यादा प्यार करती है कि पुत्र को, कि दोनों को बराबर । उसके पति-पुत्र प्रेम का थाह नहीं पाया जा सकता ।

प्यारे मित्र ! सब से मिल कर, राम, माताओं, भाइयों और गुरू जनों के साथ राज भवन आए । माताओं ने बड़े प्यार से जेवाया । फिर बातें करती रहीं । उधर लंकापति विभीषण और किष्किन्धा नरेश सुग्रीव का शाही सत्कार हुआ ।

प्यारे मित्र ! लक्ष्मण भारी आतुरता से उर्मिला से मिले । दोनों की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आँखों से प्रेमाश्रु बह चले। कंठ रुँध-से गए। कुछ देर दोनों बोल न सके।

प्यारे मित्र! दोनों भरी जवानी में विलग हुए थे। पूरे चौदह वर्ष के बाद मिले थे। जवानी ढल चुकी थी। उर्मिला वियोगाग्नि में पूरी तरह दह चुकी थीं। यौवन–सौंदर्य कूच कर चुका था। वियोगाग्नि में जलते-जलते कैसे चौदह वर्ष बिता सकी थीं, वह तो उनकी जैसी वियोगिनी ही जान सकती है। स्वामी के चरण छूकर प्रणाम किया। लक्ष्मण ने सस्नेह आशीर्वाद दिया। फिर दोनों बातें करने लगे।

प्यारे मित्र! बाल्मीकीय रामायण में लक्ष्मण-उर्मिला विछोह, मिलनादि की चर्चा न हुई है। कवि ने हमें विचारने के लिए छोड़ दिया है। वनवास राम का हुआ था। उनकी पत्नी सीता साथ गईं। लक्ष्मण राम के साथ गए। उर्मिला अयोध्या में ही रहीं। जवानी के चौदह वर्ष तक दारुण पति वियोग दु:ख सहती रहीं।

प्यारे मित्र! अगले पत्र में राम के राज्याभिषेक की चर्चा करूँगा।

प्यारे मित्र! लगभग सोलह वर्ष की अवस्था में, राम-लक्ष्मण ने घर छोड़ा। विश्वामित्र जी के साथ सिद्धाश्रम गए। वहीं उनकी विशेष शिक्षा-दीक्षा हुईं। अठारह वर्ष की उम्र में ब्याह हुआ। बारह वर्ष तक वैवाहिक जीवन कुछ अयोध्या, कुछ ससुराल जनकपुर में बिताए। तीस वर्ष की अवस्था में वन गए। वनवास काल में प्रथम दश मास चित्रकूट में बिताए। बारह वर्ष पंचवटी में निवास किया।

रावण के साथ युद्ध में लगभग दश मास व्यतीत हुए।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पन्द्रहवें वर्ष के ठीक प्रथम दिन–आज अयोध्या लौटे हैं। आज उनकी आयु चौआलिस वर्ष की हो गई है।

प्यारे मित्र ! राम-लक्ष्मण के साथ हम लोगों ने भी अट्ठाइस वर्षों तक भ्रमण किया। यात्रा में सदा पाँच रहे। प्रथम राम-लक्ष्मण और महर्षि विश्वामित्र, फिर राम लक्ष्मण और मैया सीता—दोनों दलों के साथ, हम दोनों सदा साथ रहे। उनके सुख के दिन देखा, उनके दुख के दिन भी। उनके साथ-साथ दारूण विरह व्यथा भी सही। आज पुरवासियों की खुशी का वारा पार नहीं है। प्यारे मित्र ! हमारी भी खुशी सीमा पार कर चुकी है। लेखनी उसे बता न पा रही है। आइये खुशी में, इतराती अयोध्या नगरी की शोभा घूम-घूम कर देखें। राम राज्याभिषेक की तैयारी भी बड़े धूम-धाम से होने लगी है। पुरवासी घर-बार सजाने लगे हैं। बाजे बजने लगे हैं। जगह-जगह नृत्य-गाने होने लगे हैं। बस ! अब चलें। देखें-सुनें। देख-देख नैना जुड़ा लें। सुन-सुन हियरा हर्षा लें।

प्यारे मित्र ! आज दिन की कथा विसर्जन होती हैं। चरणामृत के रूप में सीता मैया के वचनामृत–भूलें सबसे होती हैं; पापी के साथ भी पापाचार नही करना चाहिए, उसे सहारा ही देना चाहिये–को पान करें। जीवन में उतारें।

प्यारे मित्र ! दोषी को भटका पथिक समझें। उसे राह पर लाने की भरसक कोशिश करें।

आप को अनन्त शुभकामनाओं के साथ सस्नेह। सादर प्रणाम।

आपका आत्मरूप

गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

राम का राज्याभिषेक

जमशेदपुर
१७-११-६८

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम !

पिछले पत्र में हम दोनों राम, लक्ष्मण और माता सीता के साथ चौदह वर्ष वनवास के बाद कल अयोध्या लौटे हैं। भरत आज ही राम को राज्य सौंप रहे हैं। राम का राज्याभिषेक आज ही हो रहा है। कल से ही अयोध्यापुरी में काफी चहल-पहल है।

प्यारे मित्र ! राजा दशरथ द्वारा आयोजित राज-तिलक की तैयारी देख चुके हैं। उसकी याद आज चौदह वर्ष के बाद भी ताजी है। उसके सामने आज की तैयारी फीकी-सी लग रही है। लोगों को राजा दशरथ का निधन खल रहा है।

माता कौशल्या के चित्त की स्थिति तो अजीव-सी हो गयी है। एक ओर पुत्र के राज्याभिषेक से खुश हैं तो दूसरी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ओर पति के निधन की स्मृति से दुःखी हैं। पुत्र के मंगल के लिए, उमड़ते आँसुओं को रोक रखी हैं।

प्यारे मित्र ! किसी के लिए जग का काम रुकता नहीं है। राम का राज-तिलक हुआ। राम राजा बने। सीता मैया महारानी बनीं। खूब दान-पुण्य हुआ। राम भाइयों के सहयोग से राज्य करने लगे।

कुछ दिनों के बाद, राजा राम ने, विभीषण, सुग्रीव आदि अतिथियों को सादर विदा किया। उन्हें यथायोग्य भेंट दीं।

प्यारे मित्र ! भक्तवर हनुमान ने वहीं रहना चाहा। उन्हें राम न भेज सके। वे वहीं रहे।

राम-राज्य वर्णन

प्यारे मित्र ! राम बडी तत्परता और कुशलता से राज-काज देखने लगे। प्रजा की भलाई में ही रत रहने लगे। उनके अद्वितीय मधुर आकर्षक व्यक्तित्व से सभी उनकी ओर खिचे रहने लगे। जन-परिजन सभी प्रसन्न रहने लगे। उनके तीनों भाई जी-जान से राज-काज में हाथ बँटाते रहे। फलतः राम-राज आदर्श राज बन गया।

प्यारे मित्र ! राम-राज में प्रजा धन-धान्य से परिपूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

थी। किसो को भी किसी वस्तु का अभाव नहीं था। राजा राम के देखा-देखी सभी धर्म-रत रहते। उत्तम आचरण की शिक्षा राम से ही लेते। उनके सद्गुणों से ही प्रेरित होते। सदा कार्य रत रहने, सदाचार बरतने आदि की प्रेरणा भी अपने राजा राम से ही पाते। राम अपने आचरण से ही प्रजा में आदर्श प्रस्तुत करते।

राज-दरबार में ऋषि-मुनि भी आते। सत्संग होता। धर्म चर्चा होती।

राम राज्य में प्रजा सभी प्रकार से सुखी थी। किसी को भी न शारीरिक न मानसिक व्याधि होती। किसी की भी अकाल मृत्यु न होती। माता-पिता के जीवित रहते उनकी संतति न मरती। किसी भी नारी को वैधव्य दुःख न सहना पड़ता—कोई विधवा न होती। सभी सहृदय और सद्गुणी थे। कोई भी क्रूर और कपटी न था। सभी सर्वांग सुन्दर होते। लोगों में ऊँच-नीच का भेद-भाव नहीं था। सभी सुहृदवत् रहते। एक दूसरे के सुख-सुविधे का ख्याल रखते।

राज्य-भर में चोरों का भय नहीं था। राज-कर्मचारी अपने-अपने काम में दक्ष थे। सब के सब, प्रजा का हित चाहने वाले थे। सद्गुणी और सचरित्र थे।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राम का पराक्रम और प्रताप भी अद्वितीय था। इससे शत्रुओं का भय तनिक भी न था। प्यारे मित्र ! अच्छे राज्य के लिए राम-राज कहावत बन गया है।

राम को तीनों भाई—भरत, शत्रुघ्न और लक्ष्मण प्राण से भी प्यारे थे। उन्हें वे खूब प्यार करते। वे उन्हें पिता तुल्य मानते। राजकाज में हार्दिक सहायता देते। राम अपने सभी जनों के सुख-सुविधे का पूरा ख्याल रखते। सब के मान-मर्यादा रखते। माता और गुरु जनों को नित्य प्रणाम करते। उनकी आशिष लेते। सीता जी तो उनकी दूसरी जान हो थीं। उनका पत्नी प्रेम भी औरों के लिए आदर्श रूप ही था। वास्तव में मित्र ! राजा राम भाई, पत्नी आदि के लिए गुरु रूप ही थे। उन्हें समय-समय पर धर्म शिक्षा भी दिया करते। उनके द्वारा पूछे गए गूढ़ से गूढ़ विषय का भी संतोष जनक उत्तर देते।

प्यारे मित्र ! राम को कुश और लव दो यमज पुत्र पैदा हुए। तीनों भाइयों के भी दो-दो ही पुत्र-रत्न उत्पन्न हुए। बहुत समय तक राज्य करने के बाद, राम ने अपने ज्येष्ठ पुत्र कुश को अयोध्या का युवराज बनाया। अपने छोटे पुत्र लव के लिए, श्रावसी में राज्य कायम किया। उसे वहीं का राजा बनाया। लव ने लव कोट नामक नगर बसाया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

और उसे ही अपनी राजधानी बनाई। लव कोट नगरी ही लाहौर कहलाई।

प्यारे मित्र ! राम ने अपने भाइयों के पुत्रों को भी निम्न प्रकार से राजा बनाया—

भरत के पुत्र—तक्ष-तक्षशिला के और पुष्कर, पुष्कारनी के राजा हुए। शत्रुघ्न के पुत्र सुवाहु मथुरा का और शत्रुघाती विदिशा के राजा हुए और लक्ष्मण के पुत्र अंगद मल देश के और चन्द्रकेतु चन्द्रावती के राजा हुए। इस प्रकार से राम ने अपने दो लड़के और छह भतीजों का राज्याभिषेक किये। सुग्रीव और विभीषण के भी राज्याभिषेक आपने ही किये। इस प्रकार से अपने पराक्रम से राम ने दस राज्याभिषेक किये।

प्यारे मित्र ! अंग, वंग, मत्स्य, श्रृङ्गवेरपुर, काशी, सिन्धु, सौवीर, सौराष्ट्र, दक्षिण कोशल, किष्किन्धा और लंका द्वीप आदि राम की मित्र शक्तियाँ थीं।

वास्तव में राजा राम कुशल, नीति निपुण, महा पराक्रमी, धर्म धुरंधर आदर्श राजा थे।

राम कादेहावसान

प्यारे मित्र ! इस संसार में जो जन्मता है, वह मरता ही है। समय आने पर चारों भाई राम, माता सीता आदि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सब के सब इस मृत्यु लोक से उठ गए। उनकी कीर्ति भर रह गई।

प्यारे मित्र! मृत्यु निकट आने पर, राम, भक्तवर हनुमान से बोले,—"प्यारे हनुमान! मैं अब इस मृत्यु लोक से विदा हो रहा हूँ। जब तक इस भूतल पर मेरी कथा होती रहे, तब तक तू यहीं रहो। छिप-छिप कर मेरी कथा सुना करो। तू मेरा परम भक्त है। तेरा सदा कल्याण होगा।"

प्यारे मित्र! भक्तवर हनुमान की आँखों से आँसू उमड़ पड़े। रुँधे-कंठ से बोले,—"जो आज्ञा महाराज!" और राम के चरणों पर, फूट-फूट कर रोने लगे।

प्यारे मित्र! अनुमान किया जाता है कि भक्तवर हनुमान अभी जीवित हैं। जहाँ-जहाँ राम कथा होती है—वहाँ-वहाँ सूक्ष्म रूप में रहकर सुना करते हैं। भक्तों को कभी-कभी दर्शन दे दिया करते हैं। सन्त तुलसीदास को दर्शन दिए थे।

प्यारे मित्र! एक-एक कर, प्रायः हमारे सभी पात्र इस धरती से उठ गए। हमें अनाथ कर गए। एक हनुमान ही रह गए हैं—ऐसा प्रतीत होता है। उनके दर्शन भी नहीं होते। फिर कैसे धीरज धरें।

प्यारे मित्र! मनुष्य रूप में अवतरित राम चले गए। परन्तु भगवान रूप में तो वे कण-कण में व्याप्त हैं। हमारे आपके मन-मंदिर में ही आसीन हैं। फिर निराश क्यों होवें। उनका होकर जो रहता है—भला वे उसे कब छोड़ते हैं! फिर हमें ही क्यों छोड़ेंगे!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्यारे मित्र ! अब तो शेष जीवन को जहाँ-जहाँ राम-सीता रहे हैं—वहाँ-वहाँ रहते; जिन-जिन डगर से गए हैं—वहाँ-वहाँ जाते—राह की धूल के तिलक करते काट लेवें।

प्यारे मित्र ! अब तो अभिलाषा कवि आलम जैसी ही रह गई है:—

जा थल कीन्हें विहार अनेकन,
ता थल काँकरी बैठि चुन्यौ करैं।
जा रसना सों करीं बहु बातन,
ता रसना सों चरित्र गुन्यौ करैं।
'आलम' जौन से कुंजन में,
करी केलि, तहाँ अब शिश धुन्यौ करैं।
नैनन में जौ सदा बसते,
तिनकी अब कान कहानी सुन्यौं करैं।

प्यारे मित्र ! अगले पत्र में, परिशिष्ट रूप में रामायण के आदर्श पात्र–राम, सीता आदि के गुणों की चर्चा करूँगा।

आज की कथा विसर्जन पर चरणामृत रूप राम-नाम-रस पान करें।

बोलिए—सियावर राम की जै। मैया सीता की जै। लखन लाल की जै। भक्तवर हनुमान की जै।

आपका आतमरूप
गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

परिशिष्ट

रामायण के आदर्श पात्रों के चरित्र-चित्रण

जमशेदपुर
२५-११-६८

प्यारे मित्र !

सादर प्रणाम !

पिछले पत्रों में सारी राम-कथा की चर्चा हुई। किन्तु जी भरा नहीं है। लगता है राम-कथा से जी भरेगा भी नहीं। कहते-सुनते मन अघायेगा ही नहीं। नित नूतन रस मिलता ही रहेगा।

प्यारे मित्र ! आइए—राम के गुणों का बखान करें। रामायण के अन्य पात्रों के गुणों की भी चर्चा करें।

प्यारे मित्र ! राम के जीवन का हर पहलू हम सबों के लिए आदर्श-रूप है। उन्होंने अपने आचरण से ही सफल जीवन बिताने की हमें शिक्षा दी है। करके ही आदर्श प्रस्तुत किया है। इससे समझने में सुविधा होती है। जीवन में उतारने की प्रेरणा मिलती है। सहारा मिलता है।

मित्र ! उनका जीवन कितना नियमित था ! पहर रात रहते—उठते। नित्य-कृत्य से निवृत होते। फिर सन्ध्या-गायत्री का जाप करते। प्राणायाम करते। प्रातःकाल की स्वस्थ-सुगंध वायु का सेवन करते।

नित्य-प्रति माता, पिता और गुरुजनों को सादर प्रणाम करते। उनकी आज्ञा से उनके मनोनुकूल काम करते। अपने आचरण से उन्हें सदा प्रसन्न रखते।

पुरवासियों से प्रीति करते। यात्रा से लौटते तो उनसे मिलते-जुलते। उनके कुशल-क्षेम पूछते। उनके प्रति हार्दिक सद्भावनाएँ प्रदर्शित करते। अपनापन वरतते। वे भी उन्हें अपना-सा मानते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्यारे मित्र ! राम पुरवासियों की भलाई में ही रत रहते। उनके हित काज करते। अपनी सुख-सुविधे की अपेक्षा औरों की सुख-सुविधे का विशेष ख्याल रखते।

प्यारे मित्र ! जीवन में राम ने सत्य-पथ का ही आश्रय लिया। असत्य- पथ संकट-काल में भी न अपनाया। सारा जीवन समस्त काम धीरज से किए। उतावलापन कभी न दिखलाए। हरी सीता की सुधि पाकर भी धीरज से काम लिया। नीति-नियमों को पालन किया। जैसे-तैसे लंका न गए। सेना एकत्रित कर, उसे सभी प्रकार से सुदृढ़ बनाते ही लंका पहुँचे। युद्ध प्रारम्भ करने में भी आतुरता न दिखाई। चित्त स्थिर रख, विजय के लिए पथ प्रशस्त किया। शत्रु के भाई विभीषण को अपने पक्ष में लिया। शत्रु की सेना-शक्ति का पूरा पता प्राप्त कर ही लड़ाई छेड़ी। तभी तो रावण जैसे पराक्रमी को परास्त कर पाया। उसकी सुदृढ़ सेना को कपि सेना से ढाह गिराया।

प्यारे मित्र ! अपने पुनीत जीवन-चरित से राम चन्द्र जी ने नीति निपुणता और कार्य-कुशलता का आदर्श भी भरपूर प्रस्तुत किया। सफल जीवन के लिए, मित्र-धन नितान्त आवश्यक होता है—उसकी भी मिसाल रखी। पहाड़ी राजा सुग्रीव से मित्रता की। शत्रु के भाई विभीषण को भी मित्र बनाया। उनके भाइयों का राज्य उन्हें सौंपा। उनके काम पहले किए फिर अपना काम कराया।

प्यारे मित्र ! राम का शौर्य, उनकी वीरता और निर्भीकता सबके सब अलौकिक थीं। खर-दूषण आदि चौदह हजार राक्षसों का सामना डट कर अकेला ही किया। शत्रुओं से घिरे, अकेला होने पर भी जरा न घबराए। तनिक न डिगे। डट कर, सामना कर सबको मार गिराया।

प्यारे मित्र ! राम की मातृ-पितृ भक्ति का क्या कहना ! पिता को आज्ञा के संकेत भर से ही, वन सिधारे। युवराज-पद अनायास त्यागा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ममता जरा न आई। अपने कार्य-कलापों से माता केकई तक का भी जी जरा न दुःखाया। उनके तीखे-वचन वाण सहे: पर एक बात भी अनुचित न बोले। कड़वी न बोले।

प्यारे मित्र ! राम के वात्सल्य-प्रेम का क्या कहना ! अपने जनों के दोष, कभी न देखते। उनसे अकारण प्रेम करते। उनके हृदय से प्रेम की धारा बहती रहती। लोग उसमें गोते लगाते। थाह तक न पाते।

प्यारे मित्र ! राम अपने आचरण से किसी का भी जी न दुःखाते। कोई भी ऐसा काम न करते, जिससे किसी के दिल को चोट पहुँचे।

प्यारे मित्र ! साथ-साथ राम कर्त्तव्य परायण भी आदर्श रूप ही बने रहे। कर्त्तव्य पालन में बिलकुल अचल रहे। धर्म और नीति मार्ग से जरा भी न डिगे। दया से ओत-प्रोत रहे। पर कर्त्तव्य-पालन में जर भी न चूके। कर्त्तव्य पथ में दया रुकावट न बनने पायी।

हृदय, प्रेम, वात्सल्य सौहार्दादि से लबालब भरा था तो उसके एक कोने में दुर्जनों के लिए कठोरता भी थी। निशाचरों को मारने में जरा भी न सकुचाए। आततायियो को खदेड़-खदेड़ मारा। उन्हें भूतल से मिटा कर छोड़ा।

प्यारे मित्र ! राम का पत्नो प्रेम कितना आदर्श था ! कितना अनुकरणोय था !! भार्या सीता जी की सुख-सुविधे का ख्याल निरंतर रखते। उनके निजी काम अपने हाथों करते। उनकी नींद सोते। उनकी नींद जागते। उनका मन सदा सीता में ही बसा रहता। पराई नारी का चिन्तन स्वप्न मे भी न होता। प्यारे मित्र ! राम एक पत्नी-व्रत धर्म के प्रतीक ही थे। आज संसार के लोग एक पत्नी-व्रती की शिक्षा उन से लेवें !

प्यारे मित्र ! राम का भ्रातृ-प्रेम तो और भी अलौकिक था। भाई उनके प्राण से भी प्यारे थे। तभी तो भाई भी उन्हें वैसे ही मानते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बनवास राम का हुआ किन्तु भ्रातृ प्रेमवश लक्ष्मण भी उनके साथ गए। प्यारे मित्र ! राम के साथ लक्ष्मण का चौदह वर्ष तक वन में रहना, राम-लक्ष्मण दोनों के परस्पर भ्रातृ-प्रेम का द्योतक है। राज पाकर भी भ्रातृ-प्रेम वश भरत का तपस्वी-जीवन बिताना, दोनों के परस्पर प्रेम का परिचायक है।

प्यारे मित्र ! आज के युग के लोग, राम के जीवन-चरित्र से भ्रातृ-प्रेम का पाठ पढ़ें।

प्यारे मित्र ! राम सदा सतर्क रहते। अपने काम स्थिरता और कुशलता से करते। लक्ष्मण को सदा सचेत रहने की शिक्षा देते रहते।

प्यारे मित्र ! राम शिष्टाचार के नियमों को भी खूब पालन करते। अयोध्या पहुँचते ही, भरत से बोले,—"भरत ! मेरे उत्तम भवन में राजा विभीषण को ठहराओ ! सभी आगन्तुकों का सत्कार भरपूर करो।"

प्यारे मित्र ! राम बड़े व्रत धारी थे। नियम-पालन में अटल थे। वनवास काल में चौदह वर्ष वन में तपस्वी वेष में रहना था। तपस्वी का आहार ही करना था। उन्हें उन्होंने पूर्णतया निवाहा। अपने मित्र निषाद राज 'गुह' के आग्रह पर भी शृङ्गवेरपुर में पैर न रखा। गंगा किनारे तृण शय्या पर ही रात बिताई। गंगा जल पान कर ही सो रहे। मित्र गुह के बार-बार कहने पर भी उनका कुछ न खाया।

लंका विजय के बाद, विभीषण के आग्रह पर भी, लंका में प्रवेश न किया। राम बोले,—"विभीषण ! मैं लाचार हूँ। बनवास काल में नगर में प्रवेश न करूँगा।"

प्यारे मित्र ! राम को प्रकृति से अतीव प्रीति थी। वन की शोभा देखने से उनका जी न भरता। वे सीता को भी विचित्र-विचित्र पेड़-पौधे नदी-नाले झर-झर झरते झरने सरोवरादि दिखलाते। उनका सौन्दर्य पान कराते। चिड़ियों की चहक जी भर सुनते।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्यारे मित्र ! वास्तव में, प्रकृति के कण-कण में सौंदर्य भरा पड़ा है। पर, पारखी ही परख पाते। सहृदय ही भोग पाते।

प्यारे मित्र ! राम बड़े ही विनम्र थे। शीलवान और व्यवहार कुशल थे। सब का उचित सत्कार करते। वन में ऋषि-मुनियों से बड़ी नम्रता से मिलते। उनको सादर प्रणाम करते। उनकी प्रतिष्ठा करते। उनकी बातें आदर से सुनते। उनकी सेवा के भूखे रहते। कहते— "सेवा की आज्ञा दीजिए।" उनके सम्मुख शिष्यवत् बरतते। प्यारे मित्र ! यह थी राम की महानता।

प्यारे मित्र ! राम बड़े ही दृढ़ प्रतिज्ञ थे। जीवन में उन्होंने अपनी हर प्रतिज्ञा पूरी की। वचन के पक्के राम ने अपने वचन सदा पूरे किए। कहा-सो किया। दंडक वन में तपस्वियों से कहा—"निशाचरों को मार कर, आप सबों की रक्षा करूँगा।" सो किया। अपने संकट उठा-उठा कर, राक्षसों का सफाया किया।

प्यारे मित्र ! राम का व्यक्तित्व कितना मधुर था ! कितना सरस !! कितना आकर्षक !!! देखते ही लोग उनकी ओर खिंच जाते। सभी मोह जाते। मित्र ! कभी किसी से उसर न बोलते। सदा मीठी बोली बोलते। हृदय से बोलते। अंतः करण से संचालित होते। कभी किसी से दुर्भाव न रखते। ईर्ष्या, द्वेष, मद लोभादि विकारों को कभी भी पास न फटकने देते। चरित्र को बेदाग रखते।

प्यारे मित्र ! सुन्दर निर्मल चरित्र-सरोवर में ही, मोहक व्यक्तित्व-जलज खिल पाता है। सुन्दर व्यक्तित्व जीवन के समस्त सत् कर्मों के फलस्वरूप ही प्राप्त होता है। लोग किसी के पीछे यों ही नहीं बहे जाते हैं। उनके गुण ही उन्हें बहा ले जाते हैं।

प्यारे मित्र ! राम एक कुशल शासक थे। कुशल राजनीतिज्ञ और प्रजा पालक राजा थे। बैरियों के लिए अजेय थे। प्यारे मित्र ! राम-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राज नेक राज के लिए कहावत बन गया है। इनके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी। किसी को किसी प्रकार का कष्ट नहीं व्यापता था। सभी स्वस्थ ग्रौर सुन्दर थे। सब के सब धनी थे। निर्धन कोई था ही नहीं। राज्य-व्यवस्था इतनी अच्छी थी कि चोरों का भय नहीं था।

प्यारे मित्र ! आज-युग के मंत्री, शासन विधायकादि राजनीति, राजा-राम के चरित्र से सीखें। शासन-कला उनसे सीखें। प्रजा की भलाई करनी उनसे सीखें।

प्यारे मित्र ! इतिहास पर जब दृष्टि-पात करते हैं तो राम का चरित्र ही हम गृह वासियों के लिए सर्वोत्तम अनुकरणीय प्रतीत होता है। उनके जीवन से ही जीवन के हर पहलू पर शिक्षाएँ मिलती हैं।

प्यारे मित्र ! राम सभी अच्छे गुणों के पुञ्ज ही थे। उनकी प्रशंसा वैरी तक करते। जानते राम कभी कुमार्ग पर पैर नहीं धरेंगे। सर्वदा न्यायोचित ही काम करेंगे।

प्यारे मित्र। राम के अलौकिक गुण गिनाए नहीं जा सकते। उनकी चर्चा पत्रों में समाई नहीं जा सकती। मन में ही बखानते रहिए। उनके गहरे-गुण-सागर में गोते लगाते रहिए। बड़ा आनन्द आएगा। आपका मंगल होगा।

बोलिए—सियावर रामचन्द्र की जय !

प्यारे मित्र ! सीता मैया के पावन चरित्र को तीर्थराज प्रयाग ही जानिए। आइए—दर्शन कर जीवन सफल बनाइए !

प्यारे मित्र ! आधुनिक विश्व की नारियाँ पाति-व्रत की शिक्षा हमारी सीता मैया से लेवें; जिन्होंने स्वप्न में पर पुरुष की छाया तक न मन पर पड़ने दी। भीषण संकट में भी सतीत्व धर्म निवाहा। प्राण के भय से भी सतीत्व से जरा न डिगीं। लंका में राक्षसियों का उत्पीड़न सहती रहीं; रावण की दहशत भरी बातें सुनती रहीं; पर जरा भी न झुकीं। निर्भय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सही उत्तर देती रहीं। उचित बात कहती रहीं। भय से कभी न दबीं।

नारी का जीवन पति की सेवा के लिए ही होता है, सो सब सीता मैया के चरित्र से सीखें। संकट में धीरज रखना, उनसे ही सीखें।

प्यारे मित्र ! सास-श्वसुर, जन-परिजन से कैसा बर्ताव रखें, सो भी सीता मैया के पावन चरित्र से ही सीखें। सीता अपने सासों के मन के अनुकूल ही काम करतीं। गोड़ लागतीं। अपने कार्य कलापों से उन्हें सदा प्रसन्न रखतीं।

श्वसुर को पिता तुल्य मानतीं। दास-दसियों को भी संतुष्ट रखतीं। उनसे भी प्यार से बोलतीं। वचन में मधुरता रखतीं। नारी के भूषण शील को सदा धारण किए रहतीं।

प्यारे मित्र ! सीता-मैया हमें बहुत-बहुत प्यारी हैं। इतना कि थाह नहीं लगाया जा सकता। सच मानिए उनके गुण-वर्णन करने में लेखनी न थकेगी। पन्ने पर पन्ने भरते जायेंगे। रहने दीजिए–संक्षेप में ही। हाँ–एक बात और सुन लीजिए–हमारी सीता मैया बड़ी ही दयालु हैं-- वड़ी ही क्षमाशील हैं। बड़ी ही कृपालु। लंका पर विजय पाने के बाद, राम की आज्ञा से हनुमान जब सीता से अशोक वाटिका में मिले,--तब बोले—"माता। इन राक्षसियों ने आपको बहुत सताया है। आज्ञा मिले तो इन्हें मार डालूँ।" तब सीता मैया बोलीं—"पुत्र ! दोष सबसे होते हैं। इन्हें तू क्षमा कर दो।"

प्यारे मित्र ! दोष सबसे होता है—हमसे भी हुए हैं; किन्तु शरण में जाने से मैया सीता अवश्य ही क्षमा कर देंगी। अपने आंचल में अवश्य ही छिपा लेंगी।

बोलिए—सीता माता की जय !

प्यारे मित्र ! पुत्र के लिए पिता के दिल में कितना गहरा प्रेम होना चाहिए--सो सब राजा दशरथ से सीखें, जिन्होंने पुत्र वियोग में प्राण ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

त्याग दिए। फिर सीखें पुत्र प्रेम वालि से; जिसने मरते समय राम से कहा—"हे राम ! मुझे अपने मरने की चिंता नहीं है। पत्नी तारा की भी नहीं। चिन्ता एक मात्र प्यारे अंगद के लिए है। वह अभी अल्लढ़ ही है। आप उसे सँभालिएगा। उसकी देख-भाल कीजिएगा।" दम तोड़ते-तोड़ते बालि, राम और सुग्रीव से, अंगद के लिए अनुनय-विनय करता है। उसे वह उन्हे सौंप जाता है। मित्र ! ये सब उसके अगाध पुत्र प्रेम के ही परिचायक हैं।

प्यारे मित्र ! सेवक हनुमान से सेवकाई सीखें। स्वामी सुग्रीव का हित खूब साधा। राम से उनकी मित्रता कराई। खोया राज्य पुनः प्राप्त कराया। सुग्रीव के द्वारा नियुक्त किए जाने पर, जान की बाजी लगा कर सीता की खबर लगाई। सदा आज्ञाकारी बने रहे। स्वामी के काम में कभी भी ढिलाई न की। रात-विरात स्वामी के काम पर तत्पर रहे। प्यारे मित्र ! सेवक हो तो हनुमान-सा।

बोलिए—वीर वर हनुमान की जय !

प्यारे मित्र ! रामायण के हर पात्र एक से एक हैं। लक्ष्मण के उज्वल चरित्र का वर्णन जितना भी किया जाय थोड़ा ही होगा। बड़े भाई की पत्नी को किस प्रकार मातृवत् मानना चाहिए, सो सब लक्ष्मण से सीखें। छोटे भैया लखन लालजी सीता के साथ जंगल में, वर्षों रहे, लेकिन पाँव के सिवा कोई अंग नहीं देखा। भाई-भौजाई के लिए चौदह वर्ष तक दारुण पत्नी वियोग दुःख तरुणाई में ही सहा। जंगल-जंगल भटकते फिरे। वन फल खाकर रहे। उनके सुख के लिए अपने प्राणों से खेलते रहे। अपने जीवन को उनके लिए न्योछावर कर डाला।

प्यारे मित्र ! लक्ष्मण जी ने सारा जीवन चरित्र निर्मल रखा। एक आज्ञाकारी वीर सैनिक की तरह जीवन बिताया। कर्त्तव्य-पथ पर निरंतर निर्भीकता और स्थिरता से चलते रहे। कभी भी जरा न डिगे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

बोलिए—लखन लाल की जय !

भैया भरत के चरित्र का क्या कहना ! राज्य पाकर भी राज्य-सुख न भोगा । भाई की तरह तपस्वी-सा जीवन बिताया । हमें अगाध भ्रातृ प्रेम और त्याग का पाठ पढ़ाया । इन्द्रिय-सुख से ऊपर उठने को सिखलाया । प्यारे मित्र ! भैया भरत ने संतों का जीवन बिताया । बोलिए संत भरत की जय !

प्यारे मित्र ! रामायण के आदर्श पात्रों ने अपनी कीर्तियों को जीवित रखने के लिए, कोई स्मारक न बनवाया । स्तम्भ न खुदवाया । पोथियाँ न लिखीं । एक मात्र अपने जीवन-यापन में कर्त्तव्य-पथ पर अटल रहे । सत्य-पथ का आश्रय लिया । चरित्र को निर्मल बनाए रखा । बस, इतने भर से ही अमर हो गए । युग-युग से लोग उनके आदर्श जीवन से प्रेरणा पाते रहे हैं; और आगे भी पाते रहेंगे ।

प्यारे मित्र ! आज रामायण की चर्चा समाप्त होती है । पर एक मात्र कागज पत्र में ही । दिल में निरन्तर होती ही रहेगी । अब तो जीवन के शेष दिन सीता-राम के चरणों में ही बिता देने हैं ।

बोलिए—सियावर राम की जय ! सीता मैया की जय ! लखन लाल की जय ! भक्तवर हनुमान की जय । सब संतन की जय !

प्यारे मित्र ! आपको भी सद्गुणों का पुंज पाता हूँ । आपकी कर्त्तव्य-निष्ठा भी औरों के लिए आदर्श रूप ही है । आपको संयम्, त्याग, और संतोष की मूर्ति पाता हूँ । और पाता हूँ सही माने में सच्चा मित्र ! भगवान के चरणों में आपकी प्रीति अटूट है । मित्र ! आपका सदा मंगल होगा ।

आपको बार-बार अनन्त बार प्रणाम् !

आपका आत्मरूप

गणेश

सत्यमेव जयते !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

संस्कृत विश्वविद्यालय
KATHMANDU NEPAL

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वाल्मीकिविद्यापीठपुस्तकालयः

प्रत्यावर्तनतिथिः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लेखक की कृतियाँ

१. गीतामृत
(श्रीमद् भगवद् गीता का सुन्दर, सरल, भावमय विवेचन)
२. कठोपनिषद् प्रकाश
(कठोपनिषद् की सरल बोधगम्य व्याख्या)
३. योग वाशिष्ठ-प्रवेश
(योग वाशिष्ठ का सार-संकलन)
४. मेघदूत दर्शन
५. मनुस्मृति-संदेश
६. हमारी संस्कृति-छवि
(ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि में भारतीय संस्कृति की रूप रेखा)
७. स्नेहभरी कहानियाँ
८. आध्यात्मिक-पत्र
९. सियावर राम
१०. पातञ्जल योग-प्रकाश
११. संत समागम
१२. मुण्डकोपनिषद्-प्रकाश

प्राप्ति-स्थान
१. श्री किसोरी प्रसाद, ब्रास आर्टस पैलेस, चर्च
फोन नं० ८८५।
२. भारद्वाज भवन, मिल एरिया, साकची,
फोन नं० ५२६९।
३. राजेन्द्र स्टोर्स, साकची बाजार, जमशेदपुर।
४. गुप्ता स्टोर्स, धतकीडीह, जमशेदपुर।
५. सुरेन्द्र बुक स्टोर्स, स्टेशन रोड, जुगसलाई।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand